

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180577

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83/I148 Accession No. G.H. 976

Author ३०२११ /

Title २१११-१ २१११-१ / ११११

This book should be returned on or before the date
last marked below.

समाज के स्तम्भ

हमारा रोचक नाटक-साहित्य

विषपान	हरिकृष्ण 'प्रेमी' १॥)
स्वप्न-भंग	हरिकृष्ण 'प्रेमी' १॥)
उद्धार	हरिकृष्ण 'प्रेमी' २)
शपथ	हरिकृष्ण 'प्रेमी' २॥)
छाया	हरिकृष्ण 'प्रेमी' १)
शतरंज के खिलाड़ी	हरिकृष्ण 'प्रेमी' १॥)
समर्पण	जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिन्द' १॥॥)
शक-विजय	उदयशंकर भट्ट ३)
विश्वामित्र और दो भाव-नाट्य	उदयशंकर भट्ट ३)
उर्मिला	पृथ्वीनाथ शर्मा १)
सुभद्रा-परिणय	वीरेन्द्रकुमार गुप्त २)
शक्ति-पूजा	बी. मुखर्जी 'गुंजन' १॥)
शान्ति-दूत	देवदत्त 'अटल' १॥)
मानव प्रताप	देवराज 'दिनेश' २)
यशस्वी भोज	देवराज 'दिनेश' १॥)
हर्षवर्धन	वैकुण्ठनाथ दुग्गल १॥)
पग-ध्वनि	आचार्य चतुरमेन शास्त्री १॥)
वितस्ता की लहरे	लक्ष्मीनारायण मिश्र १॥)
अ-पूर्व-बंगाल	बी. बी. वरेरकर १॥)
समाज के स्तम्भ (डब्बन)	अनु० भीताचरण दीक्षित २)
रेल के डिब्बे	अरुण २)
आधुनिक एकांकी	विजय चौहान २)
बादलों के पार	हरिकृष्ण 'प्रेमी' ३)
आदिम-युग	उदयशंकर भट्ट ३)
मनु तथा अन्य एकांकी	लक्ष्मीनारायण मिश्र २॥)
ऐतिहासिक दृश्य	श्यामलाल १॥)
सफर की साथिन	रामशरण शर्मा १॥॥)

आनन्द का राजपथ तथा अन्य लघु नाटक

सीताचरण दीक्षित

(प्रेस में)

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६

समाज के स्तम्भ

(इब्सन के 'पिलर्स आफ़ सोसायटी' का अनुवाद)

अनुवादक

सीताचरण दीक्षित

१९५५

आत्माराम एण्ड संस
प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता
काश्मीरी गेट
दिल्ली-६

प्रकाशक

रामलाल पुरी

आत्माराम एण्ड संस

काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

मूल्य २)

मुद्रक

उग्रसैन जैन

इण्डिया प्रिन्टर्स

एसप्लेनेड रोड, दिल्ली-६

अनुवादक का परिचय

हिन्दी साहित्य-प्रेमियों के लिए 'समाज के स्तम्भ' के अनुवादक श्री सीताचरण दीक्षित अपरिचित नहीं हैं। उनके एक ही उपन्यास—'हृदय-मथन' की हजारों प्रतियाँ विक्रि हुई हैं और पाठकों तथा समालोचकों ने उसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। दिल्ली के दैनिक 'हिन्दुस्तान' में उन्होंने वर्षों तक "विशालाक्ष" उपनाम से 'यत्र-तत्र-सर्वत्र' का जो व्यंग-विनोदमय स्तम्भ चलाया वह शिष्ट, सयत् तथा प्रभावशाली विनोद-साहित्य का नमूना बन गया है। श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य के ग्रन्थों—उपनिषद्, वेदान्त और भगवद्गीता के अनुवाद से दार्शनिक साहित्य में उनकी गति प्रकट हो चुकी है। नागरिकशास्त्र और मनोविज्ञान पर उनकी पुस्तकें प्रेम में हैं। उनके एक मौलिक एकाङ्की नाटक के द्वारा, जो हमारे यहाँ ने शीघ्र ही प्रकाशित किया जायेगा, महात्मा गांधी का मनोरंजन किया गया था। अपनी विदुषी पत्नी—श्रीमती रत्नमयी देवी दीक्षित के सहयोग में उन्होंने हाल ही में सरदार पणिकर के दो मलयालम् उपन्यासों, एक मलयालम् नाटक और अनेक मलयालम् कविताओं का अनुवाद हिन्दी-माता के चरणों में समर्पित किया है। उनकी अनेक रचनाएँ अभी अप्रकाशित हैं, जिसके अपराध से वे स्वयं मुक्त नहीं हैं, क्योंकि उन्होंने सदैव अपने आपको छिपाकर रखा—पत्रों में सैकड़ों लेख लिखे, परन्तु अपना नाम नहीं दिया, साहित्यिक सभा-समाजों में सम्मिलित हुए, परन्तु लोगों के सामने नहीं आये। सात भाषाओं के ज्ञाता दीक्षितजी का नई भाषाएँ सीखने का शौक अदम्य है।

दीक्षितजी १९२१ में चौदह वर्ष की आयु से ही देश के स्वतन्त्रता-संग्राम में पड़ गये थे और हमारे सार्वजनिक जीवन के सम्बन्ध में उनका अनुभव और ज्ञान बहुत गहरा है। वे दस वर्षों के लगभग पूज्य बापू

के चरणों के निकट उनकी संस्थाओं में रहे, अतएव, सहज ही उनके विचारों पर बापू की विचारधारा का प्रभाव है और उनकी साहित्यिक कृतियों से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में गांधीवाद का ही प्रचार होता है। स्वभावतः वे शिक्षक, लेखक और पत्रकार हैं। उनका पत्रकार-जीवन १९३०-३१ में अमरशहीद श्री गणेश शंकर विद्यार्थी के 'प्रताप' में आरम्भ हुआ था। १९३४-३५ में उन्होंने मध्यप्रदेश के वर्तमान मुख्य मन्त्री पण्डित रविशंकर शुक्ल के संरक्षण में नागपुर से 'महाकोशल' पत्र निकाला और उसका संचालन तथा संपादन स्वयं ही किया। बाद में वह पत्र रायपुर से निकलने लगा और अब भी निकल रहा है। उन्होंने 'एडवांस' (कलकत्ता), 'नागपुर टाइम्स' (नागपुर), 'हरिजन सेवक' (अहमदाबाद) और 'हिन्दुस्तान' (नई दिल्ली) में सहायक अथवा उपसंपादक का काम भी किया। १९५४ के आरम्भ में, जब वे 'हिन्दुस्तान' के सम्पादकीय विभाग में कार्य कर रहे थे, इंडियन कौन्सिल फार कल्चरल रिलेशन्स ने उन्हें प्रवासी भारतीयों के बीच सांस्कृतिक कार्य करने के लिए वेस्ट इंडीज भेज दिया। अब वे भारत लौट आये हैं और स्वतन्त्र लेखन द्वारा हिन्दी साहित्य की सेवा कर रहे हैं।

साहित्य में दीक्षितजी की पैठ गहरी है और भाषा पर उनका अधिकार है। हमें दृढ़ विश्वास है कि उनका यह अनुवाद मूल पुस्तक का अधिकतम रसास्वादन कराने में समर्थ होगा।

प्रकाशक

भूमिका

‘मेरे जीवन का लक्ष्य अपनी कला को चरम उत्कर्ष तक पहुँचाना है।’

‘और लक्ष्य सिद्ध हो जाने पर क्या करोगे?’

‘तब मेरे जीवन का अन्त हो जायेगा।’

नार्वे के स्वनामधन्य नाटककार हेनरिक इब्सन की कृतियों और जीवन में उनकी उपर्युक्त कामनाएँ पूर्ण सफल हुईं। उनके नाटक आज, उनकी मृत्यु के पचास वर्ष बाद भी, संसार के नाट्य-साहित्य में अग्रस्थान के योग्य हैं। अपनी कला को चरम उत्कर्ष तक पहुँचाने के लिए उन्होंने न केवल अपनी जन्म-सिद्ध प्रतिभा का, वरन् अविरल अध्यवसाय का भी उपयोग किया। वे अपनी कृतियों में लगातार संशोधन किया करते थे और जब तक उन्हें पूर्ण सन्तोष न हो जाता तब तक उनकी लेखनी रुकती नहीं थी। यह संशोधन और परिष्कार यहाँ तक होता कि उनकी कतिपय कृतियों के पहले और बाद के संस्करणों में सादृश्य खोज निकालना भी कठिन होता है। कहते हैं, उनकी प्रथम कृति ‘कातिलिना’ के साथ उस कड़वे अनुभव की कहानी भी जुड़ी हुई है, जो संसार के सब महान् साहित्यकारों को हुआ है—‘कातिलिना’ को प्रकाशित करने के लिए न कोई प्रकाशक मिला और न उसे रंगमंच पर प्रस्तुत करने के लिए कोई नाटक-कम्पनी ही तैयार हुई। अन्त में लेखक ने स्वयं ही उसे प्रकाशित किया और उसकी केवल तीस प्रतियाँ विक सकी। अन्त में इब्सन ने सारी अवशिष्ट प्रतियों को रद्दी वाले के हाथ रद्दी के भाव बेच दिया। एक भारतीय विचारक का कथन है कि ‘साहित्यकार यदि प्रकाशक बने तो वह साहित्यकार नहीं रह सकता, अथवा वह अपनी कृतियाँ प्रकाशित करके दीमक को भोजन-मात्र प्रदान करेगा।’ ‘कातिलिना’ के अनुभव ने इब्सन को इस दयनीय स्थिति से बचा लिया।

सत्कार और तिरस्कार

अनुकूल और प्रतिकूल आलोचक-समुदाय में इब्सन के विषय में उनके जीवनकाल में और उसके बाद भी जो चर्चाएँ हुई, और अब भी होती जा रही हैं, उनमें एक बात स्फटिक-स्पष्ट है कि वे उपेक्षणीय कभी नहीं रहे—उनका पहला नाटक ‘कानिनिना’ (१८९०) भी यदि प्रशंसित नहीं तो आलोचित अवश्य हुआ। बाद में, धीरे-धीरे, उनकी रचनाएँ समस्त यूरोप के ख्यातनामा नाटककारों की कृतियों के लिए आदर्श बन गई—क्योंकि उनमें स्वतन्त्रता थी, खरापन था, नवीनता थी और पाठकों तथा दर्शकों को मंत्रमुग्ध करने की अद्भुत शक्ति थी। उनके तीखे व्यंग्यों और दूर तक मार करनेवाली उक्तियों से तत्कालीन निहितस्वार्थ लोगों का वर्ग तिलमिल उठा और उसने उन पर चारों ओर से आक्रमण किया — ‘प्रतीकवादी’ कहकर उन्हें दुरुह बताया गया और उनके अर्थ का अनर्थ किया गया; औलिया, भूत-भक्त, पहेलीवाज, टुटपुंजिया आन्दोलनकारी, मकड़ी के जाले के समान न-कुछ की रचना करनेवाला, अश्लील साहित्यकार आदि कहकर उनका तिरस्कार और उन्हें गिराने का प्रत्येक सम्भव प्रयत्न भी किया गया। कुछ लोगो ने उन्हें ईसा और ईसाई धर्म का विरोधी कहकर प्रचार किया कि उनको डाक में चिट्ठी-पत्री भेजने तथा पाने की सुविधा में वंचित कर दिया जाये। किन्तु, ‘इब्सन मनुष्य नहीं थे, वे तो एक लेखनी थे’, फिर उन पर इन आलोचनाओं का क्या असर होता ?

वास्तव में इब्सन पर लगाये गये उपर्युक्त आरोप विल्कुल थोथे थे। उनकी कृतियों का अध्ययन करने में मालूम होता है कि वे व्यवस्था, दक्षता, प्रमाणिकता और साधारण बुद्धि के समर्थक थे, ‘वे लोकतन्त्र से लेकर रोमांटिक प्रेम तक और कर्तव्य के आभार से लेकर सद्गुणों के मूल्यों तक सभी पर विश्वास करते थे और उन्होंने अपने नाटकों में इन सब का उत्तमोत्तम ढंग से प्रतिपादन किया है।’ जब लोगों ने—निष्पक्ष विचारकों ने—इस तत्व को समझा और प्रत्यक्ष देख लिया कि

उनका प्रयत्न रूढ़ियों और ईसाई संस्कृति के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ने का नहीं है—वे उसी सत्य का प्रतिपादन करते हैं जिसका प्रत्येक समजस बुद्धिवाला मनुष्य कर सकता है, तब उनकी दृष्टि में उनके साहित्य का मूल्य बदल गया और वे उनकी सराहना करने लगे। अब वे तिरस्कार के योग्य 'ऐन्द्रजालिक भविष्यद्वक्ता' नहीं रह गये, ऐसे चामत्कारिक कौशल-सम्पन्न नाटककार के रूप में पहचाने जाने लगे, जिन्हें संसार को शिक्षा देने की अभिनव एवं श्रेष्ठतर कला सिद्ध थी। ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर ही यूरोप के अन्य नाटककारों ने उनका अनुकरण आरम्भ किया।

एक बेचैन आत्मा

किन्तु समालोचकों का समाज केवल तर्कवागीश ही नहीं, सर्वव्यापी, सर्वदर्शी और सर्वकालीन भी होता है—उसका आविर्भाव सृष्टि के आरम्भ में हुआ था और वह 'यावच्चन्द्र-दिवाकरौ' मनुष्य के विचारों को परिष्कृत करना रहेगा। अतएव आज भी किसी-न-किसी उच्च स्तर पर यह विवाद छिड़ा ही रहता है कि 'इव्सन बाह्यभ्यन्तर शुद्ध नाटककार था अथवा एक टुटपुंजिया आन्दोलनकारी या मसीहा; उसने नीति और सदाचार का प्रचार करने का प्रयत्न किया अथवा केवल कला और सौन्दर्य की उपामना तथा साधना की; वह एक बेचैन प्रतिमा-भंजक क्रान्तिकारी था या शान्त-गम्भीर वस्तु-दिग्दर्शक कलाकार?' इस विवाद ने बर्नार्ड शा जैसे महारथियों को भी अपनी समेट से अलग रहने नहीं दिया। उन्होंने १८६१ में इव्सन पर एक पुस्तक लिखकर मुक्तकंठ से उनकी सराहना की। शेक्सपियर और इव्सन की तुलना करते हुए उन्होंने लिखा है—'शेक्सपियर ने हमें तो रंगभूमि पर प्रस्तुत किया, किन्तु हमारे जीवन-प्रसंगों को नहीं। इव्सन ने उसकी छोड़ी हुई यह कमी पूर्ण कर दी। उसने हमारे समक्ष न केवल हमको वरन् हमारे जीवन-प्रसंगों को भी प्रस्तुत किया। इसका एक परिणाम यह हुआ कि हमारे लिए इव्सन के नाटक शेक्सपियर के नाटकों से अधिक महत्वपूर्ण हो गये। दूसरे, वे हम पर निर्भरतापूर्वक प्रहार करने, हमें आदर्शवादी अत्याचारों से बचने की

स्फूर्तिमय आशा प्रदान करने और हमारे मानस को उत्कटतर भविष्य-जीवन के स्वप्नों से परिपूर्ण करने में समर्थ हुए हैं।'

इस दृष्टि में इब्सन न तो 'प्रतिमा-भंजक' थे, न उपदेशक और न कोरे आदर्शवादी। निर्णय एक ही निकल सकता है कि उनके अन्दर एक ऐसी बेचैन आत्मा बन्दी थी जो, स्वभावतः ही, संसार के असत्य और पाखंड, आडम्बर और मूढ-सन्तोष पर प्रहार करके उसके अन्तरात्मा को जगाने का प्रयत्न किए बिना रह नहीं सकती थी।

साहित्य की गुरु-कुंचिका

साहित्य मनुष्य की विश्वानुभूति की भाषा-गत अभिव्यक्ति है और वह मानव-संस्कृति का अंग है। इब्सन का सांस्कृतिक विकास जैसा और जितना हुआ था वही उनकी कृतियों में प्रकट हुआ। अतएव यदि उनकी कृतियों में कही अप्रत्यक्ष उपदेशात्मकता खोज निकाली जा सके तो भी उन पर उपदेशक होने का आरोप करना उचित न होगा। सत्य तो यह प्रतीत होता है कि इब्सन ने विश्व की जो अनुभूति की और उसकी उनके अन्तरात्मा में जो प्रतिक्रिया हुई उसी की सहज-सरल अभिव्यक्ति उनके नाटकों में हुई है। उपदेश में उद्देश्य स्पष्ट होता है, समस्याओं का उत्तर होता है और कृत्रिमता भी असम्भव नहीं होती। इब्सन की कृतियों में ये कोई भी बातें पाई नहीं जाती। फिर उन पर ये आरोप किस आधार पर किये गये? उत्तर सरल है। उनका अन्तर विकसित परिष्कृत, उदार और सद्बुद्धिमय था। वह पाखंडों और रूढ़ियों के अत्याचारों से तिलमिला उठा और उससे सहज रूप में जो धोप निकला जो पुकार उठी, वह असत्य और परतन्त्रता से सत्य और स्वतन्त्रता की ओर ले जानेवाली सिद्ध हुई। यही उनकी उपदेशात्मकता है, यही उनके क्रान्तिकारीत्व का सैद्धान्तिक पहलू है। सक्रिय क्रान्ति तो उन्होंने कौन-सी नाटक-रचना की नयी कला द्वारा, जिसमें यूरोपीय रंगमंच की अनेक रूढ़ियों को तोड़ा गया।

विलियम आर्चर ने उनकी शैली के सम्बन्ध में लिखा है—'प्रतिपादन

की स्वाभाविकता, विकास की चलनशीलता और निर्वाह की आडम्बर-हीनता—ये हैं उनकी शैली के प्राण-तत्व ।’ इन शब्दों में इब्सन के साहित्य की गुरु-कुंचिका विद्यमान है ।

यदि साहित्यकार की विश्वानुभूति की भाषा-गत अभिव्यक्ति ही साहित्य है तो किसी साहित्यकार की कृति का ठीक-ठीक निर्णय उसके जीवन और उसके आस-पास की परिस्थितियों को—जिनका प्रभाव उसके मन पर पड़ता हो—और उसकी समस्त कृतियों को समग्र रूप में देखे बिना नहीं किया जा सकता । अतएव इब्सन की कृतियों का यथार्थ मूल्यांकन करने के लिए भी इन सब का परिचय आवश्यक है ।

जीवन-परिचय

इब्सन का जन्म दक्षिणी नार्वे के स्कीन नामक स्थान में २० मार्च सन् १८२८ को हुआ था । उनके पूर्वजों ने स्काच तथा जर्मन स्त्रियों से विवाह किये थे; अतः उनकी नसों में अनेक जातियों का रक्त मिश्रित था । इब्सन के पिता—नूद इब्सन—मिलनसार तथा विनोदी, और माता गम्भीर तथा तटस्थ प्रकृति की थी । इन दोनों के ही संस्कार पुत्र ने प्राप्त किये थे । इब्सन के पूर्वज कुलीन तथा धनी थे, परन्तु स्वयं उन्हें, पिता का दिवाला निकल जाने के कारण, बाल्यकाल से ही आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । स्कीन में उनका निवास-स्थान एक ओर गिरजाघर और दूसरी ओर कारागृह तथा पागलखाने के बीच था । इस वातावरण का प्रभाव बालक इब्सन के मन पर पड़े बिना कैसे रह सकता था ? इब्सन अपने पाँच भाई-बहनों में सब से बड़े थे और बचपन से ही उन्हें एकान्त अध्ययन का चाव था । वे अपने को बहुधा एक छोटे से कमरे में बन्द रखते थे । उन्हें जादू के खेलों का भी शौक था और वे बहुधा अपने छोटे भाई की सहायता से लोगों का मनोरंजन किया करते थे ।

पिता का दिवाला निकल जाने पर आठ वर्ष की आयु में ही इब्सन को नगर छोड़कर ग्रामवास के लिए बाध्य होना पड़ा । चौदह वर्ष की

आयु में उन्हें नौकरी कर लेनी पड़ी और इस प्रकार बालपन में शाला की शिक्षा का अवसर मिला ही नहीं। सात वर्ष नौकरी करने के बाद, एकतीस वर्ष की आयु में उन्होंने शाला में पढ़ना आरम्भ किया। नौकरी के काल में भी उन्होंने अपना स्वाध्याय जारी रखा था, इसलिए स्वाभाविक प्रतिभा के विकास में अधिक बाधा नहीं पड़ी थी। १६ वर्ष की आयु में वे कविता लिखने लगे और बाईसवें वर्ष में—अर्थात् शाला-जीवन के दूसरे ही वर्ष में—उन्होंने अपने प्रथम गीति-नाट्य 'कातिलिना' की रचना कर डाली। इसके पश्चात् वे जीवन के अन्तिम दिनों तक निरन्तर नई-नई रचनाएँ करते रहे, जिनकी संख्या चौबीस के लगभग है। किन्तु नार्वे में उनके गीति-नाट्यों की सराहना होने के बदले कटु आलोचना हुई और वे भयानक आर्थिक संकट में पड़ गये।

इसी बीच, सन् १८६८ में प्रशिया ने डेनमार्क पर चढ़ाई की। नार्वे ने पुराने बैर के कारण डेनमार्क को सहायता देने में इतकार कर दिया। डेन्मन के मन पर इसमें गहरी चोट लगी और वे आत्मग्लानि से पीड़ित होकर, अपनी पत्नी तथा बच्चों को घोर दरिद्रता तथा ऋण-भार से जकड़ा हुआ छोड़कर, रोम चले गये। जाने के लिए उन्हें मित्रों में चन्दा करके धन प्राप्त करना पड़ा। अपने स्वेच्छा-निर्वासन के इस दीर्घ काल में, जो लगभग २७ वर्ष तक चला, उन्होंने अनेक देशों की यात्रा की। इस काल में उन्होंने जो नाटक लिखे उनमें उनकी आत्मानुभूति सब से अधिक प्रकट हुई है। सन् १८९१ में वे नार्वे लौट आये और सन् १९०६ में उनका देहान्त हो गया।

नार्वे की तत्कालीन अवस्था

नार्वे उस समय एक अनुन्नत देश था। पहाड़ी घाटियों और समुद्र-तट पर बसे हुए गाँवों तथा नगरों में विभिन्न कबीलों के लोग अपने-आप में सन्तुष्ट होकर निवास करते थे। डेनमार्क की अधीनता और अपने आत्मसन्तोषी, जाग्रति-रहित जीवन के कारण उनमें एक राष्ट्र की भावना का विकास बहुत नहीं हुआ था। जनसंख्या लगभग दस लाख

थी। रोजगार-धंधों के नाम पर नौका-नयन, मछली-उद्योग और छोटे-मोटे परिमाण में खेती कर लेना ही बम था। न धनिक अधिक थे और न धनिक बनने के साधनों का ही अधिक विकास हुआ था।

डब्सन के जन्म से केवल १४ वर्ष पूर्व, सन् १८१४ में, नार्वे डेनमार्क के पंजों से मुक्त हुआ था। किन्तु कुछ ही दिनों बाद स्वीडन ने बलान् उसे अपने में मिला लिया। इस नए परिवर्तन से नार्वे के परंपरागत जीवन में उथल-पुथल हुई। देश में रेलों, सड़कों और नए उद्योगों का प्रसार होने लगा और नार्वे की जनता का सम्पर्क दूसरे लोगों में हुआ। अब तक जो लोग अपने-आप में मग्न और अपने तरीकों से जीवन-यापन करने में स्वतन्त्र थे—यथावृद्धियों के संस्कारों को हृदय में लगाये हुए, मूक, सरल और निर्बाध जीवन व्यतीत कर रहे थे—उन्हें अब पग-पग पर संक्रामक रोगों और विदेशी तत्वों के सांस्कृतिक आक्रमणों का भय वस्तु करने लगा। फलतः अधिक खुलने के बदले उन्होंने कछुए के समान अपने-आप को सुरक्षा के आवरण में खींच लिया। नये परिवर्तनों का विरोध और पुरानी रूढ़ियों की रक्षा ही उनका सबसे बड़ा धर्म बन गया। भूत-प्रेतों पर विश्वास का सर्वत्र बोलबाला था ही, और उनके विरुद्ध बातें करना नास्तिकता से कम नहीं माना जाता था।

डब्सन की कृतियाँ

इन परिस्थितियों में कवि और नाटककार डब्सन का विकास हुआ। उच्चतम समालोचकों ने उनकी कृतियों की समीक्षा चार काल-विभागों में विभक्त करके की है।

पहला काल-विभाग उनकी १८५१ से १८६४ तक की रचनाओं का है। यह उनके अभ्यास का काल माना जाता है और इसमें उन्होंने ग्यारह गीति-नाट्यों की रचना की थी। इस काल का प्रथम नाटक 'कातिलिना' और अन्तिम 'प्रिंटेंडर्स' (झूठे दावेदार) है। अन्य प्रमुख नाटक 'लव्ज कामेडी' (प्रेम-प्रहसन) और 'किंग-मेकिंग' (नृप-निर्माण) हैं।

दूसरा काल १८६४ से १८७८ तक का है, जिसमें ब्रैड, पियर गिट, एम्परर एण्ड गैलीलियन तथा लीग आफ यूथ की रचना की गई। इन नाटकों में इब्सन की वह कला विकसित हुई, जिसने यूरोप के रंगमंच में युगान्तर का शंख फूँका। ये नाटकीय आडम्बर से मुक्त रखे गये और इन्हे आगे चलकर 'स्वाभाविक' विशेषण से अभिहित किया गया। इनमें कला की दृष्टि से पहले और दूसरे का स्थान विशिष्ट है; चौथे का सामाजिक महत्व अधिक है।

तीसरे काल (१८७८ से १८९१) की कृतियाँ परिपक्व अनुभव की सृष्टि हैं, अतएव उनका महत्व भी सब से अधिक है। उन्हें सामाजिक नाटक कहा जाता है और वे सब गद्य में लिखी गई हैं। इस काल की रचनाओं के नाम ये हैं—पिलर्स आफ सोसाइटी (समाज के स्तम्भ), ए डाल्स हाउस (गुड़िया का घर), घोस्ट्स (भूत), ऐन एनिमी आफ दी पीपल् (लोक-शत्रु), दी वाइल्ड डक (बनैली बतक), रोजमसहोम, और हेडा गेब्लर। इनमें इब्सन ने अपने समकालीन जीवन का चित्रण करने के लिए उस समय के विचारों, मान्यताओं और धारणाओं आदि का भरपूर प्रयोग किया है। ये कृतियाँ समाज को ठोकर लगाकर जगानेवाली अवश्य हैं, किन्तु पढ़ने से स्पष्ट ज्ञात होता है कि इब्सन ने जान-बूझ कर यह प्रयत्न नहीं किया। वे कहा करते थे —'नाटककार का काम प्रश्नों का उत्तर देना नहीं, केवल प्रश्न प्रस्तुत करना है।' और उनके सब नाटकों को पढ़ जाइए, 'मास्टर-विल्डर' (कुजल शिल्पी) को छोड़कर आप किसी में भी उत्तर देने का प्रयत्न देख न पायेंगे—'कुशल शिल्पी' में भी स्पष्ट और पूर्ण उत्तर नहीं मिलता।

कालक्रम के अनुसार और इब्सन की तत्कालीन मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करके सब नाटकों का अध्ययन करने से साधारण मनुष्य के मन पर यह छाप पड़े बिना नहीं रह सकती कि भले ही उनके द्वारा जान-बूझ कर क्रांति का संदेश देने का प्रयत्न न किया गया हो, फिर भी उनमें क्रांति का आवाहन समाया हुआ अवश्य है। अपने दलित

देश से निकलकर अपेक्षाकृत अधिक उन्नत देशों में जाना और वहाँ के अनुभवों के पश्चात् अपने देश की स्थिति सुधारने के लिए बेचैन हो उठना इब्सन जैसे देशभक्त और स्वतन्त्रता-प्रेमी के लिए अस्वाभाविक न होगा। अतः यदि स्पष्टतः स्वीकार कर लिया जाये कि उनकी समस्त सामाजिक कृतियों का चरम लक्ष्य समाज में क्रान्ति करना ही था, तो भी आश्चर्यजनक क्या होगा ? और इससे उन कृतियों का साहित्यिक मूल्य घट कैसे जायेगा ? वस्तुतः आश्चर्यजनक तो यह होना चाहिए कि उन्होंने कला की कैसी अद्भुत साधना की कि वे बिना कहे ही अपने लक्ष्य में सफल हो गये और बड़े-बड़े साहित्यकारों तथा समीक्षकों के सामने सदा के लिए यह निर्णय करने की समस्या छोड़ गये कि 'इब्सन शुद्ध साहित्यकार था अथवा एक क्रान्तिकारी प्रचारक ?'

उन्होंने अपने विभिन्न नाटकों में जिन विषयों का प्रतिपादन किया उनमें से कुछ ये हैं—

(१) पत्नी के साथ उसे केवल विलास-सामग्री और बुद्धि-रहित प्राणी मानकर व्यवहार करने से मनुष्य का अधःपतन होता है।

(२) पेशेवर देशभक्त और समाज-उद्धारक वंचक तथा अविश्वसनीय होते हैं।

(३) व्यापार में सफलता के लिए बहुधा ऐसे काम करने पड़ते हैं, जिन में स्वाभिमानी व्यक्ति संकोच और लज्जा का अनुभव करता है।

(४) उपदंश में पीड़ित व्यक्ति की पत्नी को यह मान रखना चाहिए कि उसके बच्चों के अंगों में ऐव रहेगा।

(५) पति-पत्नी का सम्मिलित दुःख दोनों की वासनाओं को क्षीण और उनके पारस्परिक बन्धन को हृदय करत है।

(६) दुर्बल मन की विलास-प्रिय स्त्री का अपने-आपको गर्भिणी जानने पर घबरा उठना स्वाभाविक है।

(७) साठ वर्ष के पुरुष का सत्रह वर्ष की चंचल तरुणी के प्रेम-जाल में फँस जाना मूर्खता है। और—

(८) आठवाँ आदेश (चोरी मत कर) भंग करनेवाली स्त्री तथा नवाँ आदेश (व्यभिचार मत कर) भंग करने वाले पुरुष के प्रति संसार क्रूरतापूर्ण व्यवहार करता है। आदि।

चौथे काल (१८६१-१८६६) की रचनाएँ हैं—मास्टर विल्डर (कुशल शिल्पी), लिट्ल ऐलफ़, जान गैब्रियल बोकमन और ह्वेन बी डेड अवेकन (जब हम मुर्दे जागेगे)। ये सब कल्पना-प्रधान हैं और शुद्ध कला की दृष्टि से अपना सानी नहीं रखते। किन्तु विशेष प्रकार की मनोवृत्ति के लोगों के लिए इनमें भी पीड़ाजनक दंश का अभाव नहीं है।

सन् १८६६ के बाद, अर्थात् अपनी आयु के इकहत्तरवें वर्ष से, इब्सन नई रचनाएँ करने में असमर्थ हो गये। १८६१ में वे विदेशों में स्वेच्छा-निर्वासन से नार्वे वापस आये थे। १८७६ में ७८ वर्ष की आयु में उन्होंने अपनी जीवन-लीला समाप्त कर दी।

समाज के स्तम्भ

इब्सन के अनेक नाटक भारतीय परिस्थितियों में भी लागू हैं। कुछ नाटकों में तो यदि किञ्चित् परिवर्तन कर दिया जाये तो वे भारत के लिए ही लिखे प्रतीत होंगे। ऐसे ही नाटकों में 'पिलर्स आफ़ सोसाइटी' भी है, जिसका अनुवाद इस पुस्तक में दिया गया है। संक्षेप में नाटक का कथानक इस प्रकार है—

पिता का देहान्त हो जाने के बाद युवक कार्स्टन बर्निक विदेशों में पर्यटन तथा विद्याध्ययन के लिए चला जाता है। उसकी माता पैतृक व्यापार की देखरेख करती है, किन्तु अव्यवस्था के कारण भारी घाटा होता है और ऋण-भार से व्यापार डूबने लगता है। ऐसी स्थिति में कार्स्टन विदेश से लौटता है और सारा कारबार अपने हाथों में लेकर उसे सँभालने का प्रयत्न करता है। परन्तु उसे सफलता नहीं मिलती।

विदेश-यात्रा पर जाने के पूर्व कार्स्टन एक युवती—लोना—से प्रेम करने लगा था और दोनों ने उसके विदेश से लौटने पर विवाह कर लेने का निश्चय किया था।

लौटने पर कार्स्टन ने महसूस किया कि यदि कुछ धन पास न हो तो माता के व्यापार को सँभालना संभव नहीं है। और यदि उसे सँभाला न गया तो उसका अपना भविष्य भी खतरे में पड़ जायेगा। जब वह धन की इस घोर चिन्ता में डूबा हुआ था उसी समय उसे ज्ञात हुआ कि लोना की अर्ध-भगिनी बेती अपनी माता की समस्त सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी है और लोना का उसमें कोई भाग नहीं है। अतएव केवल धन की आवश्यकता के कारण उसने लोना को छोड़कर बेती के साथ विवाह कर लेने का निश्चय किया। किन्तु इसी बीच वह परदेश में आई हुई नाटक-मंडली की एक विवाहिता अभिनेत्री के प्रेम-जाल में फँस गया था। उससे निवृत्ति प्राप्त करने के लिए जब वह अन्तिम बार उसके पास गया उसी समय अचानक उसका पति वहाँ आ गया और कार्स्टन को अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए खिड़की से कूदकर भागना पड़ा। किन्तु अफवाहें सारे शहर में बिजली के समान फैल गईं। यदि कार्स्टन का नाम उनके साथ जुड़ जाता तो उसके चारित्र्य पर से जनता का विश्वास उड़ जाता और उसके भविष्य सम्बन्धी सारे मनोरथों पर पानी फिर जाता। दूसरी ओर बेती के साथ उसका विवाह न हो सकता और उसने धन प्राप्त करने की जो एक निश्चित योजना बनाई थी वह भी विफल हो जाती। बर्निक ने अपने भविष्य का यह भयानक चित्र देखकर बेती के छोटे भाई जोहन को, जिसे उसने अपना मित्र बना लिया था, सारा कलंक अपने सिर ले लेने के लिए राजी किया और जोहन अपनी प्रतिष्ठा कार्स्टन बर्निक को सौंपकर अमेरिका चला गया। लोना ने भी उसका अनुगमन किया।

जोहन के जाते ही शहर में अफवाहें फैल गईं कि वही उस स्त्री— श्रीमती दार्फ—के घर में पकड़ा गया था और लज्जा से बचने के लिए देश छोड़कर अमेरिका भाग गया है। दूसरी अफवाह यह फैली कि वह कार्स्टन बर्निक की माता की तिजोरी से सारा धन चुराकर ले गया है, जिसके कारण कार्स्टन की आर्थिक स्थिति संकट में पड़ गई है। कार्स्टन

ने इन दोनों अफवाहों का लाभ उठाकर और अपने आप को अत्यन्त सदाचारी और विश्वसनीय बताकर अपने व्यापार को संभाला और उसकी उन्नति की । धीरे-धीरे वह नगर का सबसे बड़ा व्यापारी बन गया और समाज के नैतिक जीवन का स्तम्भ माना जाने लगा । सर्वत्र उसकी तूती बोलने लगी । असत्य और अनाचार की नींव पर उसकी उन्नति का यह भव्य और सुरम्य प्रासाद निर्मित हुआ ।

समाज धर्म-नीति के पाखंडों में डूबा हुआ था, अंधविश्वासों और अंधविश्वासियों का बोलबाला था, स्त्रियों को घर की चहारदीवारी के अन्दर बन्द रखना और उन्हें पुरुषों की 'आज्ञानुवर्तिनी' तथा 'समाज की दासी' मानना गौरव की बात मानी जाती थी—संक्षेप में, लोग कूप-मंझूक बने रहना, बाहरी प्रभावों को दूर रखना और उनकी छूत से बचे रहना अपना नैतिक कर्तव्य समझते थे । जो इस पक्ष में ऊँची-ऊँची बातें करते थे वे समाज के स्तम्भ बन जाते थे । दूसरे शब्दों में, समाज का नेतृत्व पाखंडियों और प्रतिक्रियावादियों के हाथ में था और रोरलुंद नाम का एक शिक्षक इस कार्य में सब से बड़ा-बड़ा था ।

जोहन-काण्ड के फल स्वरूप नाटक कम्पनी का व्यवस्थापक दार्फ अपनी पत्नी और बच्ची—दीना दार्फ—को त्यागकर अन्यत्र चला गया और शीघ्र ही उसका देहान्त भी हो गया । श्रीमती दार्फ वही बनी रही और मजदूरी करके अपना और अपनी पुत्री का पालन करती रही । थोड़े समय बाद वह भी बीमार होकर चल-बसी । बर्निक की बहन मार्ता दीना को अपने भाई के घर में ले आई और अपनी पुत्री के समान उसका पालन करती रही । किन्तु उस घर में एकत्र होनेवाली स्त्रियाँ और रोरलुंद आदि 'समाज के स्तम्भ' उस 'अभागी' बालिका के साथ सदैव दया और करुणा का व्यवहार करके उसके 'उद्धार' के प्रयत्न किया करते थे । जब वह विवाह के योग्य हुई तो रोरलुंद ने 'उसके उद्धार की दृष्टि से' उससे वचन लिया कि जब वह उचित अवसर देखकर उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखेगा तब दीना इनकार नहीं करेगी । स्वाभिमानिनी दीनाने

उसके सच्चे इरादे को न समझकर केवल उस घर के गला-घोंटू वता-वरण से त्राण पाने के लिए उसको यह वचन दे दिया था ।

मार्ता ने दीना के पालन-पोषण में जो रस लिया उसका कारण यह था कि वह जोहन से प्रेम करती थी—निरन्तर उसके लौटने की प्रतीक्षा में रही थी । जोहन से भेंट होने पर उसने कहा था—‘तुमने अपना जो कर्तव्य भुला दिया, उसे मैंने पूर्ण कर दिया है ।’ उसे क्या मालूम था कि दीना की माता के सम्बन्ध में जोहन केवल बलि का बकरा बनाया गया था ? फिर भी उसका प्रेम कम नहीं हुआ और आगे चलकर उसने जो कुछ किया वह प्रत्येक प्रेमी के लिए आदर्श है ।

जोहन के जाने के चौदह वर्ष बाद एक योजना बनाई गई कि नार्वे के समुद्र-तटवर्ती प्रदेश में रेलवे लाइन का निर्माण किया जाये । यदि रेलवे लाइन बन जाती तो नगर के बड़े-बड़े व्यापारियों को, जिनमें बर्निक प्रमुख था, लाभ के बदले हानि होती—उनके जहाजी उद्योग को धक्का पहुँचता । इसलिए बर्निक ने यह बताकर कि यह योजना नगर के लिए हितकारी नहीं है, उसे रद्द करा दिया । दूसरे वर्ष उसने स्वयं प्रयत्न कर के देश के अन्दरूनी भाग में रेलवे के निर्माण की योजना स्वीकार करा ली, किन्तु शर्त यह रखी गई कि उसके नगर तक एक शाखा-लाइन का निर्माण किया जाये । शाखा-लाइन की बात आरम्भ में गुप्त रखी गई और बर्निक ने तीन-चार अन्य बड़े व्यापारियों के साथ लाभ में साझा करके प्रस्तावित मार्ग के आसपास की भूमि मूल्य बढ़ने के पहले ही चुपके-चुपके खरीद ली ।

जब योजना प्रकट हुई तो उसे लोकसेवा और लोक-कल्याण का साधन बताया गया । परन्तु नगर के कुछ लोगों ने उसमें व्यक्ति-विशेषों के हितों को ताड़ लिया और उसका घोर विरोध किया जाने लगा । उसके सफल होने का एक मात्र उपाय यह रह गया कि जनता को बर्निक की न्यायपरायणता, निःस्वार्थता और नैतिकता पर जो अदम्य श्रद्धा है उसे कायम रखा जाये, जिससे जनता विरोधी प्रचार के चक्कर में न पड़े ।

यह भी आवश्यक था कि किसी प्रकार विरोधियों का मूँह बन्द कर दिया जाये ।

बर्निक इन्ही प्रयत्नों में लगा था । वह चाहता था कि पत्र उसकी सराहना करें । वह एक जहाज-कारखाने का मालिक था । उसने नई-नई मशीनें लगाई थीं जिनसे 'काम शीघ्र हो और लोक-सेवा अधिक हो सके ।' इन मशीनों के कारण बहुत से पुराने कर्मचारियों की आवश्यकता नहीं रह गई थी और उन्हें जवाब दे दिया गया था । कारखाने के फोरमैन श्रीने को यह बात खलती थी कि अधिकाधिक कर्मचारी अपनी रोजी से वंचित होते जायें, अतः वह नई मशीनों का उपयोग नहीं करता था ।

जब रेलवे-लाइन सम्बन्धी अफवाहें जोरों पर थी और बर्निक की हालत नाजुक होती जा रही थी उसी समय उसके कारखाने में दो जहाज मरम्मत के लिए आये—एक स्थानिक जहाज-मालिक का 'ताल-तरु' और दूसरा अमेरिका का 'भारत-बाला' । श्रीने ने 'ताल-तरु' की मरम्मत में सारी शक्ति लगाई; अमेरिकन जहाज, जो बहुत ही जीर्ण-शीर्ण हो गया था, वाद के लिए पड़ा रहा । उसके खलामियों का आचार-व्यवहार समाज के अनुकूल नहीं था । उससे समाज में 'चरित्रहीनता की छूत' फैल रही थी और सर्वत्र रोष था कि 'समाज के नैतिक स्तम्भ' बर्निक उस जहाज की शीघ्र से शीघ्र मरम्मत कराकर इन विदेशियों को विदा क्यों नहीं करते ? पत्रों में भी आलोचना आरम्भ हो गई कि बर्निक 'भारत-बाला' की मरम्मत की उपेक्षा करके समाज के जीवन को भ्रष्ट होने का अवसर दे रहे हैं । इसी बीच अमेरिकन कम्पनी का एक तार भी आ गया कि 'भारत-बाला' को, कम से कम जरूरी मरम्मत करके, अविलम्ब रवाना कर दो ।

बर्निक ने श्रीने को आदेश दिया कि 'परसों' तक 'भारत-बाला' को मरम्मत करके रवाना कर दिया जाये । इतने कम समय के सम्बन्ध में श्रीने की सारी अनुत्तय-विनय व्यर्थ हो गई । उसे चेतावनी दी गई कि यदि समय के अन्दर काम पूरा न हो गया तो तुम्हें बरखास्त कर दिया

जायेगा। बर्निक ने स्पष्ट कहा— 'इस अवसर पर मुझे अपने नागरिक बन्धुओं की सारी सद्भावना की आवश्यकता है। मैंने बहुत बड़ा काम हाथ में ले लिया है। यदि दुष्ट लोग मुझ पर से जनता का विश्वास डिगाने में सफल हो गये तो मैं बड़ी से बड़ी कठिनाई में पड़ सकता हूँ। इसलिए मैं कोई भी मूल्य चुकाकर पत्रों की इन लज्जाजनक आलोचनाओं को टालने को उत्सुक हूँ। मैं तुम्हें इससे अधिक समय नहीं दे सकता।' उसने यह भी कहा— 'तुम्हारी वर्खास्तगी से विरोधियों पर यह निश्चित असर पड़ेगा कि मैं न्यायी हूँ और समाज के हित के लिए अपने पुराने से पुराने कर्मचारी को भी निकालने में मैंने संकोच नहीं किया।'

इसी अवसर पर जोहन और लोना अचानक अमेरिका से आ गये। जोहन ने देखा कि बर्निक ने उसकी भलमनसाहत का बुरा लाभ उठाया है और बर्निक के स्वार्थ के कारण वह अपने नगर में इतना बदनाम हो गया है कि वहाँ के 'नैतिकता-अभिमानों' लोग उसमें बातें करना भी पसन्द नहीं करते। उसने बर्निक से माँग कि की अब अपना अपराध अपने कंधों पर लेकर मेरी प्रतिष्ठा मुझे वापस दो। वह श्रीमती दार्फ की, जिसके साथ पाये जाने का अपवाद उसने बर्निक के प्रति सद्भावना के कारण अपने सिर ले लिया था, पुत्री दीना दार्फ के साथ विवाह करके उसी नगर में रहना चाहता था।

बर्निक को इनमें से कोई भी बात स्वीकार्य नहीं थी। उसने रेलवे-निर्माण के सम्बन्ध में अपनी सच्ची स्थिति जोहन को बताकर कहा— 'इस समय मेरे अपराध स्वीकार कर लेने का अर्थ होगा मेरा सर्वनाश, इसलिए मैं किसी भी हालत में वैसा करने को तैयार नहीं हूँ।'

लोना ने बहुत प्रयत्न किया कि उसकी 'युवावस्था का आराध्य' बर्निक असत्य के पाश से मुक्त होकर सत्य के दृढ़ आधार पर खड़ा हो जाये और इस प्रकार समाज का सच्चा स्तम्भ बने, किन्तु वह सफल नहीं हुई। वह अब भी बर्निक की सच्ची हितैषिणी थी, अतः उसने जोहन पर जोर डाला कि वह वापस अमेरिका चला जाये और

फिर कभी लौटकर न आये। जोहन ने तत्काल जाना स्वीकार कर लिया, किन्तु कहा कि मैं दो मास में वापस आजाऊँगा और दीना के साथ विवाह करके इसी नगर में रहूँगा। तब बर्निक को अपना अपराध स्वीकार करके मुझे कलंक-मुक्त करना होगा, अन्यथा मैं स्वयं रहस्य का उद्घाटन कर दूँगा। दीना की माता सम्बन्धी कलंक से मुक्त हुए बिना वह दीना के साथ विवाह कैसे कर सकता था ?

जब बहुत कुछ समझाने पर भी जोहन अपने निश्चय से विचलित न हुआ तो बर्निक धीरे-धीरे कुत्थ के लिए तैयार हो गया। आने ने 'भारत-वाला' की दिखावटी मरम्मत कर दी थी और उतनी मरम्मत के बाद उसका समुद्र में डूब जाना निश्चित-प्राय था। बर्निक ने यह जानकर कि जोहन उससे यात्रा करनेवाला है, उसे रवाना कर देने का आदेश दे दिया—यदि जहाज उसे लेकर डूब जाये तो न रहेगा वॉम न वजेगी वाँगुरी !

जाने का दिन आया। रोरलुंद ने पहले ही सबके सामने प्रकट कर दिया था कि दीना मेरी वाग्दत्ता पत्नी है, और उसका जोहन के साथ जाने का प्रश्न टल गया था। परन्तु अब दीना उस वचन को तोड़कर जाने के लिए तैयार हो गई। उसने कहा—'मैंने उस मनुष्य से कभी प्रेम नहीं किया। मैं उसके साथ विवाह करने के बदले समुद्र में डूब मरना पसन्द करूँगी। ओह ! उसने कल अपने कृपापूर्ण व्यवहार से मेरा कितना अपमान किया था ! उसने कितना साफ कहा था कि मैं एक दीन-हीन, अपमानित जीव को अपने स्तर पर उठा रहा हूँ ! मैं अब और अपमानित नहीं होना चाहती। मैं जाना चाहती हूँ। क्या मैं तुम्हारे साथ चूँ ?' जोहन तो यही चाहता था। मार्ता ने दीना को अपने हाथों उसे सौंपा—उसे, जिससे वह स्वयं प्रेम करती थी और जिसकी प्रतीक्षा में उसने अपनी युवावस्था के पन्द्रह वर्ष व्यतीत कर दिये थे ! जोहन और दीना 'भारत-वाला' के बदले 'तालतह' में चले गये।

बर्निक को जब यह मालूम हुआ कि जोहन 'ताल-तर' से गया है और 'भारत-वाला' को डूबने देने में इतने आदमियों की हत्या बिल्कुल व्यर्थ ही होगी तो उसका अन्तरात्मा, जो पहले से ही बेचैन था, अब और भी बेचैन हो उठा। उसने शिथिल और आर्त स्वर में कहा— 'भारत-वाला' को रोक लो ! परन्तु उसे उत्तर मिला कि 'भारत-वाला' किनारे से जा चुकी है। थोड़ी देर बाद उसे मालूम हुआ कि उसका तेरह-वर्षीय पुत्र ओलफ 'भारत-वाला' से भाग गया है। वह पुत्र को बहुत प्यार करता था, वास्तव में उसके लिए ही अपने धन-मान की वृद्धि कर रहा था। उसने लोना से कहा था—“इस सारी धोखा-धड़ी से मुझे कोई प्रसन्नता नहीं होती। मुझे तो किसी न किसी दिन मिटना ही है और मेरे साथ गड़बड़-घोटाला करने वाले इस सारे समुदाय का भी अन्त हो जाएगा। परन्तु एक पीढ़ी बढ़ रही है। वह हमारे पीछे काम करेगी। मैं अपने पुत्र के लिए काम कर रहा हूँ—उसके लिए जीवन में उन्नति का कार्यक्रम बना रहा हूँ। एक दिन आयेगा, जब समाज के जीवन में सत्य का प्रवेश होगा, और उसकी नींव पर मेरा पुत्र अपने पिता की अपेक्षा अधिक सुखी जीवन का निर्माण करेगा।” ऐसे पुत्र के 'भारत-वाला' द्वारा भाग जाने के समाचार से उसके हाथ-पैर बिल्कुल ढीले हो गये। उसने नितान्त हताश होकर कहा—‘अब मैं उसे कभी न देख पाऊँगा !’ एक बार फिर पुकारा कि 'भारत-वाला' को रोक लो, उसमें ओलफ सवार है, परन्तु उत्तर वही मिला—‘भारत-वाला' को रोकना अब असम्भव है !

उसी दिन और लगभग उसी समय के लिए बर्निक के कुछ स्वार्थी व्यापारी साथियों ने नागरिकों द्वारा उसके सत्कार का एक बृहत् आयोजन कर रखा था। बर्निक ने अपनी अनुत्पन्न मनोदशा में उसमें शामिल होने से इनकार कर दिया। परन्तु ऐन मौके पर उसे मालूम हुआ कि उसकी पत्नी और औने के प्रयत्नों से 'भारत-वाला' रोक ली गई है और ओलफ के साथ-साथ जहाज की भी रक्षा हो गई है। इससे

उसके अन्तरात्मा को बल मिला—उसकी मानसिक क्रान्ति पूर्ण हो गई ।

वह सभा में गया और उसने रेलवे-मार्ग की भूमि की खरीद संबंधी सारा सत्य प्रकट कर दिया । उसने जनता के साथ उसका लाभ बाँटने की घोषणा भी की । जनता हर्षित हुई, किन्तु उसके साथियों ने इस 'घोर विश्वासघात' के लिए उसकी भर्त्सना की । दीना की माता के सम्बन्ध में भी सत्य को प्रकट करके उसने जोहन को कलंक-मुक्त कर दिया । इससे जनता के हृदय को बड़ी ठेस पहुँची और वह अपने 'समाज के नैतिक स्तम्भ' के अतीत जीवन के इस दयनीय एवं शोचनीय रहस्य में अत्यन्त हताश होकर विसर्जित हो गई ।

बर्निक को वह पारिवारिक प्रेम और आत्मिक शान्ति प्राप्त हुई जो अब तक दुर्लभ थी । जब उसने अपने बच्चे को आश्वासन दिया कि उसे अपने जीवन का विकास अपनी इच्छा के अनुसार करने दिया जायेगा, तो बच्चे ने कहा—तो, पिताजी, मैं समाज का स्तम्भ नहीं बनूँगा—वह बड़ी नीरस जिन्दगी होगी !”

औरने ने पूछा—‘भारत-वाला’ समय पर रवाना नहीं हो पाई—मैं मानता हूँ कि मैं बरखास्त कर दिया गया ।” बर्निक ने उत्तर दिया—“मेरे भाई, अब हम हमेशा साथ रहेंगे । अब जाओ, ‘भारत-वाला’ की मरम्मत अच्छी तरह से करो ।” औरने ने उत्तर दिया—“हाँ, करूँगा, और नई मशीनों से करूँगा ।”

बेती ने गद्गद् होकर उद्गार व्यक्त किया—“कभी तुम मेरे थे, इधर बहुत दिनों से मैंने तुम्हें खो दिया था । अब भरोसा हो गया कि मैं फिर तुम्हें जीत लूँगी ।”

और जब बर्निक ने कृतज्ञता व्यक्त करते हुए लोना से कहा—“मैंने समझ लिया कि समाज के सच्चे स्तम्भ स्त्रियाँ हैं, तो लोना ने उत्तर दिया—“मेरे भाई, तुमने बड़ा दरिद्र ज्ञान प्राप्त किया ! समाज के सच्चे स्तम्भ हैं—सत्य की स्फूर्ति और स्वतन्त्रता की स्फूर्ति !”

इस नाटक से, जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, इब्सन अपने पाठकों के समक्ष अपने समाज की दुःस्थिति का चित्रण करके उसके पाखंडों पर तीखा, व्यंग्ययुक्त प्रहार करते हैं और पूछते हैं—“यह है हालत, इसमें तुम क्या करना चाहते हो ?” भारत में भी पाखंड, कूप-मंजूकता और रूढ़िवाद की कमी नहीं है। अतएव यह अनुवाद पाठकों के सामने रखते हुए यही कामना की जा सकती है कि इसे पढ़कर हमारा आत्मा तिलमिला उठे और हम भी जाग्रति की ओर द्रुत गति से अग्रसर हों ! लेखक को इसमें बड़ा पुरस्कार और क्या दिया जा सकता है ?

अनुवाद के विषय में

अनुवाद के विषय में भी दो शब्द कह देना अनुचित न होगा। जहाँ तक सम्भव था, अनुवाद को सरल और स्वाभाविक बनाने का प्रयत्न किया गया है। फिर भी, नाटकों के अनुवाद में कुछ विशेष कठिनाइयाँ होती हैं। सब कठिनाइयों की चर्चा करने का स्थान यह नहीं है, इसलिए एक-दो की चर्चा उदाहरण के रूप में कर देना पर्याप्त होगा।

पश्चिम में प्रातः, मध्याह्न, अपराह्न, सायं, रात्रि, विदाई और मिलन आदि के समय अभिवादन के लिए विशिष्ट शब्द-प्रयोग निश्चित हैं—जैसे, गुड मॉर्निंग, गुड बाई आदि। इनका जैसा-का-तैसा उपयोग हिन्दी में शोभा नहीं देता। दूसरी ओर, यदि भारतीय अभिवादन ‘नमस्ते’ आदि का प्रयोग किया जाये तो ये शेष पाश्चिमात्य वातावरण में अटपटे मालूम होते हैं। इसका क्या उपाय किया जाये ? एक बार मन में आया कि मह. ष्ट्र और गुजरात में पश्चिमी अभिवादन-प्रयोगों के जो भारतीय अनुवाद विनोद के रूप में आरम्भ होकर अब गम्भीर रूप में प्रचलित होते जा रहे हैं, उन ‘सुप्रभातम्’, ‘शुभ रात्रि’ आदि को स्वीकार कर लिया जाये; किन्तु ऐसा करने का साहस नहीं हुआ। अतएव सर्वत्र ‘नमस्ते’ का प्रयोग करके सन्तोष मान लिया गया है। इसका एक न्याय यह

मिल गया कि अन्ततः, शुद्ध अर्थ की दृष्टि से, यह प्रयोग सर्वसमाजी तो हो ही सकता है ।

अनुवाद करते-करते अनेक बार मन में यह विचार भी आया कि ऐसी कृतियों को जहाँ-तहाँ आवश्यक परिवर्तन करके पूर्णतः भारतीय रूप-रंग क्यों न दे दिया जाये ? ऐसे कुछ अनुवाद मैंने अपने साहित्यिक जीवन के आरम्भ में किये भी थे और एक फ्रांसीसी कहानी का ऐसा ही अनुवाद 'विशाल भारत' में प्रकाशित करते हुए पत्र के तत्कालीन सम्पादक पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी ने उसकी प्रशंसा भी की थी । किन्तु, इधर अनेक वर्षों से मुझे यह नीति अधिक उपयोगी मालूम होती हुई भी अनुदार प्रतीत होने लगी है । इस दृष्टि से जैसा का तैसा अनुवाद करना ही ठीक जँचता है । पश्चिमी भाषाओं में भारतीय ग्रन्थों के जो अनुवाद हुए हैं उनमें कोई परिवर्तन नहीं किया गया । अभिवादन के शब्दों का भी उनमें अनुवाद कर लिया गया है । उदाहरण के लिए, 'तस्मै नमः' का अनुवाद 'सैल्युटेशन्स टु हिम' देखा जाता है, जो अंग्रेजी में खपा भी लिया गया है । राइडर-कृत पंचतंत्र का अनुवाद इस विषय का ज्वलन्त उदाहरण है । रामायण आदि के अनुवाद भी इसी प्रकार के हैं । इस नीति का अवलम्बन हिन्दी में भी क्यों न जारी रहे ? और अभिवादन-प्रयोगों के भी भारतीय अनुवाद क्यों न कर लिए जायें ? आगे चलकर, जब देश में अंग्रेजी का प्रचार कम हो जायेगा, ये नये भारतीय शब्द पश्चिमी देशों की संस्कृति को समझने में अधिक सहायक न होंगे ?

नई दिल्ली
२२ अक्टूबर, १९५५ }

सीताचरण दीक्षित

क्रम

पृष्ठ

प्रथम अंक	..	..	..	..	१-३२
द्वितीय अंक	..	..	..	..	३३-६६
तृतीय अंक	..	..	..	..	७०-९६
चतुर्थ अंक	..	..	..	..	९७-१२६

नाटक के पात्र

कास्टन बर्निक	जहाज निर्माता
श्रीमती बर्निक	उसकी पत्नी
ओलफ़	उनका पुत्र, आयु १३ वर्ष
मार्ता बर्निक	कास्टन बर्निक की बहन
जोहन तोनेसन	श्रीमती बर्निक का छोटा भाई
लोना हेसेल	श्रीमती बर्निक की अर्ध-भगिनी
हिल्मर तोनेसन	श्रीमती बर्निक का चचेरा भाई
दीना दार्फ	बर्निक परिवार में रहने वाली एक तरुणी
शेरलुंद	एक अध्यापक
रुमेल	एक व्यापारी
विगेलान्द	एक व्यापारी
सान्दस्ताद	एक व्यापारी
क्रैप	बर्निक का विश्वस्त क्लर्क
ग्रौने	बर्निक के कारखाने का फोरमैन
श्रीमती रुमेल	रुमेल की पत्नी
हिल्दा रुमेल	उनकी पुत्री
श्रीमती होल्ट	
नेता होल्ट	श्रीमती होल्ट की पुत्री
श्रीमती लिंगे	

नगर निवासी, दर्शक, विदेशी खलासी, स्टीमबोट के यात्री आदि ।
घटना-स्थल—नार्वे के समुद्र-तट के एक छोटे नगर में बर्निक का मकान।

समाज के स्तम्भ

प्रथम अंक

[दृश्य—बर्निक के मकान का एक बड़ा कमरा, जिसके आसपास बाग है। बाईं ओर बर्निक के कमरे का दरवाजा और उसके आगे एक दूसरा दरवाजा है। सामने की ओर बीच में एक बड़ा दरवाजा है, जिससे सड़क का रास्ता है। पीछे की लगभग पूरी दीवार पर शीशा मढ़ा है। उसमें बाग में जाने के जीने का एक बड़ा दरवाजा है। सीढ़ियों के नीचे बाग का एक भाग दिखलाई पड़ता है, जिसकी चहार-दीवारी में एक छोटा-सा फाटक है। चहारदीवारी के बाहर सड़क है। उसी सड़क की दूसरी ओर उज्ज्वल रंगों के छोटे-छोटे काठ के मकान हैं। ऋतु गर्मी की है और सड़क पर लोग आते-जाते रुक-रुक कर बातें करते दिखलाई पड़ते हैं। कुछ लोग नुक्कड़ पर की दूकान में जाते और उससे निकलते हैं।]

कमरे में कुछ महिलाएँ एक मेज के आसपास बैठी हुई हैं। श्रीमती बर्निक मानो अध्यक्षता कर रही हैं। उनकी बाईं ओर श्रीमती होल्त और उनकी पुत्री नेता हैं, उनके बाद श्रीमती रुमेल और हिल्दा बैठी हुई हैं। दाहिनी ओर श्रीमती लिंगे, मार्ता बर्निक और दीना दार्फ हैं। सब महिलाएँ काम में व्यस्त हैं। मेज पर बहुत से कपड़े पड़े हुए हैं, जिनमें कुछ कटे हुए और कुछ आधे सिले हुए हैं। कुछ दूरी पर एक छोटी मेज है। उस पर दो फूलदान रखे हुए हैं। रोरलुंद वहाँ बैठा एक सुनहरी कोर की पुस्तक पढ़ रहा है। वह इतने उच्च स्वर से पढ़ता है कि केवल एक-दो शब्द जब-तब महिलाओं के कानों में पड़ सकते हैं। बाहर, बाग में,

ओलफ़ बर्निक एक तीर-कमान लिये इधर-उधर दौड़ रहा है और किसी लक्ष्य पर निशाना लगाने का प्रयत्न कर रहा है ।]

[थोड़ी देर में औने दाहिनी ओर के द्वार से चुपचाप प्रवेश करता है । पढ़ने में किंचित् बाधा पड़ती है, श्रीमती बर्निक सिर डुलाकर उस का अभिवादन स्वीकार करती हैं और बर्निक के दरवाजे की ओर संकेत कर देती हैं । औने चुपचाप कमरे को पार करके बर्निक के दरवाजे पर जाता है और उसे धीरे से खटखटाता है । थोड़ी देर रुककर फिर से खटखटाता है । क्रैप बाहर निकलता है । उसके हाथ में कुछ कागज़ और बगल में टोप है]

क्रैप—ओह ! तुम खटखटा रहे थे ?

औने—मिस्टर बर्निक ने मुझे बुलाया है ।

क्रैप—हाँ, बुलाया है । परन्तु वे आप से मिल नहीं सकते । उन्होंने मुझे भेजा है आप से कह देने को कि...

औने—आपको भेजा है ? फिर भी अच्छा होगा अगर मैं खुद...

क्रैप—मुझे भेजा है कि आपको बता दूँ, वे क्या कहना चाहते हैं । आप शनिवार को मजदूरों के सामने जो व्याख्यान दिया करते हैं उन्हें बन्द करना होगा ।

औने—हाँ ? मेरा तो खयाल था कि मैं अपने निजी समय का उपयोग करके...

क्रैप—आप अपने निजी समय का उपयोग लोगों को काम के समय बेकार बनाने के लिए न किया करें । पिछले शनिवार को आप उन्हें बता रहे थे कि नई मशीनों और काम की नई पद्धति से मजदूरों को क्या हानि होगी । आप यह क्यों करते हैं ?

औने—समाज के लाभ के लिए ।

क्रैप—विचित्र बात है ! मिस्टर बर्निक तो कहते हैं, इससे समाज का संगठन भंग हो रहा है ।

औने—मेरा समाज मिस्टर बर्निक का समाज नहीं है, मिस्टर क्रैप !

औद्योगिक संघ के अध्यक्ष की हैसियत से मैं बाध्य हूँ...

अौने—आप सबसे पहले मिस्टर बर्निक के जहाज-कारखाने के अध्यक्ष हैं। इसके पहले कि आप कोई दूसरा काम करें, आपको उस समाज के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिए, जो बर्निक एण्ड कंपनी कहलाता है। हम में से प्रत्येक व्यक्ति इसी के लिए जी रहा है। अच्छा, तो आपको मालूम हो गया कि मिस्टर बर्निक आप से क्या कहना चाहते थे।

अौने—मिस्टर बर्निक ने इस तरह न कहा होता, मिस्टर क्रैप ! परन्तु मैं खूब जानता हूँ कि इसके लिए धन्यवाद किसे दिया जाय—उस कम्बख्त अमेरिकन जहाज को ! वे पट्टे जैसा काम वहाँ करा लेते हैं, वैसा ही यहाँ भी कराना चाहते हैं और...

क्रैप—हाँ हाँ ! मगर मैं इन सब तफसीलों में नहीं जा सकता ! आप जान गये हैं कि मिस्टर बर्निक का खयाल क्या है। और इतना बस है। कृपया कारखाने में जाइए। शायद वहाँ आपकी जरूरत हो। मैं भी चंद मिनटों में वहाँ पहुँचता ही हूँ। (महिलाओं से)—क्षमा कीजिएगा ! (उन्हें अभिवादन करके चला जाता है।)

[अौने मूक भाव से दाहिनी ओर निकल जाता है। रोरलुंद इस सारी बातचीत के दौरान में, जो धीमे स्वर में हो रही थी, अपनी पुस्तक पढ़ता रहा था। अब उसने उसे पूरा करके फटाक से बन्द कर दिया।]

श्रीमती रोरलुंद—सो, यह है इसका अन्त !

श्रीमती रुमेल—कैसी शिक्षा-प्रद कहानी है !

श्रीमती होल्त—और कितना अच्छा उपदेश !

श्रीमती बर्निक—ऐसी पुस्तक से सचमुच कुछ सोचने को मिलता है !

रोरलुंद—बिल्कुल सही ! आजकल की पत्र-पत्रिकाओं में जो कुछ दुर्भाग्य-वश प्रतिदिन दिखलाई पड़ता है उससे नितान्त भिन्न चित्र इसमें हैं। किसी भी बड़े समाज के बाहरी आडम्बर—तड़क-भड़क—को देखिए और सोचिए, उसके पीछे वास्तव में क्या छिपा रहता है—खरी बात कही

जाय तो, छूँछापन, सड़न ! नैतिकता का कोई आधार नहीं ! हमारे ये बड़े-बड़े समाज आज सफेद पुती हुई कच्चे मात्र हैं !

श्रीमती होल्ट—कितना सच ! कितना सच !

श्रीमती हमेल—और इसका उदाहारण खोजने के लिए दूर जाने की भी जरूरत नहीं—वह जो अमेरिकन जहाज पड़ा है, उसके कर्मचारियों को ही देख लो न !

रोरलुंद—ओह ! उनकी क्या बात की जाये—वे तो मानवता के तल-छट हैं । परन्तु बड़े-बड़े समाजों की भी क्या अवस्था है ? सब ओर शंका और बेचैनी का भाव ! मन में शान्ति का नाम नहीं ! सारे व्यवहार में अस्थिरता ! ज़रा देखो, वहाँ कौटुम्बिक जीवन की नींव कितनी कमजोर पड़ गई है ! अत्यन्त गम्भीर सत्यों पर भी शका करने से कितना निर्लज्जतायुक्त प्रेम है उन्हें !

दीना—(काम से दृष्टि उठाये बिना ही) परन्तु क्या वहाँ भी बहुत से बड़े-बड़े काम नहीं किये जाते ?

रोरलुंद—बड़े-बड़े काम ! मेरी समझ में नहीं आता.....!

श्रीमती होल्ट—(आश्चर्य से) हाय भगवान् ! दीना....!

श्रीमती हमेल—(उसी सिलसिले में)—दीना ! तुम भी....?

रोरलुंद—मेरा खयाल है, यदि वैसे बड़े-बड़े काम यहाँ भी नित्य-प्रति होने लगें तो हमारा कल्याण शायद ही होगा । सचमुच तो हमें भगवान् को धन्यवाद देना चाहिए कि इस देश में जो-कुछ है सो है । दुर्भाग्य से, हमारे समाज में भी कूड़ा-करकट जरूर पैदा होता है, परन्तु हम उसे साफ करते रहने का प्रयत्न सचाई के साथ और शक्ति भर करते रहते हैं । महत्व की बात यह है कि समाज को शुद्ध रखा जाये—उन सब जोखिम-भरे प्रयोगों को दूर रखा जाये, जिन्हें यह शान्तिरहित युग हमारे ऊपर लादना चाहता है ।

श्रीमती होल्ट—दुःख की बात तो यह है कि वे हवा में जरूरत से ज्यादा फैले हुए हैं !

श्रीमती रुमेल—और क्या ? आप जानती ही है, पिछले वर्ष हम लोग यहाँ रेलवे शुरू होने में बाल-बाल बचे थे !

श्रीमती बर्निक—ओह ! मेरे पति ने ही तो उसे रोका था ।

रोरलुंद—भगवान् ने, श्रीमती बर्निक ! विश्वास मानिए, जब आपके पति ने उस योजना में हाथ बँटाने से इनकार किया उस समय वे एक उच्चतर शक्ति के निमित्त बन गये थे ।

श्रीमती बर्निक—फिर भी तो, लोगों ने समाचारपत्रों में उनके विरुद्ध कितनी-कितनी भयानक बातें कही ! पर हम आपको धन्यवाद देना तो भूल ही गये, मिस्टर रोरलुंद ! आपका हमारे लिए इतना समय देना, मचमुच, केवल मित्रता में कही अधिक है !

रोरलुंद—अरे, नहीं ! यह तो फुरसत का समय है, और—

श्रीमती बर्निक—माना, फिर भी यह त्याग तो है ही, मिस्टर रोरलुंद !

रोरलुंद—(अपनी कुर्सी निकट खींचता हुआ) ऐसा न कहिए, श्रीमतीजी ! आप सब भी एक अच्छे काम के लिए त्याग नहीं कर रही हैं ?—और कितनी तत्परता और प्रसन्नता से ! जिन बेचारी पतिताओं के उद्धार के लिए हम प्रयत्नशील हैं उनकी तुलना रणभूमि पर घायल हुए सैनिकों से की जा सकती है, और आप लोग सेवा-भाव से प्रेरित करुणामयी माताएँ हैं, जो इन पीड़िताओं के लिए मरहम तैयार करती हैं और उनके घावों पर कोमल हाथों से पट्टियाँ बाँधती हैं, और उन्हें सेहत देती हैं ।

श्रीमती बर्निक—प्रत्येक वस्तु को इतने सुन्दर रूप में देखने की क्षमता एक आश्चर्यजनक देन होनी चाहिए !

रोरलुंद—इसमें बहुत-कुछ तो जन्मसिद्ध होती है, परन्तु बहुत-कुछ उपार्जित भी की जा सकती है । आवश्यक इतना ही है कि ऐसी बातों को जीवन के एक गंभीर व्रत की दृष्टि से देखा जाये ।

(मार्ता से) आप क्या कहती हैं, कुमारी बर्निक ? आपको अनुभव

नहीं हुआ कि जब से आप शाला के काम में लगी तब से मानो हड़तर भूमि पर खड़ी हो गई है ?

मार्ता—मेरी तो, सचमुच, समझ में ही नहीं आता, क्या कहना चाहिए । कभी-कभी शाला में बैठे-बैठे मुझे लगता है कि मैं कहीं दूर—बहुत दूर—तूफानी समुद्र में पर्यटन करती होती !

रोरलुंद—यह तो केवल प्रलोभन है । आपको ऐसे विक्षोभकारी अतिथियों के लिए अपने मन के द्वार बन्द कर देने चाहिएँ । 'तूफानी समुद्र' से आपका अक्षरशः वही मतलब तो नहीं है—आप बताना चाहती हैं विराट् बाह्य जगत का उत्पाती ज्वार, जिसमें अनेकानेक लोगों की नौकाएँ ध्वस्त हो जाती हैं । क्या आप इस जीवन को, जो बाहर दौड़-धूप करता सुनाई पड़ रहा है, सचमुच इतना मूल्यवान समझती हैं ? जरा सड़क पर नजर घुमाकर देखिए—लोग अपने छोटे-छोटे कामों के लिए धूप में, पसीने से तर-बतर, ठोकरें खाते हुए दौड़ते फिर रहे हैं । निश्चय ही हम उन सब से सुखी हैं, क्योंकि हमें इस ठंडक में बैठने और उन क्षेत्रों की ओर पीठ फेर देने का सौभाग्य प्राप्त है, जिनमें अशान्ति का आगमन होता है ।

मार्ता—निःसंदेह ! आप ठीक कह रहे हैं !

रोरलुंद—और ऐसे एक घर में—ऐसे अच्छे और पवित्र घर में, जहाँ कौटुम्बिक जीवन अपने सुन्दरतम रूप में खिला हुआ है, और जहाँ शान्ति और समन्वय का साम्राज्य... ! (श्रीमती बर्निक से) आप कहाँ ध्यान लगाये हैं, श्रीमती बर्निक ?

श्रीमती बर्निक—(जिन्होंने बर्निक के कमरे की ओर मुँह फेर लिया है) वहाँ बहुत जोरों से बातें हो रही हैं ।

रोरलुंद—कोई बहुत खास बात हो रही है ?

श्रीमती बर्निक—मालूम नहीं—इतना ही सुनाई पड़ता है कि मेरे पति के पास कोई है ।

(हिल्मर तोनेसन सिगार पीता हुआ दाहिनी ओर के दरवाजे पर

दिखाई देता है । महिलाओं को एकत्र देखकर रुक जाता है) ।

हिल्मर—ओह ! क्षमा कीजियेगा—(वापस जाने लगता है)

श्रीमती बर्निक—नहीं, नहीं हिल्मर ! अन्दर आओ । तुमसे हमारे बीच बाधा थोड़े ही पड़ेगी । तुम्हें कुछ चाहिए ?

हिल्मर—नहीं, मैं तो यों ही चला आया था । नमस्ते, आप सब को ! क्यों बेती, क्या परिणाम हुआ ?

श्रीमती बर्निक—किस बात का ?

हिल्मर—कार्स्टन ने एक बैठक बुलाई थी न ?

श्रीमती बर्निक—हाँ ? किस लिए ?

हिल्मर—ओह ! वही फिर, रेलवे सम्बन्धी मूर्खता !

श्रीमती रुमेल—क्या वह संभव है ?

श्रीमती बर्निक—वेचारे कार्स्टन ! उन्हें अभी और परेशानी उठानी होगी ?

रोरलुंद—परन्तु इसके मानी क्या है, हिल्मर ? आपको मालूम है, पिछले वर्ष उन्होंने बिल्कुल स्पष्ट कर दिया था कि वे यहाँ रेलवे नहीं लायेंगे ।

हिल्मर—हाँ, यही मैंने भी सोचा था । परन्तु मुझे उनका विश्वस्त क्लर्क क्रैप मिला था । उसने बताया कि रेलवे-योजना पर फिर से विचार हो रहा है । उसने यह भी कहा कि मिस्टर बर्निक तीन स्थानीय पूँजीपतियों के साथ विचार-विमर्श कर रहे हैं ।

श्रीमती रुमेल—ओह ! मैं ठीक ही सोच रही थी कि आवाज तो मेरे पति की है !

हिल्मर—निःसंदेह, मिस्टर रुमेल मामले में शामिल हैं—और सान्द-स्ताद तथा माइकेल विगेलान्द भी, जिन्हें लोग 'सन्त माइकेल' कहते हैं ।

रोरलुंद—क्या नाम से.....अ ! अ !

हिल्मर—क्या कह रहे थे आप, मिस्टर रोरलुंद ?

श्रीमती बर्निक—ठीक जब सब इतना अच्छा और शान्ति के साथ चल रहा था...

हिल्मर—जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मुझे तो उनके फिर से बखेड़ा खड़ा करने में रस्ती भर भी आपत्ति नहीं है । जरा-सा मन-बहलाव तो होगा ही !

रोरलुंद—मैं तो सोचता हूँ, हम इस प्रकार के मन-बहलाव से मुक्त रह सकते हैं ।

हिल्मर—यह तो अपने-अपने स्वभाव की बात है । कुछ लोगो के दिलों में जब-तब संघर्ष का प्रेम उमड़ता ही रहता है । परन्तु, दुर्भाग्यवश देहाती नगर के जीवन में उसकी बहुत सुविधा नहीं होती और प्रत्येक व्यक्ति में सामर्थ्य भी नहीं होता कि.... (रोरलुंद जो पुस्तक पढ़ रहा था उसके पन्ने उलटता है ।) “नारी—समाज की दासी”—यह क्या कूड़ा है ?

श्रीमती बर्निक—भाई, तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए । तुमने यह पुस्तक पढ़ी नहीं ?

हिल्मर—नहीं, और पढ़ने का इरादा भी नहीं है ।

श्रीमती बर्निक—आज तुम कुछ स्वस्थ नहीं दीखते !

हिल्मर—नहीं ।

श्रीमती बर्निक—शायद रात को अच्छी तरह सोये नहीं ?

हिल्मर—नहीं, नींद खराब रही । कल शाम को मैं घूमने चला गया था । वही से क्लब गया और ध्रुव-यात्रा पर एक पुस्तक पढ़ी । प्रकृति से जूझनेवाले लोगों के साहसिक कार्यों की कहानियों से कुछ स्फूर्ति मिलती है ।

श्रीमती हमेल—परन्तु उससे आपको बहुत लाभ हुआ तो नहीं दीखता ?

हिल्मर—नहीं, सचमुच नहीं हुआ । मैं रात भर करवटें बदलता पड़ा रहा । एक स्वप्न देखा, मानो एक वीभत्स समुद्री घोड़ा मेरा पीछा कर रहा है ।

ओल्फ—(इसी समय बाग से आकर)—समुद्री घोड़ा आपका

पीछा कर रहा था, मामा ?

हिल्मर—मैंने स्वप्न देखा था, मूर्ख ! क्या तू अब भी इस वाहि्यात कमठे में खेलता है ? एक बन्दूक क्यों नहीं ले लेता ?

ओलफ—मैं चाहता तो हूँ, मगर....

हिल्मर—उस तरह की चीज कुछ मानी रखती है—जब-जब गोली चलाओ, कुछ उत्तेजना मिलती है ।

ओलफ—और फिर मैं भालुओं का शिकार कर सकूँगा, मामा ! परन्तु पिताजी मंजूर नहीं करने !

श्रीमती बर्निक—तुम्हें ऐसी बातें उसके दिमाग में नहीं भरनी चाहिएँ, हिल्मर !

हिल्मर—हूँ, कौसी अच्छी शिक्षा दे रहे हैं हम आजकल बच्चों को ! ईश्वर जाने, बहादुरी के खेलों की हम कितनी बातें करते हैं, फिर भी हम असल बात का धिलवाड़ करते रहते हैं । खतरों का बहादुरी के साथ सामना करने में जो बलप्रद अभ्यास होता है उसकी ओर गंभीरता से कोई ध्यान दिया ही नहीं जाता । (ओलफ से)—अपनी कमान मेरी ओर ताने मत खड़ा रह, बुद्धू ! वह छूट जायेगी ।

ओलफ—नहीं मामा, इसमें तौर नहीं है ।

हिल्मर—तुझे क्या मालूम, है या नहीं ? हो भी सकता है । मैं कहता हूँ, तू हटा उसे ! अपने पिता के जहाज पर कभी अमेरिका क्यों नहीं चला गया ? वहाँ तूने भैंसे का शिकार देखा होता, रेड इंडियनों के साथ लड़ाई देखने को मिलती ।

श्रीमती बर्निक—ओह ! हिल्मर....!

ओलफ—मेरी तो बड़ी इच्छा है, मामा ! और वहाँ जोहन मामा भी होंगे, लोना मौसी भी मिलेगी !

हिल्मर—हूँ ! बकवास !

श्रीमती बर्निक—अच्छा, अब जाओ तो फिर से बाग में, ओलफ !

ओलफ—सड़क पर भी जाऊँ, माँ ?

श्रीमती बर्निक—हाँ, मगर बहुत दूर नहीं, याद रखना !

[ओलफ भाग जाता है]

रोरलुंद—मिस्टर तोनेसन, आपको ऐसी उमर्गे बच्चे के मन में नहीं पैदा करनी चाहिएँ ।

हिल्मर—नहीं, उसके भाग्य में तो अभाग्य घर-घुसा बनना ही लिखा है ।

रोरलुंद—तो आप स्वयं वहाँ की एक यात्रा क्यों नहीं कर डालते ?

हिल्मर—मैं ? अपने इस निकम्मे स्वास्थ्य को लेकर ? अवश्य ही इसके कारण मुझे कोई रियायत नहीं मिलती । परन्तु इस बात को छोड़ भी दें तो मनुष्य का अपने समाज के आभार चुकाने का भी तो कुछ कर्तव्य होता है ! आदर्श की पताका फहराते रहने के लिए किसी को तो यहाँ रहना ही चाहिए ! —उफ़ ! वे फिर चीखने लगे !

महिलाएँ—कौन चीख रहा है यह ?

हिल्मर—मैं नहीं जानता । मगर उनकी चीख में मेरा तो जी घबराने लगा !

श्रीमती बर्निक—मुझे लगता है, मेरे पति हैं, हिल्मर ! तुम तो जानते हो, वे बड़ी-बड़ी सभाओं में भाषण देने के कितने आदी हैं !

रोरलुंद—परन्तु दूसरे भी तो धीरे नहीं बोल रहे हैं !

हिल्मर—भगवान की शपथ, बिल्कुल नहीं ! —जेब पर असर करने वाले किसी प्रश्न पर नहीं ! यहाँ की सब बातों का अन्त रुपये-पैसे के तुच्छ विचार से ही होता है ! उफ़ !

श्रीमती बर्निक—पहले से तो हालत कहीं अच्छी है ! पहले तो सब बातें निरर्थक हँसी-मजाक में ही उड़ जाया करती थीं !

श्रीमती लिंगे—इतनी खराब थी हालत ?

श्रीमती रुमेल—थी नहीं तो क्या, श्रीमती लिंगे ? आप तो अपने को भाग्यशालिनी समझिए कि उस समय यहाँ थीं नहीं ।

श्रीमती होल्त—हाँ, भइ ! अब तो समय बदल गया । जब मैं अपने

लड़कपन की याद करती हूँ....

श्रीमती हमेल—ओह ! चौदह-पन्द्रह वर्ष में पीछे जाने की क्या जरूरत ? भगवान क्षमा करें, क्या जीवन था हमारा ! उन दिनों यहाँ एक नृत्य-मंडली थी, और एक गायन-मंडली !

श्रीमती बर्निक—और नाटक-क्लब ! मुझे उसकी खूब याद है !

श्रीमती हमेल—हां, वही तो था, जिसमें आपका नाटक हुआ था, मि० तोनेसन !

हिल्मर—(कमरे के पीछे से) क्या ? क्या हुआ था ?

रोरलुंद—तोनेसन का नाटक ?

श्रीमती हमेल—हां, आपके यहाँ आने के बहुत पहले, मिस्टर रोरलुंद ! और वह केवल एक बार हुआ था ।

श्रीमती लिंगे—क्या वही नाटक, श्रीमती हमेल, जिसमें आप कहती थीं, आपने एक युवक की प्रेयसी का अभिनय किया था ?

श्रीमती हमेल—(रोरलुंद की ओर देखकर) मेने ? मुझे तो बिल्कुल याद नहीं है, श्रीमती लिंगे । परन्तु उन दिनों की सब धूमधाम और उछल-कूद की मुझे खूब याद है ।

श्रीमती होल्त—प्रौर, ऐसे घर भी थे उन दिनों, जिनमें सप्ताह में दो-दो बार बड़े-बड़े भोज दिये जाते थे—मैं उनके नाम तक गिना सकती हूँ ।

श्रीमती लिंगे—मैंने सुना है, एक पर्यटनशील नाटक-मंडली भी तो एक बार आई थी ?

श्रीमती हमेल—हां जी ! वह तो हृद ही हो गई थी !

श्रीमती होल्त—अ ! अ ! अ ! —क्या कहते हैं—!

श्रीमती हमेल—आपने नाटक-मंडली की बात कही ? नहीं, नहीं ! उसका मुझे बिल्कुल स्मरण नहीं ।

श्रीमती लिंगे—मैंने सुना है, वे लोग तरह-तरह की मतवाली कलाबाजियाँ दिखाया करते थे । सच बात क्या है, भला ?

श्रीमती रुमेल—इन कहानियों में लगभग कोई तथ्य नहीं है, श्रीमती लिंगे !

श्रीमती होल्त—दीना, जरा वह कपड़ा देना, बेटी !

श्रीमती बर्निक—(उसी समय)—दीना बेटी, जरा जाकर कात्रिन से काँफ़ी लाने के लिए कहोगी ?

मार्ता—मैं भी चलती हूँ तुम्हारे साथ, दीना !

[दीना और मार्ता बाई और के दूरवाले दरवाजे से निकल जाती हैं ।]

श्रीमती बर्निक—(उठती हुई)—जरा क्षमा कीजिएगा, सोचती हूँ, बाहर बैठकर काँफ़ी पियेगे ।

[ब्रामदे में जाकर मेज लगाने लगती है । रोरलुंद दरवाजे पर खड़ा होकर उससे बातें करता है । हिल्मर बाहर बैठा धूम्र-पान कर रहा है ।]

श्रीमती रुमेल—(मंद स्वर में)—कैसा डरा दिया तुमने मुझे, श्रीमती लिंगे !

श्रीमती लिंगे—मेने ?

श्रीमती होल्त—और किसने ? परन्तु शुरू करनेवाली तो आप ही थी, श्रीमती रुमेल !

श्रीमती रुमेल—मैं ? ऐसा कैसे कहती हैं, आप ? मेरे मुँह से तो एक शब्दांश भी नहीं निकला !

श्रीमती लिंगे—परन्तु इस सत्र का अर्थ क्या है ?

श्रीमती रुमेल—आपने बात ही शुरू क्यों की उस बारे में—? देखा नहीं कि दीना कमरे में मौजूद थी ?

श्रीमती लिंगे—दीना ? हाय भगवान ! कुछ गड़बड़ी है क्या उसके...?

श्रीमती होल्त—और फिर इस घर में ! मालूम नहीं कि वह श्रीमती बर्निक का भाई था ?

श्रीमती लिंगे—सो क्या ? मुझे तो कुछ भी नहीं मालूम । आप

जानती हूँ, मैं इस जगह बिल्कुल नहीं हूँ ।

श्रीमती रुमेल—आपने मुना नहीं ? क्या कहते हैं—! (अपनी पुत्री से) हिल्दा बेटी, तुम जरा बाग में जाकर टहलो ।

श्रीमती होल्त—तुम भी जाओ, नेता ! और जब बेचारी दीना वापस आये तो उसके साथ बहुत सहृदयता का व्यवहार करना ।

[हिल्दा और नेता बाग में चली जाती हैं ।]

श्रीमती लिंगे—हाँ, तो श्रीमती बर्निक के भाई के बारे में क्या कह रही थी, आप ?

श्रीमती रुमेल—उसके बारे में वह भयानक लोकापवाद आपने नहीं मुना ?

श्रीमती लिंगे—भयानक लोकापवाद !—मिस्टर तोनेसन के बारे में ?

श्रीमती रुमेल—हिल्मरे नहीं, भाई ! यह तो उनका चचेरा भाई है । मैं उनके सगे भाई के बारे में कह रही हूँ ।

श्रीमती होल्त—वह पाजी तोनेसन...

श्रीमती रुमेल—उसका नाम था जोहन । वह अमेरिका भाग गया ।

श्रीमती होल्त—भागना पड़ा—कहिए ।

श्रीमती लिंगे—तो, लोकापवाद उसके बारे में है ?

श्रीमती रुमेल—हाँ, बात कुछ ऐसी थी—कैसे कहूँ ?—उसके और दीना की माँ के बीच किसी प्रकार का कुछ था । मुझे अच्छी तरह याद है—जैसे अभी कल की ही बात हो ! उस समय जोहन मिस्टर बर्निक की माता के दफ्तर में काम करता था । कार्स्टन पेरिस से आये ही थे—तब उनकी सगाई नहीं हुई थी ।

श्रीमती लिंगे—मगर लोकापवाद क्या था ?

श्रीमती रुमेल—उस ठंड में मोलर की मडली यहाँ आई थी और अपने नाटक दिखला रही थी—

श्रीमती होल्त—उसमें प्रसिद्ध अभिनेता वार्फ और उसकी पत्नी, दोनों थे—शहर के सारे युवक उस स्त्री पर मुग्ध थे !

श्रीमती रुमेल—हाँ, जी ! और, भगवान जाने, उसे लोग सुन्दरी क्यों मानते थे ! कुछ हो, एक रात दारफ़ देरी से घर आया...

श्रीमती होल्ट—बिल्कुल अचानक !

श्रीमती रुमेल—और उसने देखा कि उसकी... ! नहीं, वह बात नहीं करनी चाहिए ।

श्रीमती होल्ट—आखिरकार, श्रीमती रुमेल, उसने किसी को पाया तो नहीं, क्योंकि दरवाज़ा अन्दर से बन्द था !

श्रीमती रुमेल—हाँ, मैं यही तो कहने वाली थी । उसने दरवाज़ा बन्द पाया । और, जरा सोचो तो, जो आदमी अन्दर था उसे खिड़की से कूदकर भागना पड़ा !

श्रीमती होल्ट—और सब से ऊपर के खण्ड की खिड़की से !

श्रीमती लिंगे—और वह श्रीमती बर्निक का भाई था ?

श्रीमती रुमेल—हाँ, वही था ।

श्रीमती लिंगे—इसी कारण वह अमेरिका भाग गया ?

श्रीमती होल्ट—हाँ, उसे भागना पड़ा । इसमें सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं है ।

श्रीमती रुमेल—क्योंकि बाद में उतनी ही बुरी एक और बात मालूम हुई । सोचो तो, वह तिजोरी पर हाथ मार रहा था... !

श्रीमती होल्ट—परन्तु, श्रीमती रुमेल, इस बारे में किसी को पक्का निश्चय नहीं था । हो सकता है, अफवाह में बिल्कुल ही सत्य न हो !

श्रीमती रुमेल—खैर, मुझे तो कहना ही होगा—' क्या बात सारे नगर में फैली नहीं थी ? क्या बर्निक की माता का उसके कारण लगभग दिवाला ही नहीं निकल गया था ? फिर भी, ईश्वर न करे, ऐसा समाचार फैलाने का काम मुझे करना हो !

श्रीमती होल्ट—किसी भी हालत में, श्रीमती दारफ़ को तो वह रुपया नहीं मिला, क्योंकि वह...

श्रीमती लिंगे—हाँ, तो दीना के माता-पिता का बाद में क्या हुआ ?

श्रीमती हमेल—दार्फ ने अपनी पत्नी और बच्ची दोनों को त्याग दिया; परन्तु वह श्रीमती धृष्टतापूर्वक एक वर्ष तक यही अड़ी रही। उसमें नाटक में अभिनय करने का साहस तो नहीं रहा, परन्तु कपड़ों की धुलाई और मिलाई करके गुजारा करती रही।

श्रीमती होल्त—और फिर उसने एक नृत्यशाला खोलने का प्रयत्न किया।

श्रीमती हमेल—स्वाभाविक था कि वह अच्छी नहीं चली। ऐसी स्त्री के हाथों में, भला, कौन से माता-पिता अपने बच्चों को सौंपने ? परन्तु कहानी बहुत लम्बी नहीं चली। श्रीमतीजी बड़ी सुकुमार थी। काम-धाम करने का अभ्यास था नहीं, आखिर फेरुडों में कोई खराबी आ गई और जीवन-लीला समाप्त हो गई।

श्रीमती लिंगे—व्या भयानक कलंक !

श्रीमती हमेल—हाँ, आप कल्पना कर सकती हैं कि बर्निक-परिवार कितनी विपम स्थिति में पड़ गया होगा ! हमेल ने एक बार ठीक ही कहा था—“बर्निक-परिवार के सौभाग्य-सूर्य के उज्ज्वल प्रकाश में यह एक काला धब्बा है।” इसलिए, इस मकान में यह बात कभी नहीं करनी चाहिए, श्रीमती लिंगे !

श्रीमती होल्त—और ईश्वर के लिए, उनकी अर्ध-भगिनी का नाम भी कभी न लीजिएगा।

श्रीमती लिंगे—ओह ! तो श्रीमती बर्निक के अर्ध-भगिनी भी है ?

श्रीमती हमेल—थी, भाग्यवश ! अब उनके बीच का सब सम्बन्ध समाप्त हो चुका है। वह भी एक असाधारण स्त्री थी। विश्वास कीजिए, वह अपने बाल छोटे-छोटे कटवाकर खराब मौसम में पुरुषों के जूते पहन कर घूमती थी !

श्रीमती होल्त—और जब उसका अर्ध-बन्धु—वह कलंकी—चला गया और सारा नगर उसकी चर्चा कर रहा था तब उसने क्या किया ? वह स्वयं उसके पास अमेरिका चली गई।

श्रीमती हमेल—हाँ, और उस अपवाद का तो खयाल कीजिए, जो जाने के पहले उमने फैला दिया था !

श्रीमती होल्ट—चुप चुप ! उसकी बात नहीं करनी चाहिए !

श्रीमती लिंगे—हाय भगवान ! उसने भी कुछ अपवाद फैलाया ?

श्रीमती हमेल—मुझे लगता है, आपको यह बात सुन ही लेनी चाहिए, श्रीमती लिंगे ! उसी समय बेती तोनेसन के साथ बर्निक की सगाई हुई थी और दोनों हाथ में हाथ डालकर समाचार देने के लिए बेती की मौमी के घर गये थे ।

श्रीमती होल्ट—उस समय बेती तोनेसन के माता-पिता इस लोक से विदा हो चुके थे ।

श्रीमती हमेल—उन्हें देखते ही लोना हेमेल तमककर उठ खड़ी हुई और उसने हमारे सुसंस्कारी और शिष्ट कार्स्टन बर्निक के कानों को ऐसा गेटा कि उन्हें चक्कर आ गया !

श्रीमती लिंगे—मैंने तो कभी...

श्रीमती होल्ट—यह बिल्कुल सच है !

श्रीमती हमेल—और फिर उसने अपना सामान बाँधा और सीधे अमेरिका की राह पकड़ी !

श्रीमती लिंगे—उसने अपने लिए उन पर आँखें लगा रखी होगी ?

श्रीमती हमेल—बेशक ! उसने सोच रखा था कि उनके पेरिस में लौटते ही उनके साथ विवाह कर लेगी ।

श्रीमती होल्ट—महत्वाकांक्षा तो देखो ! कार्स्टन बर्निक—कितने लोकप्रिय ! कितने शिष्ट ! कितने सज्जन ! स्त्रियाँ तो उन पर न्योछावर होती थी ।

श्रीमती हमेल—और इस सब के साथ कितना श्रेष्ठ युवक, श्रीमती होल्ट, कितना चरित्रवान !

श्रीमती लिंगे—परन्तु उस कुमारी हेमेल ने अमेरिका जाकर क्या किया ?

श्रीमती रुमेल—उम पर, जैसा कि मेरे पति ने एक बार कहा था, पगदा डाल दिया गया है, जिसे उठाने में संकोच होना चाहिए ।

श्रीमती लिंगे—आपका अर्थ ?

श्रीमती रुमेल—उसका अब परिवार में कोई सम्बन्ध नहीं रहा है । परन्तु इतना तो सब लोग जानते हैं कि वह रुपया कमाने के लिए मद्य-शालाओं में गाने गाती रही है ।

श्रीमती होल्त—और सार्वजनिक सभाओं में भाषण करती थी—

श्रीमती रुमेल—और उसने कोई पागलपन की पुस्तक प्रकाशित कराई है ।

श्रीमती लिंगे—अरे नहीं ।

श्रीमती रुमेल—हाँ, यह बिल्कुल सच है कि लोना हेसेल बर्निक-परिवार के सौभाग्य-सूर्य में एक कलंक है । अब आप पूरी कहानी जान गई, श्रीमती लिंगे ! आपको सावधान न करना होता तो निश्चय ही मैंने ये बातें कभी न दुहराई होती ।

श्रीमती लिंगे—ओह ! विश्वास कीजिए, मैं पूरी सावधान रहूँगी । परन्तु वह बेचारी दीना दार्फ ! मैं सचमुच उसके लिए दुःखी हूँ ।

श्रीमती रुमेल—उसके भाग्य खिल गये । जरा सोंचिए, यदि उसका पालन-पोषण वैसे माता-पिता के हाथों हुआ होता तो क्या हालत होती ! हम सब ने शक्ति भर उसकी भलाई की, और सदा सब प्रकार के अच्छे-अच्छे उपदेश दिये । संयोगवश श्रीमती बर्निक ने उसे इस मकान में बुला लिया ।

श्रीमती होल्त—परन्तु उसे सँभालना बड़ा कठिन रहा । यह स्वाभाविक ही था, क्योंकि उसके सामने सारे के सारे बुरे उदाहरण मौजूद थे । वह हमारी लड़कियों के समान नहीं है । उसके साथ बड़ी कोमलता में काम लेना पड़ता है ।

श्रीमती रुमेल—शू शू शू ! वह आ रही है । (जोर से)—हाँ, दीना सचमुच बड़ी चतुर लड़की है । ओह ! तुम आगई, दीना ? हाँ

सब चीजें रख ही रही थी ।

श्रीमती होल्ट—कितनी स्वादिष्ट मृगन्ध आ रही है तुम्हारी काफी में, दीना बेटी ! ऐसी काफी का एक अच्छा-सा प्याला...

श्रीमती बर्निक (बरामदे से पुकारती हैं)—आप सब लोग बाहर आ जाइए न ?

[मार्ता और दीना नौकरानी को काफी लाने में सहायता करती है । सब महिलाएँ बरामदे में बैठ जाती हैं और दीना के प्रति कृपा का भाव दिखलाती हुई बातें करती हैं । कुछ मिनटों में दीना वापस कमरे में आ जाती है और अपना सिलाई का काम देखने लगती है ।]

श्रीमती बर्निक (कॉफ़ी की मेज से)—दीना, तुम नहीं लोगी ?

दीना—नहीं, धन्यवाद ।

[दीना सिलाई के काम पर बैठ जाती है । श्रीमती बर्निक और रोरलुंद आपस में कुछ बातें करते हैं । क्षण भर बाद रोरलुंद कमरे में जाता है और बहाने से मेज के पास जाकर दीना से मंद स्वर में बातें करने लगता है ।]

रोरलुंद—दीना !

दीना—कहिए ।

रोरलुंद—तुम और लोगों के साथ क्यों नहीं बैठना चाहती ?

दीना—जब मैं काफी लेकर आई थी, मैंने उस नई स्त्री के चेहरे से देखा कि वे मेरे बारे में ही बातें कर रही थी ।

रोरलुंद—परन्तु तुमने यह नहीं देखा कि उसने तुम्हारे साथ कैसा आत्मीयता का व्यवहार किया था ?

दीना—यही बात है, जो मैं सहन नहीं कर सकती ।

रोरलुंद—तुम बड़ी हठी हो, दीना !

दीना—हाँ ।

रोरलुंद—परन्तु क्यों ?

दीना—क्योंकि यह मेरा स्वभाव है ।

रोरलुंद—क्या तुम अपने स्वभाव को बदलने का प्रयत्न नहीं कर सकती ?

दीना—नहीं ।

रोरलुंद—क्यों नहीं ?

दीना—(उसकी ओर देखकर)—क्योंकि आप जानते हैं, मैं एक “दीन-हीन, पतित जीवधारी” हूँ ।

रोरलुंद—शर्म की बात है, दीना !

दीना—ऐसी ही मेरी माँ भी थी ।

रोरलुंद—तुमसे ये सब बातें किमने कही ?

दीना—किसी ने नहीं । मुझ से कभी कोई नहीं कहता । क्यों नहीं कहता ? सब लोग मेरे साथ ऐसी सावधानी से व्यवहार करते हैं, मानो मेरे टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे यदि... ओह ! यह सब कछ्पा ! कितनी भीषण !

रोरलुंद—मेरी प्यारी दीना, मैं पूर्ण तरह समझ सकता हूँ कि तुम्हें यहाँ आत्मदमन करना पड़ता है । परन्तु...

दीना—हाँ, कितना अच्छा हो यदि मैं यहाँ से कहीं दूर जा सकूँ ! मैं अपना मार्ग आप निकाल सकती थी, यदि केवल इन लोगों के बीच रहती न होती—उन लोगों के बीच जो इतने... इतने...!

रोरलुंद—इतने क्या ?

दीना—इतने नियमनिष्ठ और इतने सदाचारी हैं !

रोरलुंद—ओह ! दीना ! तुम्हारा सचमुच यह मतलब नहीं है ?

दीना—आप खूब जानते हैं, किस दृष्टि से मेरा यह मतलब है । हिंदा और नेता यहाँ प्रतिदिन आती हैं, और यह इसलिए कि मेरे सामने अच्छी लड़कियों के उदाहरण पेश किये जायें । मैं कभी उनके जैसे सुन्दर व्यवहारवाली नहीं बन सकती । बनना चाहती भी नहीं । यदि मैं इस सब से कहीं दूर जा सकूँ तो कुछ योग्य बन जाऊँगी ।

रोरलुंद—परन्तु तुम तो बहुत योग्य हो, प्यारी दीना !

दीना—इससे मुझे यहाँ क्या लाभ होता है ?

रोरलुंद—तुम गंभीरता से कहती हो, दूर जाने की बात ?

दीना—आप न होने तो मैं यहाँ एक दिन भी न ठहरती ।

रोरलुंद—तुम मेरा साथ क्यों पसन्द करती हो, भला ?

दीना—क्योंकि आप मुझे इतनी बातें सिखाते हैं, जो सुन्दर है ।

रोरलुंद—सुन्दर ? मैं जो थोड़ा-बहुत सिखाता हूँ उसे तुम सुन्दर कहती हो ?

दीना—हाँ, शायद आप मुझे कुछ सिखाते नहीं, परन्तु जब मैं आपको बातें करते सुनती हूँ तो तरह-तरह के सुन्दर स्वप्न देखने लगती हूँ ।

रोरलुंद—सुन्दर से तुम्हारा क्या तात्पर्य है ?

दीना—मैंने कभी सोचा नहीं ।

रोरलुंद—तो फिर सोचो—सुन्दर वस्तु से तुम क्या समझती हो ?

दीना—सुन्दर वस्तु कोई ऐसी वस्तु है जो बहुत बड़ी और बहुत दूर होती है !

रोरलुंद—मेरी प्यारी दीना, तुम्हारे बारे में मुझे कितनी चिन्ता है !

दीना—केवल इतनी ही ?

रोरलुंद—तुम खूब जानती हो कि तुम मुझे कितनी प्यारी हो—मैं कहकर बता नहीं सकता ।

दीना—यदि मैं हिल्दा या नेता होती तो आप अपने प्रेम को दुनिया के सामने प्रकट करने में डरते नहीं ।

रोरलुंद—ओह ! दीना, तुम समझ नहीं सकती कि मुझे कितनी बातों का विचार करना पड़ता है । किसी आदमी पर अपने समाज का नैतिक स्तम्भ बनने का भार पड़ जाता है तो वह किनना भी फूँक-फूँक कर पैर रखे, कम ही होता है । काश ! लोग मेरे डरावों को सही रूप में समझ सकते ! परन्तु इस सब की विन्ता मत करो । तुम्हें अपना उत्थान करने में पूरी सहायता की जानी चाहिए, और की जायेगी। दीना, क्या मैं तय समझूँ कि जब मैं आऊँ ---जब परिस्थितियाँ मुझे अने

दें—और तुमसे कहूँ—‘यह है मेरा हाथ’, तो तुम उसे ग्रहण कर लोगी और मेरी पत्नी बन जाओगी ? वादा करती हो, दीना ?

दीना—हाँ ।

रोरलुंद—धन्यवाद ! धन्यवाद ! मैं स्वयं भी तुमसे बहुत प्रेम करता हूँ । श् श् श् !—कोई आ रहा है । दीना, मेरी ओर देखकर उन सब के पास चली जाओ !

[दीना काफी की मेज के पास चली जाती है । उसी समय रुमेल सान्दस्ताद और विगेलान्द बर्निक के कमरे से बाहर निकलते हैं । पीछे कागजों का एक पुलिन्दा लिये बर्निक भी है ।]

बर्निक—तो, वान तय हो गई ।

विगेलान्द—हाँ, ईश्वर की कृपा में ।

रुमेल—तय हो गई, मिस्टर बर्निक, मेरी बात चट्टान के समान दृढ़ है ।

बर्निक—और अब कोई डगमगाये नहीं, पीछे न हटे—चाहे-जैसा भी विरोध क्यों न हो !

रुमेल—हम साथ खड़े होंगे, या साथ गिरेगे ।

हिल्मर—(बरामदे से अन्दर आकर)—गिरेगे ? मैं पूछता हूँ, जो चीज गिरने वाली है वह क्या रेलवे की योजना नहीं है ?

बर्निक—नहीं, उलटे वह आगे बढ़ने वाली है ।

रुमेल—पूरे वेग में, मिस्टर तोनेसन !

हिल्मर—(निकट आकर)—सचमुच ?

रोरलुंद—यह कैसा ?

श्रीमती बर्निक—(बरामदे के दरवाजे से)—प्यारे कार्स्टन, क्या बात है, जो...

बर्निक—मेरी प्यारी बेती, तुम्हारी इसमें क्या रुचि हो सकती है ? (तीनों पुरुषों से)—हमें हिस्सेदार बनने वालों की सूची बना लेनी चाहिए । और जितनी जल्दी हो उतना ही अच्छा । हमारे चार नाम तो

सबसे पहले होंगे ही । समाज में हमारा जो स्थान है उसके कारण हमारा कर्तव्य हो जाता है कि हम अपने आपको जितना हो सके, आगे रखें ।

सान्दस्ताद—यह तो स्पष्ट ही है, मिस्टर बर्निक !

रुमेल—योजना पूरी होगी ही, मिस्टर बर्निक, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ—पूरी हुए बिना नहीं रहेंगी ।

बर्निक—ओह ! मुझे असफलता की जरा भी आशंका नहीं है । हम में से प्रत्येक को अपने परिचित क्षेत्रों में काम करना होगा । और यदि हम बता सकें कि योजना में सब श्रेणियों की सक्रिय दिलचस्पी पैदा हो गई है तो म्युनिसिपल कारपोरेशन को भी उसमें अपना अंश-दान करना ही होगा ।

श्रीमती बर्निक—कार्गन, तुम्हें यहाँ आकर हम सब को बनवाना चाहिए ।

बर्निक—मेरी प्यारी बेटी, उस मामले में महिलाओं का बिल्कुल सम्बन्ध नहीं है ।

हिलमर—तो, आविष्कार, आप सचमुच रेलवे-योजना का समर्थन करने वाले हैं ?

बर्निक—हाँ, स्वाभाविक बात है ।

रोरलुंद—परन्तु पिछले वर्ष, मिस्टर बर्निक...

बर्निक—पिछले वर्ष की बात भिन्न थी । उस समय प्रश्न था—तट-वर्ती रेलवे का ।

विगेलान्द—जो बिल्कुल व्यर्थ होती, मिस्टर रोरलुंद, क्योंकि हमारे वाष्प-पोत तो चलते ही हैं न ?

सान्दस्ताद—और वह बहुत महँगी भी पड़ती ...

रुमेल—हाँ, उसमें नगर के कुछ महत्वपूर्ण हित नष्ट हो जाते ।

बर्निक—मुख्य बात यह थी कि वह सारे समाज के हित की वस्तु न होती । इसीलिए मैंने उसका विरोध किया था । परिणाम यह हुआ कि तट के बदले देश के अन्दर रेल-मार्ग बनाने का निश्चय कर लिया गया ।

हिल्मर—परन्तु वह हमारे आसपास के नगरों में तो नहीं गुजरेगी ?

बर्निक—संयोगवश हमारे नगर में गुजरेगी, हिल्मर, क्योंकि हम यहाँ एक यात्रा जारी करने वाले हैं ।

हिल्मर—ओहो ! तब तो यह एक नई योजना है !

रुमेल—हाँ, है न उत्तम योजना ? कहो ।

रोरलुंद—हैं !

विगेलान्द—भगवान ने माना इस देश की प्राकृतिक रचना यात्रा-लाइन के लिए ही की है । है न ? कोई इनकार कर सकता है ?

रोरलुंद—क्या आप सचमुच ही ऐसा मानते हैं, मिस्टर विगेलान्द ?

बर्निक—हाँ, मैं कहूँगा, गत वसन्त में मैं भगवान की प्रेरणा में ही एक व्यावसायिक यात्रा पर गया था । यात्रा के दौरान मैंने एक ऐसी घाटी में गुजरा, जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था । देखते ही, मेरे मस्तिष्क में विजयी के समान यह विचार दोड़ गया कि इस स्थान से हमारे नगर को एक यात्रा रेल-मार्ग बनाया जा सकता है । मैंने एक इंजीनियर से आसपास की भूमि की जाँच कराई और मोटा हिसाब तैयार कराया, जो मेरे पास है । सो, हमारे मार्ग में कोई बाधा नहीं है ।

श्रीमती बर्निक—(अब भी दूसरी महिलाओं के साथ बरामदे पर खड़ी हुई)—परन्तु, प्यारे कास्तन, जरा सोचो तो, तुमने यह बात इतने दिनों तक हम लोगों को नहीं बताई !

बर्निक—मैं जानता था बेटी, कि तुम ठीक स्थिति समझ न पाओगी । इसके अतिरिक्त, मैंने इसकी चर्चा और भी किसी व्यक्ति से नहीं की । परन्तु आज निर्णायक क्षण आ पहुँचा है और हमें खुलमखुला और पूरी शक्ति लगाकर काम करना होगा । यदि मुझे अपना सर्वस्व भी बलिदान कर देना पड़े तो भी मैं इसे पूर्ण करने की कटिबद्ध हूँ ।

रुमेल—और हम-तुम्हारा साथ देंगे, बर्निक, तुम भरोसा कर सकते हो ।

रोरलुंद—तो क्या आप सचमुच इस योजना से इतने लाभ का आश्वासन देते हैं ?

बर्निक—हाँ, निःसंदेह ! जरा सोचो, हमारे समाज को ऊपर उठाने के लिए यह कितना अच्छा 'लीवर' होगा ! उन विशाल जगलों का विचार करो, जिनमें हम सरलता से पहुँच सकेंगे ! खनिज पदार्थों के उन समृद्ध भंडारों की कल्पना करो, जिन्हें हम खोल सकेंगे ! नदियों का खयाल करो, जिनमें एक के बाद दूसरा जल-प्रपात होगा ! खयाल करो, कितने कारखाने खोलकर देश की संपत्ति बढ़ाई जा सकेगी !

रोरलुंद—और आपको यह डर बिल्कुल नहीं है कि बाहर से बुराईयों के आने का मार्ग सुगम हो जायेगा ?

बर्निक—नहीं, इस विषय में आप बिल्कुल निश्चिन्त हो जाइए । ईश्वर को धन्यवाद है कि आज हमारी यह छोटी-सी औद्योगिक बस्ती एक ठोस नैतिक आधार पर खड़ी है । हम सब ने उसे पुष्टतर बनाने में योग दिया है । और यह हम अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार करते ही रहेंगे । आप अपना महान् कार्य हमारी शालाओं और घरों में जारी रखेंगे । इधर, हम व्यावहारिक बुद्धिवाले व्यवसायी लोग लोक-हितकारी कार्यों को अधिक से अधिक व्यापक बनाकर समाज का पोषण करते रहेंगे । और हमारी महिलाएँ—हाँ, आप लोग निकट आ जाइए, आप यह सुनना पसन्द करेंगी—हमारी महिलाएँ, हमारी पत्नियाँ और पुत्रियाँ—आप, देवियों परांपकार के काम निर्बाध रूप से करती रहेगी; और, इसके अतिरिक्त, अपने निकटतम और प्रियतम व्यक्तियों को सहायता और राहत पहुँचा सकेंगी—जैसा कि प्रिय बेती और मार्ता मेरे और ओलफ के लिए करती हैं । (आसपास देखकर)—ओलफ कहाँ है आज ?

श्रीमती बर्निक—ओह ! छुट्टी के दिनों में उसे घर में रखना तो बिल्कुल असम्भव है !

बर्निक—जरूर वह फिर समुद्र-तट पर गया होगा । देख लेना, किसी न किसी दिन उसको वहाँ जरूर कुछ हो जायेगा ।

हिलमर—छिः ! प्रकृति की शक्तियों के साथ जरा-सा खेल...!

श्रीमती रुमेल—आपका पारिवारिक प्रेम बड़ा सुन्दर है, मिस्टर बर्निक !

बर्निक—परिवार समाज की गिरी है । एक सुन्दर-सा परिवार, सम्माननीय और विश्वस्त मित्र-मंडल, छोटा-सा सुरक्षित पारिवारिक समाथ, जिस पर कोई विशोभात्मक तत्व अपनी छाया न डाल सकें ...

[दाहिनी ओर से पत्र और कागज लिये हुए क्रैप का प्रवेश]

क्रैप—विदेशी डाक, मिस्टर बर्निक, और न्यूयार्क से यह एक तार...

बर्निक—(तार लेकर) अह ! 'भारत-वाला' जहाज के मालिकों का तार !

रुमेल—डाक आ गई ? तो अब मुझे क्षमा कीजिए !

विगेलान्द—और मुझे भी !

सान्दस्ताद—नमस्ते, मिस्टर बर्निक !

बर्निक—नमस्ते, नमस्ते, मित्रो ! और याद रखिएगा—आज शाम को पाँच बजे बैठक है ।

तीनों व्यक्ति—हाँ हाँ, जरूर ! (दाहिनी ओर से बाहर निकल जाते हैं ।)

बर्निक—(तार पढ़कर)—यह बिल्कुल अमेरिकन तरीका है ! बिल्कुल भयानक !

श्रीमती बर्निक—हे भगवान ! क्या है, कास्टन ?

बर्निक—देखो क्रैप ! पढो जरा !

क्रैप—"कम से कम मरम्मत करो । 'भारतवाला' को यात्रा करने योग्य होते ही भेज दो । मौसम अच्छा है । माल थोड़ा है । चली आयेगी ।" मैं तो कहूँगा...

रोरलुंद—देखी इन शेखीबाज बड़े-बड़े समाजों की हालत ?

बर्निक—आप ठीक कहते हैं । लाभ की बात हो तो मनुष्य के प्राणों की रत्तीभर भी चिन्ता नहीं ! (क्रैप से)—क्या 'भारतवाला' चार-पाँ

दिनों में यात्रा करने योग्य हो सकती है ?

क्रैप—हाँ, यदि मिस्टर विगेलान्द 'तालतरु' जहाज पर काम बन्द करने की अनुमति दे दें ।

बर्निक—हूँ ! वे नहीं देंगे । अच्छा, जरा पत्रों को देख लो । और सुनो, तुमने ओलफ को घाट पर देखा था ?

क्रैप—नहीं, मिस्टर बर्निक ! (बर्निक के कमरे में चला जाता है)

बर्निक—(तार को फिर से देखकर)—इन भद्र लोगों को आठ मनुष्यों के प्राण खतरे में डाल देने में कोई संकोच ही नहीं !

हिल्मर—प्राकृतिक तत्वों से लोहा लेना तो नाविकों का काम ही है । सागर के तल और अपने प्राणों के बीच एक पतली-सी पटिया का होना स्नायुओं के लिए एक अच्छा, पुष्टिकर औषध होना चाहिए !

बर्निक—मैं देखता यदि इस प्रकार का आग्रह करनेवाला कोई जहाज-मालिक हमारे बीच होता ! हम लोगों में से एक भी ऐसा नहीं कर सकता... एक भी ! (ओलफ को घर के पास आता देखता है)—अह ! भगवान की कृपा ! आ गया—सकुशल और मुरझित ! (ओलफ हाथ में मछली पकड़ने का गल लिये हुए बाग से दौड़ता और बरामदे से होता अन्दर आता है ।)

ओलफ—हिल्मर मामा, मैं वहाँ गया था और जहाज देख आया ।

बर्निक—तुम फिर घाट पर गये थे ?

ओलफ—नहीं, मैं तो नाव में घूमने गया था । मगर मामा, देखो तो, एक पूरी सर्कस-कंपनी आई है ! घोड़ों और दूसरे जानवरों को लेकर ! और बहुत से यात्री भी हैं !

श्रीमती रमेल—क्या ? सचमुच हमारे यहाँ सर्कस होनवाला है ?

रोरलुंद—हमारे यहाँ ? मेरी तो कोई इच्छा नहीं है देखने की ।

श्रीमती रमेल—नहीं नहीं, मेरा मतलब हम लोगों से थोड़े ही है !

परन्तु...

दीना—मेरी तो बड़ी इच्छा है सर्कस देखने की !

ओलफ—और मेरी भी !

हिल्मर—तुम मूर्ख हो ! वह कोई देखने की वस्तु है ? कोरी कला-बाजियाँ ! अमेरिका के मूल निवासियों को अपने फुफकारते हुए घोड़ों पर बैठे और पम्पा के मैदानों पर दौड़ते हुए देखने के सामने यह क्या है ? परन्तु हमारे इन अभागे छोटे-छोटे नगरों में तो—भगवान ही मदद करे !

ओलफ—(मार्ता के कपड़ों को पकड़कर खींचता हुआ)—देखो मार्ता फूफी, वे आ रहे हैं !

श्रीमती होल्ट—हे भगवान ! वे तो सचमुच ही आ रहे हैं !

श्रीमती लिंगे—ग्रोह ! क्या भयानक लोग !

[बहुत से यात्रियों और नगरवासियों की भारी भीड़ सड़क पर आती दिखाई देती है ।]

श्रीमती रुमेल—निस्संदेह ! ढोंगियों की एक मेना है ! श्रीमती होल्ट, उस स्त्री को तो जरा देखि , जो भूरे कपड़े पहने हुए है, जिसके कंधों पर रुमाल पड़ा हुआ है !

श्रीमती होल्ट—हाँ, उसमें उसने अपनी छतरी लटका रखी है । मालूम होता है, मैनेजर की पत्नी है !

श्रीमती रुमेल—और वह देखो, वह जरूर खुद मैनेजर है ! बिल्कुल समुद्री डाकू दिखाई पड़ता है । हिलदा, उसकी ओर मत देखना !

श्रीमती होल्ट—तुम भी मत देखना, नेता !

ओलफ—मा, मैनेजर हम लोगों को नमस्ते कर रहा है !

बर्निक—क्या ?

श्रीमती बर्निक—क्या कह रहे हो, बेटे ?

श्रीमती रुमेल—हाँ हाँ ! और—हे भगवान !—वह स्त्री भी नमस्ते कर रही है !

बर्निक—उसमें जरा रुखाई ज्यादा है !

मार्ता (एक दम बोल उठती है)—ग्रह !...

श्रीमती बर्निक—क्या है, मार्ता ?

मार्ता—कुछ नहीं, कुछ नहीं,—मैंने क्षण भर के लिए सोचा...

ओलफ—(आनन्द से किलकता हुआ)—देखो, देखो, बाकी लोग भी—घोड़ों और दूसरे जानवरों को लिये हुए ! और अमेरिकन लोग भी हैं ।—‘भारत-बाला’ के सब खलासी !

[ढोल और शहनाई के साथ अमेरिकन गाना सुनाई देता है]

हिल्मर—(कान बन्द करके)—उफ ! उफ ! उफ !

रोरलुंद—मैं सोचता हूँ कि हम सब खुली जगह से जरा हट जायें । हमें इन चीजों से कोई वास्ता नहीं । चलिए, फिर अपने काम में लग जायें ।

श्रीमती बर्निक—क्या पदों भी डाल देना ज्यादा ठीक न होगा ?

रोरलुंद—हाँ हाँ, यही तो मेरा मतलब था !

[महिलाएँ फिर से अपने काम की मेज पर चली जाती हैं ।
रोरलुंद दरवाजा बन्द करके उस पर और खिड़कियों पर परदा डाल देता है । कमरे में अँधेरा हो जाता है ।]

ओलफ—(पदों से भाँकता हुआ) मा, मैनेजर की पत्नी अब फव्वारे के पास खड़ी मुँह धो रही है !

श्रीमती बर्निक—क्या ! बीच बाजार में ?

श्रीमती हमेल—और दिन-दहाड़े !

हिल्मर—भला, मैं किसी रेगिस्तान में यात्रा करता होता और किसी कुएँ के पास पहुँच जाता, तो क्या यह सोचने बैठता कि—? उफ ! वह भयानक शहनाई !

रोरलुंद—सचमुच, अब तो पुलिस को हस्तक्षेप करना ही चाहिए !

बर्निक—नहीं, नहीं—हमें विदेशियों के साथ बहुत कठोर व्यवहार नहीं करना चाहिए । बात सच है कि इन लोगों में शिष्टता की वह गहरी भावना नहीं है, जिससे हम अपने-आपको उचित मर्यादा में रखते हैं । परन्तु मान लो कि ये कुछ उपद्रव ही कर बैठते हैं, तो उससे हमें क्या ? सौभाग्य से, अव्यवस्था की यह भावना, जो सब प्रचलित रीतियों और

उचित बातों पर सीधा आक्रमण करती रहती है, हमारे समाज में बिल्कुल है ही नहीं...! यह क्या ? (लोना हेसेल दाहिनी ओर के दरवाजे से शीघ्रतापूर्वक अन्दर आती है)

महिलाएँ—(मंद, भयभीत स्वर में)—सरकस की स्त्री ! मैनेजर की पत्नी !

श्रीमती बर्निक—हे भगवान ! इसका क्या अर्थ है ?

मार्ता—(उछलकर) अहा !

लोना—कैसी हो, प्यारी बेती ? कैसी हो मार्ता ? और आप कैसे हैं, बहनोई साहब ?

श्रीमती बर्निक—(सहसा चीखकर) लोना !

बर्निक—(चौंककर और सहसा पीछे हटकर) निश्चय ! साक्षात् !

श्रीमती होल्त—ईश्वर हम पर कृपा करे !

श्रीमती रुमेल—यह तो नहीं हो सकता !

हिल्मर—उफ !

श्रीमती बर्निक—लोना...! क्या सचमुच...?

लोना—सचमुच में ? हाँ, निस्सन्देह में ही हूँ । चाहो तो मेरे गले से लिपट जाओ ।

हिल्मर—उफ ! उफ !

श्रीमती बर्निक—और वापस आई हो क्या हो कर...?

बर्निक—और सचमुच काम दिखाने का इरादा है उसमें...?

लोना—काम दिखाने का ? काम दिखाने का कहाँ ?

बर्निक—मेरा मतलब है—सरकस में ?

लोना—ह ! ह ! ह ! ह ! पागल तो नहीं हो गये, बहनोई साहब ? क्या तुम समझते हो कि मैं सर्कस कंपनी में हूँ ? नहीं, जरूर मैंने बहुत से कामों को आजमाया है, और कई तरह से मूर्ख भी बनी हूँ...

श्रीमती रुमेल—हूँ !

लोना—मगर मैंने सर्वस में सवारी का प्रयत्न कभी नहीं किया ।

बनिक—तो तुम...?

श्रीमती बनिक—धन्यवाद है, भगवान को !

लोना—नहीं, मैं सर्वस कंपनी में नहीं हूँ । हमने दूसरे सम्माननीय यात्रियों की तरह यात्रा की है—जरूर दूसरे दर्जे में, मगर उसका हमें अभ्यास हो गया है ।

श्रीमती बनिक—तुमने कहा—हम ?

बनिक—‘हम’ से तुम्हारा क्या मतलब है ?

लोना—मैं और बच्चा !

महिलाएँ—(चीखकर) बच्चा !

हित्मर—क्या ?

रोरलुंद—मुझे कहना होगा...!

श्रीमती बनिक—मगर तुम्हारा मतलब क्या है, लोना ?

लोना—मेरा मतलब जान मे है । जहाँ तक मुझे मालूम है, जान—या जैसा तुम लोग पुकारते थे, ‘जोहन’ के अतिरिक्त मेरा कोई बच्चा नहीं है ।

श्रीमती बनिक—जोहन !

श्रीमती रुमेल—(दबी आवाज में श्रीमती लिंगे से)—वही निर्लज्ज, भगोड़ा भाई !

बनिक—(संकोच के साथ)—क्या जोहन तुम्हारे साथ है ?

लोना—बेशक है ! मैं उसे छोड़कर तो नहीं आ सकती थी ! तुम ऐसे पालामारे-मे क्यों दीखते हो ? और तुम सब यहाँ अँधेरे में सफेद कपड़े सीती क्यों बैठी हो ! परिवार में कोई मृत्यु तो नहीं हो गई न ?

रोरलुंद—बहनजी, आप ‘पतित नारी सेवा मंडल’ में खड़ी हुई हैं ।

लोना—(अर्ध-स्वगत)—क्या ? ये सुन्दर, शान्त दीखनेवाली महिलाएँ पतिता...?

श्रीमती रुमेल—सचमुच...!

लोना—ओह ! मैं समझी । परन्तु ये तो श्रीमती रुमेल हैं न ? और ये श्रीमती होल्ट भी बैठी हैं ! तो, हम तीनों पिछली बार मिलने के बाद से छोटी तो नहीं हुई ! परन्तु, अब सुनो, भले लोगो ! पतिता नारियों को एक दिन ठहरने दो—उनका कुछ बिगड़नेवाला नहीं है । ऐसा आनन्दमय अवसर...

रोरलुंद—घर लौटना सदा ही आनन्दमय नहीं होता ।

लोना—सचमुच ? आपने अपनी बाइबिल में यही पढ़ा है, पादरी साहब ?

रोरलुंद—मैं पादरी नहीं हूँ ।

लोना—तो एक दिन बन जायेगे । परन्तु छिः ! आपका यह सदाचार का चोगा गँदला मालूम होता है ! इससे दुर्गन्ध आती है—कफन की जैसी ! मैं मैदानों की हवा की अभ्यस्त हूँ ।

बर्निक—(अपना माथा पोंछते हुए)—हाँ, यहाँ सचमुच हवा कुछ कुन्द है !

लोना—जरा ठहरो, हम इस कन्न से उठकर नवीन जीवन प्राप्त करेगे । (पर्वों को एक ओर खींच देती है ।) जब लड़का आये, यहाँ खूब उजाला होना चाहिए । अह ! अब तुम्हें वह लड़का दिखलाई देगा, जिसने अपने-आपको शुद्ध कर लिया है !

हिल्मर—उफ !

लोना—(बरामदे का दरवाजा और खिड़कियाँ खोलती हुई)—मेरा मतलब है, उसने होटल में स्नान कर लिया होगा, क्योंकि वह जहाज में बहुत गंदा हो गया था ।

हिल्मर—उफ ! उफ !

लोना—उफ !! अरे ! यह तो निश्चय ही... (हिल्मर की ओर संकेत करके हुए दूसरों से पूछती है) ...क्या यह अब भी 'उफ उफ !' करता आवारा धूमता फिरता है ?

हिल्मर—मैं आवारा नहीं हूँ । मेरा स्वास्थ्य मुझे यहाँ रखे हुए है ।

रोरलुंद—क्या नाम से...आप लोग सुनती हैं ? मैं नहीं समझता...

लोना—(ओलफ को देखकर)—यह तुम्हारा बेटा है, बेटी ? अपनी हथुलिया मुझे दो, बेटे ! या, तुम अपनी बूड़ी, वदसूरत मौसी से डरते हो ?

रोरलुंद—महिलाओ, मुझे नहीं लगता, आज कोई काम करने की मनःस्थिति में है । कल हम फिर मिलेंगे न ?

लोना—(जब कि महिलाएँ उठ रही हैं और एक-दूसरी से विदा ले रही हैं)—हाँ, कल मिलेंगे । मैं भी उपस्थित हो जाऊँगी ।

रोरलुंद—आप ? क्षमा कीजिएगा, कुमारी हेसेल, परन्तु आप हमारी मंडली में क्या करेंगी ?

लोना—मैं उसमें कुछ ताजा हवा लाऊँगी, पादरी साहब !

द्वितीय अंक

[दृश्य—वही कमरा । श्रीमती बर्निक अकेली बैठी सिलाई कर रही हैं । दाहिनी ओर से बर्निक का प्रवेश । वह टोप और दस्ताने पहने है और हाथ में एक छड़ी लिये है ।]

श्रीमती बर्निक—इतनी जल्दी लौट आये, कार्स्टन ?

बर्निक—हाँ, मैंने एक आदमी को मिलने का समय दिया है ।

श्रीमती बर्निक—हाँ हाँ, मैं समझती हूँ, जोहन यहाँ फिर से आ रहा है ।

बर्निक—मैंने कहा—एक आदमी । (अपना टोप रख देता है ।)
आज सब महिलाओं को क्या हो गया ?

श्रीमती बर्निक—श्रीमती स्मेल और हिल्दा को आने का समय नहीं था ।

बर्निक—ओह ! उन्होंने कोई कारण कहला भेजा है ?

श्रीमती बर्निक—हाँ, उन्हें घर में बहुत काम है ।

बर्निक—स्वाभाविक है । और दूसरी महिलाएँ भी नहीं आ रही हैं ?

श्रीमती बर्निक—नहीं, वे भी किसी न किसी कारण से रुक गई हैं ।

बर्निक—मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया होता । ओलफ कहाँ है ?

श्रीमती बर्निक—मैंने उसे दीना के साथ जरा बाहर भेज दिया है ।

बर्निक—हूँ ! वह एक ही घनचक्कर है ! देखा था कल तुमने—
जोहन को देखते ही कैसा आडम्बर रचा !

श्रीमती बर्निक—परन्तु, मेरे प्यारे कार्स्टन, तुम जानते हो, दीना को कुछ पता नहीं है—

बर्निक—फिर भी, जोहन में तो इतनी बुद्धि होनी चाहिए थी कि उसकी ओर ध्यान न देता ? मैंने विगेलान्द के चेहरे पर साफ देखा—
वह क्या सोच रहा था ।

श्रीमती बर्निक—(अपना सिलाई का सामान अपनी गोद में रखती हुई)—कास्टन, तुम अनुमान कर सकते हो, यहाँ आने में उसका क्या उद्देश्य होगा ?

बर्निक—मैं जानता हूँ । वहाँ उसके पास एक फारम है, और उससे उसको बहुत लाभ नहीं होता । कल लोना कह रही थी कि वे दूसरे दर्जे में यात्रा करने के लिए लाचार हैं...

श्रीमती बर्निक—हाँ, मुझे भय है, ऐसा ही कुछ होगा । मगर कोई सोचे, लोना का उसके साथ आना ! लोना ! उसका इतना भयानक अपमान करने के बाद !

बर्निक—ओह ! उस प्राचीन इतिहास को मत याद करो !

श्रीमती बर्निक इस समय याद कैसे न करूँ ? आखिरकार वह मेरा भाई ही तो है । फिर भी, मैं उसके बारे में चिन्तित नहीं हूँ—मुझे चिन्ता इस बात की है कि तुम्हें कितनी कद्रता सहनी होगी । कास्टन मुझे बहुत भय मालूम होता है ।

बर्निक—भय करने की क्या बात है ?

श्रीमती बर्निक—क्या यह संभव नहीं है कि तुम्हारी माता का सब धन चुराने के अपराध में यह जेल भेज दिया जाये ?

बर्निक—क्या बकवास ! सिद्ध कौन कर सकता है कि धन चोरी गया था ?

श्रीमती बर्निक—नगर भर जानता है, दुर्भाग्य से ! और तुम जानने हो—तुमने स्वयं कहा था...

बर्निक—मैंने कुछ नहीं कहा था । मगर उस मामले में कुछ नहीं जानता । सारी कहानी एक अफवाह से ज्यादा नहीं थी ।

श्रीमती बर्निक—तुम कितने विशाल-हृदय हो, कास्टन !

बर्निक—अब इन संस्मरणों को खत्म कर दो, कृपा करके ! तुम्हें पता नहीं तुम्हारे इन्हें खोदने से मुझे कितना कष्ट पहुँचता है । (इधर-उधर घूमता है, फिर हाथ से छड़ी फेंक देता है) और, यह खयाल कि

वे ठीक ऐसे समय पर यहाँ आ पहुँचे हैं, जब कि मुझे सारे नगर और पत्रों की सम्पूर्ण सद्भावना की आवश्यकता है ! हमारे संवाददाता यहाँ के बारे में दूसरे नगरों को लम्बे-लम्बे समाचार भेजेंगे । मैं उनका सत्कार करूँ तो, और तिरस्कार करूँ तो—सब पर बहस और चर्चा की जायेगी । वे उन तमाम पुरानी कहानियों को खोद निकालेंगे—जैसा कि तुम कर रही हो । हमारे जैसे समाज में (अपने दस्ताने मेज पर फँक देता हूँ) और मेरे लिए तो यहाँ एक जीव भी नहीं है, जिससे मैं उस बारे में बातें कर सकूँ और जिसके पास बल पाने के लिए जाऊँ ।

श्रीमती बर्निक—कोई भी नहीं है, कास्टन ?

बर्निक—नहीं, कौन है ? और ऐन मौके पर वे मेरी छाती पर होले भूनने आ पहुँचे हैं । निश्चय ही, वे कोई बदनामी जरूर फैलायेंगे—खास तौर से लोना ! ऐसे लोगों से किसी भी प्रकार का संबंध होना सचमुच एक विपत्ति ही है !

श्रीमती बर्निक—मैं कैसे रोक सकती हूँ भला उनका... ?

बर्निक—क्या रोक नहीं सकतीं ? उनका तुम्हारे संबंधी होना ? नहीं, यह तो बिल्कुल सच है !

श्रीमती बर्निक—ओह ! मैंने तो उन्हें यहाँ बुलाया नहीं !

बर्निक—हाँ, यही बात है । और कहती जाओ—‘मैंने उन्हें यहाँ नहीं बुलाया; मैंने उन्हें नहीं लिखा; मैं उन्हें बाल पकड़कर घसीट नहीं लाई ।’ ओह ! मुझे सारा पंवाड़ा कंठस्थ है !

श्रीमती बर्निक—तुम्हें इतना निर्मम नहीं होना चाहिए ! (रोने लगती है)

बर्निक—हाँ, अब ठीक है—रोने लगे, जिससे पड़ोसियों को बातचीत के लिए यह विषय भी मिल जाये ! इतनी मूर्ख न बनो, बेती ! खत्म करो । जाओ, बाहर बैठो । यहाँ कोई आ सकता है । मैं समझता हूँ, तुम यह नहीं चाहती कि लोग घर-मालकिन को आँखें फुलाये हुए देखें ? बड़ा सुन्दर होगा—नहीं ? यदि सब जगह फैल जाये कि.....वह लो !

जीने में पैरों की आवाज सुनाई दे रही है। (दरवाजे पर खटका) आइए अन्दर।

[श्रीमती बर्निक अपना तिलाई का सामान लेकर बाग में उतर जाती हैं। औने दाहिनी ओर से अन्दर आता है]

औने—नमस्ते, मि० बर्निक !

बर्निक—नमस्ते ! अच्छा, शायद तुमने अनुमान कर लिया होगा, मैंने तुम्हें किस लिए बुलाया है ?

औने—क्रैप ने कल कहा था कि आप काम से प्रसन्न नहीं हैं...

बर्निक—मैं कारखाने के पूरे प्रबन्ध से अप्रसन्न हूँ, औने ! काम जितनी शीघ्रता से होना चाहिए उतनी शीघ्रता से नहीं होता। 'तालतर' को कब का रवाना हो जाना चाहिए था ! मि० विगेलान्द प्रतिदिन यहाँ आकर शिकायत करते हैं। वे एक कठिन साभेदार हैं।

औने—'तालतर' परसों रवाना हो सकता है।

बर्निक—आखिर ! परन्तु अमेरिकन जहाज 'भारत-बाला' के बारे में क्या ? वह यहाँ पाँच सप्ताह से पड़ा है और.....

औने—उसका तल बिल्कुल सड़ गया है। जितनी मरम्मत की जाती है उतना ही ज्यादा खराब होता है।

बर्निक—कारण यह नहीं है। क्रैप ने मुझे सारी सचाई बता दी है। मैंने जो नई मशीनें लगाई हैं, उन पर काम करना तुम्हें नहीं आता—या, यों कहो, तुम उनसे काम लेने का प्रयत्न ही नहीं करना चाहते।

औने—मैं तो अब पचास पार कर चुका हूँ। और अपने बचपन से पुराने तरीकों से काम करता आ रहा हूँ।

बर्निक—अब हम उस तरीके से काम नहीं कर सकते। तुम्हें यह कल्पना नहीं करनी चाहिए, औने, कि यह सब अधिक लाभ कमाने के लिए है। भाग्य से मुझे उसकी आवश्यकता नहीं है। परन्तु मुझे अपने समाज का और उस कंपनी का हित देखना है, जिसका मैं मुखिया हूँ। प्रगति के कामों में मुझे आगे बढ़ना ही होगा, नहीं तो कभी कोई प्रगति होगी ही नहीं।

श्रीने—मैं भी प्रगति का स्वागत करता हूँ, मिस्टर बर्निक !

बर्निक—हाँ, अपने छोटे से सीमित समाज के लिए—मजदूरों के लिए । ओह ! मैं जानता हूँ तुम कितने व्यस्त आन्दोलनकारी हो ! तुम व्याख्यान देते हो, लोगों को उभाड़ते हो; परन्तु जब उन्नति का कोई ठोस उपाय किया जाता है—जैसा कि इस समय हमारी नई मशीनों का—तब उससे तुम कोई वास्ता नहीं रखते । तुम्हें डर लगता है ।

श्रीने—हाँ, मुझे सचमुच डर लगता है, मि० बर्निक ! मैं डरता हूँ कि इन मशीनों के कारण कितने लोगों के मुँह से रोटी के कौर छिन जायेंगे । आपको समाज के हित के लिए हमारे कर्तव्यों की बातें करना बहुत पसन्द है; परन्तु मुझे लगता है कि समाज का भी कुछ कर्तव्य है । वैज्ञानिक और पूँजीयति मजदूरों को पूरी शिक्षा दिये बिना ये नई-नई मशीनें उनके सामने क्यों पेश करते हैं ?

बर्निक—तुम पढ़ते और सोचते बहुत हो, श्रीने ! इससे तुम्हें कोई लाभ तो होता नहीं उलटे तुम अपनी स्थिति से असन्तुष्ट बने रहते हो ।

श्रीने—ब्रात यह नहीं है, मिस्टर बर्निक ! परन्तु मैं इन मशीनों के कारण एक के बाद दूसरे अच्छे मजदूर को बरखास्त होते और भूखों मरते नहीं देख सकता ।

बर्निक—हाँ ! जब छगई की कला का अन्वेषण हुआ तो बहुत से लेखनी घिसने वालों को भूखों मरना पड़ा था ।

श्रीने—यदि आप उस समय लेखनी घिसने वाले होते तो क्या आपने छगई की कला के अन्वेषण की इसी प्रकार सराहना की होती ?

बर्निक—मैंने तुम्हें बहस करने के लिए नहीं बुलाया । मैंने यह कहने के लिए बुलाया है कि 'भारत-बाला' परसों यात्रा के योग्य हो जानी चाहिए ।

श्रीने—परन्तु, मि० बर्निक...

बर्निक—परसों—सुना ? हमारे अपने जहाज के साथ ही । एक घण्टे भी देर से नहीं । जल्दी काम करने के मेरे पास प्रबल कारण हैं । तुमने

आज के समाचारपत्र देखे हैं ? तो फिर तुम जानते हो, ये अमेरिकन नाविक यहाँ फिर से क्या करामातें शुरू करने वाले हैं । इन शैतानों का भुण्ड सारे नगर को उलटाये दे रहा है । एक रात भी ऐसी नहीं बीतती जबकि शराबखानों में और सड़कों पर भगड़े न हों । दूसरी घृणित बातों का तो कहना ही बेकार है ।

अरौने—हाँ, वे जरूर खराब लोग हैं ।

बर्निक—और इस सब अधर्म का दोष किसको अपने सिर पर लादना होगा ? मुझे । हाँ, इसका भोग मुझे ही भोगना होगा । ये अखबार वाले सब तरह के छिपे हुए व्यंग्य कर रहे हैं, क्योंकि हमारी सारी शक्ति 'तालतर्' में लग रही है । मेरे जीवन का उद्देश्य अपने चारित्र्य के बल से लोगों को प्रभावित करना है, और मुझे इस प्रकार के आक्षेपों को मुँह पर चपत के समान सहना पड़ रहा है । मैं यह सहन नहीं करूँगा । मुझे इस प्रकार अपनी नेकनामी पर धब्बा लगवाने का कोई शौक नहीं है ।

अरौने—आपका नाम इतना ऊँचा है, मिस्टर बर्निक, कि आप इससे बहुत अधिक भी सहन कर सकते हैं ।

बर्निक—इस समय नहीं । इस समय मुझे अपने नागरिक बन्धुओं के सम्पूर्ण आदर और सद्भावना की आवश्यकता है । मैंने रेलवे का एक बहुत बड़ा काम हाथ में ले लिया है । मुझे जनता का जो पूर्ण विश्वास प्राप्त है उसे यदि दुष्ट लोगों ने डिगा दिया तो मैं बड़ी कठिनाइयों में पड़ जाऊँगा । इसीलिए मैं समाचारपत्रों के इन निर्लज्ज आक्षेपों को टालना चाहता हूँ । इसीलिए मैंने तुम्हें परसों तक का समय दिया है ।

अरौने—मिस्टर बर्निक, ऐसे तो आप आज शाम तक भी समय दे सकते थे !

बर्निक—तुम्हारा खयाल है कि मैं असम्भव माँग कर रहा हूँ ?

अरौने—हाँ, आज हमारे पास जो कर्मचारी हैं, उनसे ।

बर्निक—बहत अच्छा । तो हमें इसरा प्रबन्ध करना होगा ।

औने—क्या आप पुराने कारीगरों की और भी छँटना करेंगे ?

बर्निक—नहीं, मैं वह नहीं सोच रहा हूँ ।

औने—मैंने इसलिए पूछा कि यदि आपने और लोगों को निकाला तो पत्रों और जनता दोनों में आपके विरुद्ध मनोमालिन्य फैल जायेगा ।

बर्निक—बहुत सम्भव है; इसीलिए हम वैसा नहीं करेंगे । परन्तु यदि 'भारत-बाला' परसों यात्रा के लिए तैयार न हो गई तो मैं तुमको... तुमको... अवश्य निकाल दूँगा ।

औने—(चकित होकर) मुझे ! (हँसता है) । आप मसखरी कर रहे हैं, मिस्टर बर्निक !

बर्निक—तुम्हारी जगह में होता तो ऐसा विश्वास न करता ।

औने—आपका अर्थ है, आप मुझे निकालने का विचार कर सकते हैं ? मुझे, जिसके पिता और दादा ने आपके कारखाने में सारे जीवन काम किया—ठीक वैसे ही जैसे कि मैंने ?

बर्निक—इसके लिए मुझे कौन बाध्य कर रहा है ?

औने—आप ऐसा काम चाहते हैं जो असम्भव है, मि० बर्निक !

बर्निक—प्रोह ! जहाँ इच्छा है वहाँ उपाय भी है । हाँ या नहीं—मुझे आखिरी जवाब दो; या अपने आपको बरखास्त समझो ।

औने—(एक कदम उसके निकट आकर)—मिस्टर बर्निक, क्या कभी आपने महसूस किया है कि एक बूढ़े आदमी को बरखास्त करने का क्या अर्थ होता है ? आप सोचते हैं, वह दूसरी नौकरी खोज सकता है ? हाँ, वह खोज सकता है; परन्तु क्या इससे बात का फैसला हो जाता है ? आपको एक बार उस मजदूर के घर जाकर देखना चाहिए, जो बरखास्त कर दिया गया हो और शाम को अपने सब औजार लेकर लौटा हो ।

बर्निक—क्या तुम समझते हो, मैं तुम्हें खुशी से बरखास्त कर रहा हूँ ? क्या मैं सदैव तुम्हारे लिए एक अच्छा मालिक नहीं रहा ?

औने—यह तो और भी खराब है, मि० बर्निक ! केवल इसी कारण से मेरे घर के लोग आपको कोई दोष नहीं देंगे, वे मुझ से भी कुछ नहीं कहेंगे,

क्योंकि उनका साहस नहीं होगा। परन्तु जब मैं देखता नहीं हूँगा तब वे मेरी ओर देखेंगे और सोचेंगे कि मैं अवश्य इसी का पात्र रहा हूँगा। यही तो मैं सहन नहीं कर सकता। मैं जानता हूँ कि मैं एक अकिचन हूँ; परन्तु मैं सदैव अपने घर में पहले स्थान पर रहने का अभ्यस्त हूँ। मेरा नगण्य परिवार भी एक छोटा-सा समाज है, मिस्टर बर्निक ! एक छोटा-सा समाज, जिसका मैं इसलिए पालन-पोषण करने में समर्थ रहा हूँ, कि मेरी पत्नी का मुझ पर पूरा विश्वास है, मेरे बच्चों ने मुझ पर भरोसा किया है—और अब वह सब खंडित हो जायेगा !

बर्निक—फिर भी, यदि कोई दूसरा उपाय नहीं है तो छोटे को बड़े के सामने गिरना ही पड़ेगा—सर्वसामान्य हित के लिए व्यक्ति का बलिदान करना ही होगा। मैं तुम्हें कोई दूसरा उत्तर नहीं दे सकता; और यही दुनिया का तरीका है, कोई दूसरा नहीं। और, तुम एक हठी आदमी हो। तुम मेरा विरोध कर रहे हो सो इसलिए नहीं कि तुम दूसरा कुछ कर नहीं सकते; बल्कि इसलिए कि तुम हाथ के काम के सामने मशीन की श्रेष्ठता सिद्ध न होने देने पर तुले हुए हो।

और—और आपका हृदय पिघलेगा नहीं, मिस्टर बर्निक ! क्योंकि आप जानते हैं, मुझे निकालकर आप समाचारपत्रों को अपनी शुभेच्छा का प्रमाण देगे।

बर्निक—और मान लो, ऐसा ही हो तो ? मैंने तुम्हें बता दिया है कि मेरे लिए इसका क्या अर्थ है—या तो समाचारपत्रों का आक्रमण सहना या ऐसे समय पर उनकी सद्भावना अर्जित कर लेना, जब मैं एक ऐसे लक्ष्य के लिए प्रयत्नशील हूँ, जिससे सब लोगों की प्रगति होगी। तो फिर, क्या मैं जो कुछ कर रहा हूँ उससे भिन्न कुछ करना सम्भव है ? मैं बता दूँ, सारे प्रश्न का निचोड़ यह है कि तुम्हारी इच्छा के अनुसार तुम्हारे परिवार का पालन-पोषण किया जाये या सैकड़ों नये परिवारों को बसाने से रोक दिया जाये ? याद रखो, मैंने जो योजना हाथ में ली है वह यदि पूर्ण न हुई तो वे सैकड़ों नये परिवार कभी बसेंगे ही नहीं—उनके चूल्हों

में आग कभी जलेगी ही नहीं ! यही कारण है जिससे मैंने तुम्हें दो बातों में से एक पसन्द कर लेने का अवसर दिया है ।

औने—अच्छा, यदि ऐसी बात है तो मुझे और कुछ नहीं कहना ।

बर्निक—हूँ ! मेरे प्यारे औने, मुझे अत्यन्त दुःख है कि हमें विलग होना पड़ेगा ।

औने—हम विलग नहीं होंगे, मिस्टर बर्निक !

बर्निक—कैसे ?

औने—मेरे जैसे साधारण व्यक्ति के पास भी कुछ ऐसा होता है, जिसे सुरक्षित रखने के लिए वह बाध्य हो जाता है ।

बर्निक—बिल्कुल ! तो मैं मानता हूँ कि तुम वादा कर सकोगे ?

औने—‘भारत-बाला’ परसों यात्रा के लिए तैयार हो जायेगी । (सिर झुकाता है और बाहर दाहिनी ओर को निकल जाता है)

बर्निक—आखिर हठी आदमी राह पर आगया ! यह एक शुभ शकुन है । (हिल्मर बाग के दरवाजे से सिगार पीता हुआ अन्दर आता है)

हिल्मर—(सीढ़ियों से बरामदे में जाते हुए) नमस्ते, बेती ! नमस्ते, कास्तन !

श्रीमती बर्निक—नमस्ते !

हिल्मर—अह ! तुम रो रही हो ! तो, जान पड़ता है, तुम्हें भी सब मालूम हो गया !

श्रीमती बर्निक—किस बारे में सब मालूम हो गया ?

हिल्मर—कि अपवाद पूरे जोर पर है । उफ !

बर्निक—तुम्हारा मतलब ?

हिल्मर—(कमरे में आता हुआ) क्यों, यही कि अमेरिका से आये हुए हमारे दोनों मित्र दीना दार्फ के साथ सड़कों पर अपना प्रदर्शन कर रहे हैं !

श्रीमती बर्निक—(उसके पीछे अन्दर आती हुई) हिल्मर, यह संभव है ?

हिल्मर—हाँ, दुर्भाग्य से यह बिल्कुल सच है। लोना तो इतनी विचारहीन निकली कि उसने मुझे भी पुकारा, मगर मैंने अनसुनी करके टाल दिया।

बर्निक—और, इसमें तो कोई संदेह ही न होगा कि यह सब अनदेखा नहीं रहा ?

हिल्मर—ऐसी ही बात है। लोग स्तब्ध खड़े उनको देख रहे थे। समाचार दावाग्न के समान शहर भर में फैल गया—जैसे पश्चिम में घास के मैदानों में आग फैल जाती है। हर घर में लोग खिड़कियों पर पर्दों के पीछे ठसाठस खड़े 'जुलूस' के आने की राह देख रहे थे। उफ ! —ओह ! क्षमा करो बेती ! यह 'उफ !' कहने के लिए। मैं इस खुराफात से परेशान हो गया हूँ। यदि यह सब यों ही चलता रहा तो मैं यहाँ से भागने के लिए बाध्य हो जाऊँगा।

श्रीमती बर्निक—परन्तु तुम्हें उससे कहना चाहिए था...

हिल्मर—दिन-दहाड़े सड़क पर ? नहीं, क्षमा करो, मैं वैसा नहीं कर सकता था। यह खयाल ही कितना असह्य है कि उस आदमी ने शहर में निकलने का साहस किया ! अच्छा, देखेंगे, समाचारपत्र कैसे नहीं रोकते ! हाँ—क्षमा करो बेती ! परन्तु...

बर्निक—बया कहते हो, समाचारपत्र ? तुमने वैसी कोई अफवाह सुनी है क्या ?

हिल्मर—जरूर ! ऐसी बातें हवा में तो फैल ही रही हैं। कल शाम को जब मैं यहाँ से निकला तो स्वास्थ्य कुछ अच्छा नहीं था, इसलिए क्लब चला गया। मेरे जाते ही वहाँ एकाएक बातें बन्द हो गई और मैंने तुरन्त ताड़ लिया कि हमारे अमेरिकन युगल के बारे में बातें हो रही थीं। फिर वह उद्धत अखबारवाला, हैमर, आया और उसने मेरे धनी भाई की वापसी पर मुझे जोरों से बधाई दी।

बर्निक—धनी ?

हिल्मर—ये शब्द उसके हैं, स्वाभाविक था कि मैंने उसे ऐसे ढंग

मे ऊपर से नीचे तक देखा, जिसके वह योग्य था । और उसे मालूम हो गया कि मैं जोहन तोनेसन के धनी होने के बारे में कुछ नहीं जानता । उसने कहा—‘यह तो सचमुच बड़ी बात है । अमेरिका में साधारणतः लोगों का काम तब चलता है जब उनके पास शुरू में कुछ पैसा होता है; और मेरा विश्वास है, आपका भाई खाली हाथ वहाँ नहीं गया था ।’

बर्निक—हूँ ! मुझ पर उपकार होगा, यदि अब तुम....

श्रीमती बर्निक—(संतप्त होकर)—देख लो, कार्स्टन !

हिल्मर—मेरी तो रात उनके कारण खराब हो गई । और वह सड़कों पर ऐसे घूम रहा है मानो कुछ बात ही न हो । सदा के लिए गायब क्यों नहीं हो जाता ? यह तो सचमुच असह्य है कि कुछ लोग बड़ी मुश्किल से मारे जा सकते हैं !

श्रीमती बर्निक—मेरे प्यारे हिल्मर, कह क्या रहे हो ?

हिल्मर—ओह ! कुछ नहीं ! मगर, यह मनुष्य रेलवे दुर्घटनाओं से बाल-बाल बच जाता है, केलिफोर्निया के आदिवासियों से लड़ता है और गरीर में खरोंच तक नहीं आती ! उफ ! वह देखो, यहीं दोनों आगये ।

बर्निक—(सड़क पर देखकर) ओलफ भी उनके साथ है !

हिल्मर—और नहीं तो क्या ! वे हर आदमी को याद दिलाना चाहते हैं कि वे नगर के सर्वश्रेष्ठ परिवार के सदस्य हैं । देखो, देखो ! दवा वाले की दूकान से आवागदौ की कैसी भीड़ निकल आई—उन्हें देखने के लिए और आवाजकशी करने के लिए ! मुझ में तो यह सब सहने की शक्ति नहीं है ! ऐसी अवस्था में कैसे कोई आदर्शों का झंडा फहराता रख सकता है ? मैं तो....

बर्निक—वे यहाँ आ रहे हैं । सुनो, बेती ! मेरी खास इच्छा है कि तुम अधिक से अधिक मैत्रीभाव से उनका सत्कार करो ।

श्रीमती बर्निक—ऐसा, कार्स्टन ?

बर्निक—निश्चय ! और तुम भी हिल्मर ! आशा है, वे यहाँ बहुत दिनों तक नहीं ठहरेंगे । और जब हम अकेले हों तब अतीत की कोई

चर्चा न हो ! हमें किसी प्रकार भी उनकी भावनाओं को चोट नहीं पहुँचानी चाहिए ।

श्रीमती बर्निक—तुम कितने विशाल-हृदय हो, कास्टन !

बर्निक—ओह ! ऐसा मत कहो ।

श्रीमती बर्निक—गरन्तु मैं तुम्हें धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकती । मेरी जल्दबाजी के लिए मुझे क्षमा करो । मुझे विश्वास है कि तुम्हें...

बर्निक—कृपा करके इस बारे में बात मत करो ।

हिल्मर—उफ !

[जोहन, तोनेसन और दीना का बाग में होते हुए प्रवेश । पीछे-पीछे लोना और ओलफ हैं ।]

लोना—नमस्ते, प्रियजनो !

जोहन—हम लोग अपने पुराने नगर को देखने के लिए निकले थे, कास्टन !

बर्निक—हाँ, मैंने सुना । बहुत बदल गया है, न ?

लोना—हर जगह मिस्टर बर्निक के महान काम ! हम उस क्रीड़ांगण में गये थे जो तुमने नगर को प्रदान किया है ।

बर्निक—गई थीं ?

लोना—द्वार पर लिखा है—‘कास्टन बर्निक का उपहार !’ ‘तुम सारे नगर के कर्ताधर्ता मालूम होते हो ।’

जोहन—तुम्हारे पास उत्तम जहाज भी हैं । मेरे पुराने सहपाठी—‘तालतर’ के कप्तान—मे भी भेंट हो गई ।

लोना—और तुमने एक नया शाला-भवन भी बनवाया है । सुनती हैं—गैस और पानी की सुविधा के लिए भी तुम ही नगर के धन्यवाद के पात्र हो ।

बर्निक—आदमी को अपने समाज की भलाई करनी ही चाहिए ।

लोना—यह श्रेष्ठ भावना है, मेरे बहनोई ! इस पर भी, जब सुनती हूँ कि लोग तुम्हारी कितनी सराहना करते हैं ! तो आनन्द होता ही है ।

आशा है, मैं व्यर्थाभिमानी नहीं हूँ, परन्तु मैं एक-दो लोगों को, जो मुझे मिले, यह स्मरण कराये बिना नहीं रह सकी कि हम तुम्हारे संबंधी हैं।

हिल्मर—उफ़ !

लोना—इस बात पर तुम 'उफ़' कहते हो ?

हिल्मर—नहीं, मैंने कहा—'क्या नाम से—'

लोना—ओह ! बेचारे ! तुम्हें वही पसन्द हो तो कह सकते हो ।
परन्तु, आज आप सब घर के ही लोग यहाँ हैं ?

बर्निक—हाँ, आज और कोई नहीं हैं ।

लोना—प्ररे हाँ ! बाजार में आपके 'सदाचार मंडल' के कुछ सदस्यों में भेंट हुई थी । उन्होंने दिखाया कि वे बड़े व्यस्त हैं । तुम्हारे और मेरे बीच अब तक अच्छी तरह बातचीत का मौका ही नहीं आया । कल तो तुम्हारे तीनों अग्रणी मौजूद थे और वह पादरी भी था ।

हिल्मर—स्कूल मास्टर ।

लोना—मैं उसे पादरी कहती हूँ । परन्तु बताओ तो सही, मेरे इन पन्द्रह वर्षों के काम के बारे में तुम्हारा क्या खयाल है ? यह एक उत्तम व्यक्ति नहीं बन गया ? अब वह सिड़ी, जो घर से भाग गया था, पहचान में आता है ?

हिल्मर—हूँ !

जोहन—लोना, अब तुम मेरे बारे में बहुत शेखी न बघारो !

लोना—मैं कह सकती हूँ, मुझे इसके बारे में बहुत अभिमान है । ईश्वर जानता है, लगभग इतना ही मैंने अपने जीवन में किया है, परन्तु इससे मुझे जीवित रहने का एक अधिकार-सा प्राप्त हो गया । जब मैं सोचती हूँ, जोहन, हमने कैसे वहाँ जीवन आरम्भ किया था—पास में एक कौड़ी भी नहीं, सिर्फ अपनी चार मुट्ठियों के बल पर, तब...

हिल्मर—'हाथों के बल पर'....

लोना—मैं कहती हूँ—मुट्ठियों के; और वे मिट्टी से सनी हुई मुट्ठियाँ थीं ।

हिल्मर—उफ़ !

लोना—और खाली भी ।

हिल्मर—खाली ? मैं तो कहूँगा...

लोना—क्या कहोगे ?

बर्निक—क्या नाम से...

हिल्मर—मैं कहूँगा... उफ़ ! (बाग की ओर बाहर चला जाता है ।)

लोना—इस आदमी को क्या हो गया है ?

बर्निक—ओह ! उसका खयाल मत करो ! उसका दिमाग इस समय परेशान है । बाग नहीं देखोगी ? तुम अब तक वहाँ नहीं गई और मेरे पास अभी एक घण्टे का समय है ।

लोना—खुशी से । मेरे विचार अनेक-अनेक बार इस बाग में तुम्हारे साथ रहे हैं ।

श्रीमती बर्निक—तुम देखोगी, हमने वहाँ भी बहुत परिवर्तन कर लिया है ।

[बर्निक, श्रीमती बर्निक और लोना बाग में चले जाते हैं । बाद के दृश्य में वे वहाँ बार-बार दिखलाई पड़ते हैं]

ओलफ—(बरामदे के दरवाजे पर आकर) हिल्मर मामा, मालूम है जोहन मामा ने मुझ से क्या पूछा था ? उन्होंने पूछा था—मेरे साथ अमेरिका चलोगे ?

हिल्मर—तू ? तू बुद्ध, जो अभी तक अपनी मा के कपड़ों के बन्दी से बँधा हुआ है... !

ओलफ—मगर, अब मैं वैसा थोड़े ही रहूँगा । आप देखिएगा, जब मैं बड़ा हो जाऊँगा...

हिल्मर—ओह ! पोंगा ! चरित्र-बल की ओर तो तेरा कोई झुकाव है ही नहीं जो जरूरी होता है...

[बाग में चले जाते हैं । इसी बीच दीना आकर अपना टोप उतारे

दाहिनी ओर के दरवाजे पर खड़ी अपने कपड़ों से धूल झाड़ रही है]

जोहन—(दीना से) धूमने से तुम्हारे शरीर में काफी गर्मी आगई है ।

दीना—हाँ, बड़ा अच्छा रहा ! पहले ऐसा आनन्दकारी भ्रमण कभी नहीं किया था ।

जोहन—तुम सुबह भ्रमण के लिए नहीं जातीं ?

दीना—हाँ हाँ, जाती हूँ; परन्तु केवल ओलफ के साथ ।

जोहन—बाग में जाना अच्छा न होगा । यहाँ ठहरोगी ?

दीना—मुझे यहाँ अच्छा लग रहा है ।

जोहन—मुझे भी । तो क्या हम रोज सुबह इसी प्रकार साथ-साथ धूमने जाया करेंगे ? तय रहा ?

दीना—नहीं, मिस्टर तोनेसन ! ऐसा मत कीजिये ।

जोहन—क्या न करूँ ? तुमने ही तो वादा किया था ?

दीना—हाँ, परन्तु फिर से सोचने पर—आपको मेरे साथ नहीं जाना चाहिए !

जोहन—मगर क्यों ?

दीना—आप बाहरी आदमी हैं, आप समझ नहीं सकते; परन्तु मुझे वहना पड़ेगा...

जोहन—क्या ?

दीना—नहीं, वह बात न करना ही अच्छा है ।

जोहन—ओह ! मगर तुम्हें कहना तो चाहिए । तुम मुझ से कोई भी बात कर सकती हो ।

दीना—तो मैं बताऊँ, मैं यहाँ की दूसरी लड़कियों के समान नहीं हूँ । मेरे बारे में कुछ—कुछ न कुछ—बात है । इसीलिए आपको ऐसा नहीं करना चाहिए ।

जोहन—परन्तु मेरी समझ में तो कुछ नहीं आता ! तुमने कोई गलती

दीना—नहीं, मैं नहीं, मगर—। नहीं, मैं इस बारे में अधिक बातें नहीं करूँगी । आपको दूसरों से सुनने को मिलेगा ही ।

जोहन—हूँ !

दीना—मगर एक दूसरी बात है, जो मैं आपसे पूछना चाहती हूँ ।

जोहन—क्या ?

दीना—अमेरिका में जीवन-निर्वाह का प्रबन्ध कर लेना सरल है ?

जोहन—नहीं, हमेशा सरल नहीं होता । बहुधा पहले-पहल बहुत कड़ा परिश्रम करना पड़ता है ।

दीना—सो तो मैं करने को बिल्कुल तैयार हूँ ।

जोहन—तुम ?

दीना—मैं काम कर सकती हूँ । स्वस्थ और सबल हूँ । मार्ता फ़फी ने मुझे बहुत कुछ सिखा भी दिया है ।

जोहन—अरे छोड़ो भी उसे—हमारे साथ क्यों न चलो ?

दीना—अब आप मेरा मजाक उड़ाने लगे । यही बात आपने ओलफ़ से भी कही थी । परन्तु, मैं जानना चाहती हूँ कि क्या वहाँ के लोग इतने बहुत—इतने बहुत सदाचारी हैं ?

जोहन—सदाचारी ?

दीना—हाँ, मेरा मतलब यह है कि क्या वे यहाँ के लोगों के समान ही नियमनिष्ठ और सुवर्तनी हैं ?

जोहन—किसी भी हालत में, वे इतने बुरे तो नहीं हैं, जैसा कि यहाँ के लोग बताते हैं । इस बारे में तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है ।

दीना—आप समझे नहीं । मैं तो यह सुनना चाहती हूँ कि वे इतने नियमनिष्ठ और इतने सदाचारी नहीं हैं ।

जोहन—नहीं हैं ? तो तुम क्या चाहती हो ? वे कैसे हों ?

दीना—मैं चाहती हूँ, वे स्वाभाविक तरीके के हों !

जोहन—मेरा विश्वास है, ऐसे ही तो हैं वे ।

दीना—क्योंकि, वैसी हालत में यदि मैं वहाँ जाऊँ तो शांतिपूर्वक रह सकूंगी ।

जोहन—तुम निश्चय ही शान्तिपूर्वक रह सकोगी । इसीलिए तो तुम्हें हमारे साथ जाना चाहिए ।

दीना—नहीं, मैं आपके साथ जाना नहीं चाहती, मुझे अकेले जाना होगा । ओह ! मैं अपने जीवन को बना सकूंगी । मैं रहूंगी...

बर्निक—(बाग की सीढ़ियों के पास लोना और अपनी पत्नी से बात करते हुए)—ठहरो, ठहरो ! मैं ले आऊंगा, बेती ! तुम ठंड खा जाओगी । (कमरे में आता है और अपनी पत्नी का शाल खोजता है)

श्रीमती बर्निक—(वहीं से)—तुम भी आओ, जोहन ! हम लोग गुहा देखने जा रहे हैं ।

बर्निक—नहीं, मैं चाहता हूँ जोहन यहाँ ठहरें । देखो, दीना, तुम बेती का शाल ले लो और उनके साथ जाओ । जोहन यहाँ मेरे साथ ठहरेंगे । मैं सुनना चाहता हूँ, वे वहाँ कैसे रहते हैं ।

श्रीमती बर्निक—अच्छा, अच्छा ! तो, तुम हमारे पीछे आ जाना । तुम्हें मालूम तो है, हम कहाँ होंगी ।

[श्रीमती बर्निक, लोना और दीना बाग से बाहर जाती हैं । बर्निक बोड़ी देर उनकी ओर देखता रहता है फिर उठकर बाईं ओर का दरवाजा बन्द कर देता है । बाद में वह जोहन के पास जाता है, उसके दोनों हाथ पकड़कर प्रेम के साथ दबाता है]

बर्निक—जोहन, अब हम अकेले हैं । अब मैं तुम्हें धन्यवाद दूँ ।

जोहन—ओह ! इसमें क्या रखा है !

बर्निक—अपने घर और उससे मिलने वाले सारे सुख, अपनी नागरिक प्रतिष्ठा—सब के लिए मैं तुम्हारा ही ऋणी हूँ ।

जोहन—मुझे इस सब से हर्ष है, कार्स्टन ! आखिरकार, उस पागलपन की कहानी से कुछ लाभ तो हुआ !

बर्निक—(फिर से उसके हाथ पकड़कर) परन्तु, फिर भी, तुम

धन्यवाद के अधिकारी तो हो ही । दस हजार में से एक ने भी वह सब न किया होता, जो तुमने मेरे लिए किया ।

जोहन—क्या व्यर्थ बात करते हो ? क्या हम दोनों ही उस समय तरुण और विचारहीन नहीं थे ? हम में से एक को तो दोष अपने सिर लेना ही था ।

बर्निक—परन्तु, लेना उसे चाहिए था, जिसने अपराध किया था ।

जोहन—अब रहने दो । उस समय निरपराध ही उसके लिए अधिक उपयुक्त था । याद करो, मेरे आगे-पीछे कोई नहीं था; मैं अनाथ था । दफ्तर की गुलामी से छूटने का मुझे एक अच्छा अवसर मिल गया । दूसरी ओर, तुम्हारी वृद्धा माता जीवित थीं । फिर तुमने गुप्त रूप से बेती के साथ सगाई कर ली थी और वह तुम्हारे ऊपर न्योछावर थी । यदि बातें उसके कानों तक पहुँचतीं तो तुम दोनों का क्या हुआ होता ?

बर्निक—यह सब सच है, फिर भी...

जोहन—और क्या केवल बेती के लिए ही तुमने श्रीमती दार्फ के साथ अपनी मित्रता का बलिदान नहीं किया था ? और सच बात तो यह है कि उस शाम को सारी बात समाप्त करने के लिए ही तुम उसके पास गये थे ।

बर्निक—हाँ, वह अभागी शाम, जब शराब के नशे में चूर वह जानवर घर आ गया था ! हाँ, जोहन, वह सब बेती के लिए ही था; फिर भी तुमने जो अपवाद अपने विरुद्ध फैलने दिया और यहाँ से चले भी गये, वह बहुत बड़ी बात थी ।

जोहन—अपने आदर्शवाद को अब छुट्टी दे दो, कास्तन ! हमने मान लिया था कि वैसा किया जाये ! तुम्हारी रक्षा आवश्यक थी, और तुम मेरे मित्र थे । मैं बताऊँ, उस मैत्री का मुझे असाधारण अभिमान था । मैं अपने दफ्तर की गुलामी में ऐसा गड़ा हुआ था मानो कीचड़ में लकड़ी गड़ी हुई हो—कोई उत्थान नहीं, कोई प्रगति नहीं ! दूसरी ओर, तुम

विदेशों की शानदार यात्रा करके आये थे, बड़े आदमी थे, लंदन गये थे, पेरिस गये थे; और यद्यपि मैं तुम से चार वर्ष छोटा था, तुमने मुझे अपना मित्र बनाया। सच है, इसका कारण यह था कि तुम बेती से विवाह करना चाहते थे—और यह मैं अब समझा हूँ—परन्तु मुझे तुम पर अभिमान अवश्य था। किसे अभिमान न होता? किसने खुशी-खुशी अपने आपको तुम पर न्योछावर न कर दिया होता—विशेषतः तब, जब कि उसका अर्थ नगर में महीने भर चर्चाएँ होना मात्र था, और जब कि मुझे विस्तृत विशाल जगत में निकल जाने का अवसर मिला?

बर्निक—अह ! मेरे प्यारे जोहन ! वह कहानी लोग अब तक नहीं भूले !

जोहन—नहीं ? फिर भी, एक बार अपने फार्म पर लौट जाने के बाद, मुझे उससे क्या वास्ता ?

बर्निक—तो तुम वापस जाना चाहते हो ?

जोहन—निस्सन्देह ।

बर्निक—परन्तु तुरन्त नो नहीं ?

जोहन—जितनी जल्दी संभव हो। मैं तो केवल लोना को प्रसन्न करने के लिए उसके साथ यहाँ आया हूँ।

बर्निक—सचमुच ? यह कैसा ?

जोहन—देखो, लोना अब तरुणी तो रही नहीं, और हाल में वह घर की याद से व्याकुल होने लगी थी। परन्तु कभी स्वीकार नहीं करती थी (हँसता है)। मेरे जैसे भगोड़े को अकेला छोड़ने की जोखिम कैसे उठाती, जब कि वह जानती थी कि उन्नीस वर्ष पूरे होने के पूर्व ही मैं...

बर्निक—फिर ?

जोहन—तो कास्टर्न, अब मैं एक बात स्वीकार करता हूँ, जिसकी सचमुच मुझे लज्जा है।

बर्निक—तुमने सच बात उसको बताई तो नहीं है ?

जोहन—बताई है। यह अनुचित था, मगर मैं और कुछ कर नह

सका । तुम कल्पना नहीं कर सकते कि लोना मेरे लिए क्या रही है ! तुम उसको कभी बर्दाश्त नहीं कर सके, परन्तु मेरे लिए वह मा के समान रही है । पहले वर्ष हमारी हालत बहुत खराब थी, परन्तु उसने कितना काम किया ! और जब मैं लम्बे समय तक बीमार रहा और न कमा सकता था, न उसे रोक सकता था, तब उसने शराबखानों में गीत गाने शुरू किये; व्याख्यान दिये, जिन पर लोग हँसते थे; और बाद में एक पुस्तक लिखी, जिस पर वह अब तक रोती भी रही है और हँसती भी रही है । यह सब उसने केवल इसलिए किया कि मेरे प्राण बच जायें । क्या मैं चुपचाप देखता रह सकता था जब शीतकाल में वह, जिसने मेरे लिए मेहनत और मजदूरी की, उद्विग्नता से मुझनि लगी ? नहीं, कास्टन, यह संभव नहीं था । इसलिए मैंने कहा—“तुम घर हो आओ, लोना । मेरे लिए डर मत करो । मैं वैसा भगोड़ा नहीं हूँ, जैसा तुम समझती हो ।” और इस सब का परिणाम यह हुआ कि उसे सारी बात बतानी पड़ी ।

बर्निक—उसे कैसा लगा ?

जोहन—उसने सोचा—और यह ठीक ही था—कि मैं निरपराध हूँ, इसलिए मुझे उसके साथ वहाँ आने से रोकनेवाली कोई बात है ही नहीं । परन्तु, तुम निश्चित रहो । लोना कोई बात प्रकट नहीं करेगी, और मैं अपना मुँह पहले के समान ही बन्द रखूँगा ।

बर्निक—हाँ, हाँ ! मुझे भरोसा है ।

जोहन—मेरा वादा है, और अब हम उस पुरानी कहानी की याद नहीं करेंगे । भाग्य से वही एक पागलपन की कृति थी, जिसमें हम में से कोई भी अपराधी नहीं था । मैं जो थोड़े दिन यहाँ रहूँगा, उनमें अधिक-से-अधिक आनन्द मनाना चाहता हूँ । तुम समझ नहीं सकते—आज सुबह हमारा भ्रमण कितना आनन्दजनक रहा ! कौन विश्वास कर सकता है कि वह छोटी-सी शैतान बच्ची जो यहाँ दौड़-घूँप मचाया करती थी, और रंगमंच पर देव-दूतों का अभिनय करती थी...! मगर, उसके माता पिता का बाद में क्या हुआ ?

बनिक—ओह ! मेरे मित्र, मैं अधिक कुछ नहीं बता सकता । तुम्हें यहाँ से जाने के बाद ही अपने दो पत्रों में सब-कुछ लिख दिया था । तुम्हें दोनों पत्र मिल गये थे ?

जोहन—हाँ, हाँ ! वे दोनों मेरे पास हैं । सो, उस शराबी ने उसे त्याग दिया ?

बनिक—और बाद में खुद शराब पी-पी कर मर गया ।

जोहन—और वह भी बाद में शीघ्र ही मर गई ?

बनिक—वह अभिमानिनी थी ! उसने कोई भेद नहीं खोला और कुछ लिया भी नहीं ।

जोहन—कुछ भी हो, तुमने दीना को अपने घर में रखकर उचित ही किया ।

बनिक—मेरा भी खयाल यही है । सचमुच तो मार्ता ने यह किया है ।

जोहन—मार्ता ने किया ? और आज वह है कहाँ ?

बनिक—वह ? ओह ! जब उसका स्कूल नहीं होता तो उसके रोगी होते हैं सुश्रूषा के लिए ।

जोहन—सो उसने उसमें दिलचस्पी ली !

बनिक—हाँ, तुम जानते हो, मार्ता को सदा से पढ़ाने का शौक रहा है । सो, उसने बोर्ड-स्कूल में नौकरी कर ली । कैसा हास्यास्पद !

जोहन—कल वह बहुत थकी हुई दीखती थी । मुझे भय है, उसका स्वास्थ्य इस कार्य के योग्य नहीं है ।

बनिक—जहाँ तक उसके स्वास्थ्य का सम्बन्ध है, वह काफी अच्छा है । परन्तु उसका काम करना मेरे लिए बड़ा रुचिकर है । उससे मालूम पड़ता है मानो मैं, उसका भाई, उसका पालन करने के लिए तैयार नहीं हूँ ।

जोहन—उसका पालन ? मेरा तो खयाल था कि उसके पास उसका खुद का काफी धन है ?

बनिक—एक पैसा भी नहीं । तुम्हें याद होगा, जब तुम गये थे, हमारी मा की हालत कितनी खराब थी ? बहुत दिनों तक वे मेरी मदद

से काम चलाती रहीं, मगर मैं हमेशा के लिए तो यह हालत सहन नहीं कर सकता था। मैंने उन्हें बाध्य किया कि वे मुझे अपने कारबार में शामिल कर लें; परन्तु फिर भी हालत में सुधार नहीं हुआ। अन्त में मैंने अपने ही हाथों में सारा कारोबार ले लिया और जब हिसाब बनाया गया तो देखा कि मा के हिस्से में एक पैसा भी नहीं आता था। उसके बाद शीघ्र ही मा का देहान्त हो गया। मार्ता बिल्कुल निराधार रह गई।

जोहन—बेचारी मार्ता !

बर्निक—बेचारी ? क्यों ? तुम यह तो नहीं कह सकते कि मैं उसकी जरूरतें पूरी नहीं करता ? नहीं, मैं कहूँगा, मैं एक अच्छा भाई हूँ। वह रहती यहाँ है, उसका वेतन उसके कपड़ों वगैरह के लिए जरूरत से ज्यादा है, फिर उसे और अभाव ही क्या हो सकता है ?

जोहन—हूँ ! अमेरिका में हम ऐसा नहीं मानते।

बर्निक—नहीं, समाज की वैसी क्रांति की अवस्था में, ऐसा नहीं माना जा सकता। परन्तु हमारे छोटे से समाज में—जिसमें ईश्वर की कृपा से भ्रष्टता अब तक जड़ नहीं जमा सकी—महिलाएँ मध्यम स्थिति में रहने में सन्तुष्ट हैं। इसके अतिरिक्त, यह तो मार्ता का अपना ही दोष है। मेरा मतलब है, अगर वह चाहती तो उसकी व्यवस्था बहुत पहले ही कर दी गई होती।

जोहन—तुम्हारा अर्थ है, उसका विवाह कर दिया गया होता ?

बर्निक—हाँ, और बहुत अच्छी जगह। जरा सोचो—वह गरीब है, अब युवती भी नहीं रही, बिल्कुल नगण्य व्यक्ति है, फिर भी उसके सामने कई अच्छे-अच्छे प्रस्ताव आये !

जोहन—वह नगण्य है ?

बर्निक—ओह ! मैं उसे दोष नहीं दे रहा हूँ। मैं उसे बुरी हालत में देखना थोड़े ही पसन्द करूँगा। मैं कह सकता हूँ कि हमारे जैसे बड़े घर में उसकी जैसी स्थिर-बुद्धि लड़की का होना, जिस पर किसी

भी अवस्था में भरोसा किया जा सके, हमेशा ही बहुत अच्छा है।

जोहन—हाँ, परन्तु वह क्या महसूस करती है ?

बर्निक—वह ? क्यों ? उसके पास तो बहुत सी चीजें हैं, जिनमें वह अपना मन लगा सकती है। बेती, ओलफ, मैं—सभी उसके हैं। लोगों को सबसे पहले अपने बारे में नहीं सोचना चाहिए। स्त्रियों को तो और भी अधिक। हम सब के लिए छोटा-बड़ा, कोई-न-कोई समाज है ही, जिसकी हमें सेवा करनी चाहिए। यही मेरा सिद्धान्त है। (क्रैप की ओर, जो दाहिनी ओर के दरवाजे पर खड़ा है, संकेत करता है)। देखो, इसका एक उदाहरण यह मौजूद है। तुम समझते हो, आज जिन कामों में मैं डूबा हुआ हूँ, वे सब मेरे अपने ही हैं ? बिल्कुल नहीं ! (उत्सुकता के साथ क्रैप से) कहो ?

क्रैप—(दबे हुए स्वर में, उसे कागजों का एक पुर्लिया दिखाता हुआ)—बिक्री के करारनामे पूर्ण हो गये हैं—लेकर आया हूँ।

बर्निक—खूब ! बहुत खूब ! अच्छा, जोहन ! मुझे अभी क्षमा करो। (दबी आवाज में, उसका हाथ पकड़कर) धन्यवाद ! जोहन, धन्यवाद ! और विश्वास रखो कि जो कुछ भी मैं तुम्हारे लिए कर सकता हूँ, करूँगा—तुम तो समझते ही हो। आओ, क्रैप ! (अपने कमरे में चला जाता है।)

जोहन—(कुछ क्षण तक उनके पीछे देखता रहता है) हूँ ! (बाग में जाने के लिए घूमता है। उसी समय मार्ता अपने हाथ में एक छोटी-सी टोकरी लेकर दाहिनी ओर से आती है) मार्ता !

मार्ता—ओह ! जोहन, तुम हो ?

जोहन—इतनी जल्दी बाहर निकल गई ?

मार्ता—हाँ, जरा ठहरो। दूसरे लोए आ ही रहे हैं। (बाईं ओर के दरवाजे की ओर सरक जाती है)

जोहन—मार्ता, तुम सदा ऐसी जल्दी में रहती हो ?

मार्ता—मैं ?

जोहन—कल ऐसा मालूम हुआ था कि तुम मुझे टाल रही हो । मैं तुम से एक बात भी नहीं कर सका—हम दोनों खेल के पुराने साथी !

मार्ता—अह, जोहन ! वह तो बहुत वर्ष पहले की बात है ।

जोहन—अभी पन्द्रह वर्ष ही तो हुए हैं—ज्यादा नहीं, कम नहीं । तुम समझती हो, मैं इतना बदल गया हूँ ?

मार्ता—तुम ? हाँ हाँ, तुम भी बदल गये हो, यद्यपि...

जोहन—तुम्हारा मतलब क्या है ?

मार्ता—अरे, कुछ नहीं ।

जोहन—मुझे फिर से देखकर तुम बहुत प्रसन्न तो मालूम नहीं होतीं ।

मार्ता—मैंने बहुत प्रतीक्षा की, जोहन !—बहुत लम्बी !

जोहन—प्रतीक्षा की ? मेरे आने की ?

मार्ता—हाँ ।

जोहन—और तुमने यह क्यों सोचा कि मैं वापस आऊँगा ?

मार्ता—तुमने जो गलती की थी, उसका प्रायश्चित्त करने के लिए ।

जोहन—मैंने ?

मार्ता—क्या तुम भूल गये कि तुम्हारे ही कारण एक स्त्री अभाव और लज्जा से ग्रस्त होकर मर गई ? क्या तुम भूल गये हो कि तुम्हारे ही कारण एक नवयुवती के जीवन के सबसे अच्छे वर्ष कटु हो गये ?

जोहन—और तुम ऐसी बातें मुझ से कह सकती हो ? मार्ता, क्या तुम्हारे भाई ने कभी नहीं.....?

मार्ता—‘कभी नहीं’ क्या ?

जोहन—क्या उन्होंने कभी नहीं—ओह ! बेशक, मेरा मतलब है—क्या उन्होंने मेरे पक्ष में कभी एक शब्द भी नहीं कहा ?

मार्ता—अह, जोहन तुम कास्टर्न के उच्च आदर्शों से परिचित हो...

जोहन—हूँ ! निस्संदेह ! मैं अपने पुराने मित्र कास्टर्न के उच्च आदर्शों को जानता हूँ । परन्तु सचमुच यह तो.....। खैर ! मैं उनसे अभी-अभी बातें कर रहा था । मुझे बहुत बदले हुए दिखाई देते हैं ।

मार्ता—यह कैसे कहते हो ? मुझे निश्चय है, कार्स्टन सदैव एक अंश पुरुष रहे हैं ।

जोहन—मेरा यह मतलब नहीं था । मगर, कोई बात नहीं—सो, अब मैं समझा, तुमने मुझे किस रूप में देखा है । तुम प्रायश्चित्तकारी के रूप में मेरे लौटने की राह देख रही थीं ।

मार्ता—मैं बताती हूँ, मैंने तुम्हें किस रूप में देखा है । (बाग की ओर संकेत करती है) तुम उस लड़की को देखते हो, जो घास पर ओलफ के साथ खेल रही है ? वह दीना है । तुम्हें उस असम्बद्ध पत्र की याद है, जो तुमने यहाँ से जाने पर मुझे लिखा था ? तुमने मुझे लिखा था कि मैं तुम पर विश्वास रखूँ । मैंने तुम पर विश्वास रखा है, जोहन ! तुम्हारे जाने के बाद जो तमाम भयानक अफवाहें तुम्हारे बारे में उड़ी थीं, उनका कारण यह होगा कि तुम गलत मार्ग पर चले गये—विचारहीनता के कारण....

जोहन—तुम्हारा मतलब ?

मार्ता—ओह ! तुम मेरा मतलब खूब समझते हो । अब एक शब्द भी अधिक नहीं । परन्तु, निस्सन्देह, तुम्हें जाना पड़ा और नये सिरे से एक नया जीवन आरम्भ करना पड़ा । तुम्हारा यहाँ का कर्तव्य, जिसकी तुमने कभी परवाह नहीं की, या जिसे तुम कभी अपने ऊपर उठाने में समर्थ नहीं हुए, मैंने उठा लिया । मैं उस अत्यन्त अत्याचार-पीड़ित बालिका की मा बन गई । मैंने उसका अपनी शक्ति भर भली भाँति पालन-पोषण किया है ।

जोहन—और उसके लिए अपना सम्पूर्ण जीवन नष्ट कर दिया है !

मार्ता—वह नष्ट नहीं हुआ, परन्तु तुम विलम्ब से आये, जोहन !

जोहन—मार्ता, क्या ही अच्छा होता कि मैं तुम से सब बातें कह सकता । खैर, कुछ भी हो, अपनी निष्ठाभंग मंत्री के लिए मेरा धन्यवाद स्वीकार करो ।

मार्ता—(मुस्कराहट के साथ) अब हम जान गए हैं, जोहन !

श् श् श् श् ! कोई आ रहा है । मैं विदा लेती हूँ—अब रुक नहीं सकती, जोहन ! (बाईं ओर के दूर के दरवाजे से निकल जाती है ।
लोना श्रीमती बर्निक के साथ बाग से आती है)

श्रीमती बर्निक—परन्तु, भगवान् भला करे लोना ! तुम सोच क्या रही हो ?

लोना—मुझे अपने-आप पर छोड़ दो ! मैं कहती हूँ, मुझे उनके साथ बात करनी ही होगी ।

श्रीमती बर्निक—परन्तु यह एक घोरतम अपवाद होगा । ओह !

जोहन—अब तक यहाँ ?

लोना—जरा बाहर निकलो, लड़के ! यहाँ घर के भीतर मत बैठे रहो । बाग में चले जाओ और दीना के साथ गपशप करो....

जोहन—मैं यह सोच ही रहा था ।

श्रीमती बर्निक—परन्तु.....

लोना—सुनो जोहन ! तुमने दीना को अच्छी तरह देखा है ?

जोहन—सोचता तो ऐसा ही हूँ ।

लोना—अच्छा, उसको खास उद्देश्य से देखो, मेरे बच्चे ! वह तुम्हारे योग्य हो सकती है ।

श्रीमती बर्निक—परन्तु लोना !....

जोहन—मेरे योग्य ?

लोना—हाँ, देखने के योग्य, मेरा मतलब है । अच्छा, जाओ !

जोहन—ओह ! इसके लिए मुझ पर जोर डालने की जरूरत है ?
(नीचे बाग में चला जाता है)

श्रीमती बर्निक—लोना, तुम मुझे दिङ्मूढ़ बना रही हो । शायद इस मामले में गम्भीरता से बात नहीं कर रही हो ?

लोना—कर रही हूँ । वह मृदुल, स्वस्थ और सच्ची नहीं है ? ठीक जोहन की पत्नी होने योग्य है । ठीक वैसी ही है, जैसी उसे चाहिए । बूढ़ी अर्ध-भगिनी के स्थान पर यह एक अच्छा परिवर्तन होगा !

श्रीमती बर्निक—दीना ? दीना दार्फ ? परन्तु सोचो तो....

लोना—मैं सब से पहले लड़के के सुख की बात सोचती हूँ, क्योंकि उसे तो मुझे सहायता करनी ही है। उसे इस प्रकार की बातों की बहुत कल्पना नहीं है। उसने कभी स्त्रियों या लड़कियों की ओर ध्यान दिया ही नहीं।

श्रीमती बर्निक—उसने ? जोहन ने ? और हमारे पास जो दुःख-दायी प्रमाण मौजूद हैं ?

लोना—ओह ! आग लगे उन सब मूर्खतापूर्ण कहानियों में ! कास्टन कहाँ हैं ? मुझे उनसे बात करनी है।

श्रीमती बर्निक—लोना, मैं कहती हूँ, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए।

लोना—मैं करूँगी। यदि लड़का उसे पसन्द करता है और लड़की भी उसे पसन्द कर लेती है, तो यह विवाह होकर रहेगा। कास्टन इतने चतुर हैं; उन्हें इसका कोई तरीका निकालना ही होगा।

श्रीमती बर्निक—और क्या तुम समझती हो कि यह अमेरिकन अशिष्टता यहाँ चलने दी जायेगी ?

लोना—छिः ! बेती !

श्रीमती बर्निक—क्या तुम समझती हो कास्टन का जैसा आदमी अपने सदाचार सम्बन्धी कड़े विचारों के होते हुए.....

लोना—ऊँह ! वे इतने भयानक सदाचारी नहीं हैं !

श्रीमती बर्निक—तुम क्या धृष्टता कर रही हो !

लोना—मैं यह कहने की धृष्टता कर रही हूँ कि कास्टन दूसरे लोगों से अधिक सदाचारी नहीं हैं।

श्रीमती बर्निक—तो तुम अब भी उनसे इतना गहरा द्वेष करती हो ! परन्तु यदि तुम अपने द्वेष को कभी भूलीं नहीं तो यहाँ क्या करने के लिए आई हो ? मैं समझ नहीं सकती कि वर्षों पूर्व तुमने उनका जो निर्लज्ज अपमान किया था उसके बाद तुम उनके चेहरे की ओर आँखें कैसे उठा सकती हो ?

लोना—हाँ, बेती, उस समय मैं अपने-आपको बुरी तरह भूल गई थी।

श्रीमती बर्निक—और, सोचो, कितने विशाल हृदय से उन्होंने तुम्हें क्षमा कर दिया है—उन्होंने, जिनसे कभी कोई गलती नहीं हुई ? यह उनका दोष नहीं था कि तुमने अपने अन्दर आशाएँ बाँध लीं। परन्तु तब से तुम सदा मुझ से भी द्वेष करती रही हो। (रोने लगती है) तुमने हमेशा मेरे सौभाग्य पर ईर्ष्या की है। और अब तुम मेरे सिर पर यह सब लादने आई हो—सारे नगर को बताने कि किस प्रकार के परिवार में मैंने कार्स्टन को घसीट लिया है ! हाँ, यह सब मुझ पर ही पड़ता है। और यही तुम चाहती हो ! आह ! तुम्हारा यह काम घृणास्पद है ! (रोती हुई बाईं ओर के दरवाजे से बाहर चली जाती है)

लोना—(उसके पीछे देखती हुई) बेचारी बेती !

[बर्निक अपने कमरे से अन्दर आता है। वह क्रैप से कुछ कहने के लिए दरवाजे पर रुक जाता है।]

बर्निक—हाँ, बहुत अच्छा, क्रैप ! उत्तम ! गरीबों के भोजन-फंड में बीस पाउण्ड भेज दो ! (फिरता है) लोना ! (आगे आता है) क्या तुम अकेली हो ? क्या बेती अन्दर नहीं आ रही है ?

लोना—नहीं। बुलाऊँ ?

बर्निक—नहीं, नहीं, बिल्कुल नहीं। ओह ! लोना, तुम नहीं जानती; तुम से क्षमा-याचना करने—खुली बातें करने के लिए मैं कितना बेचैन रहा हूँ।

लोना—देखो कार्स्टन ! हमें भावुक नहीं बनना चाहिए। यह हमारे अनुरूप नहीं है।

बर्निक—तुम्हें मेरी बात सुननी ही होगी, लोना ! तुम्हें दीना की मा से सम्बन्ध रखनेवाली घटना का सारा हाल मालूम हो गया है, और मैं खूब जानता हूँ कि प्रत्यक्ष रूप में सारी बातें मेरे कितने प्रतिकूल हैं। परन्तु मैं तुमसे शपथपूर्वक कहता हूँ कि वह एक क्षणिक वासना-मात्र थी। तुम पर एक समय मेरा वास्तविक, सच्चा और निष्कपट प्रेम था।

लोना—तुम क्या समझते हो ? मैं क्यों घर आई हूँ ?

बर्निक—तुम्हारे मन में कुछ भी हो, मेरी विनय है कि तुम तब तक कुछ मत करना, जब तक कि मैं अपने अपराध का विमोचन न कर लूँ ! मैं यह कर सकता हूँ, लोना ! किसी भी हालत में, अपने आपको क्षमा तो कर ही सकता हूँ ।

लोना—तुम डर गये हो । कहते हो, एक समय मुझ से प्रेम करते थे । हाँ, यह बात तुमने बहुधा मुझे पत्रों में लिखी है । और शायद यह तब तक सही भी थी, जब तक तुम खुले, विस्तीर्ण जगत में थे, जिसने तुम्हें स्वतन्त्रता तथा उदारतापूर्वक विचार करने का साहस प्रदान किया था । शायद तुमने मुझ में घर के अन्य अधिकतर लोगों से अधिक चारित्र्य, इच्छा-शक्ति और स्वतन्त्रता देखी थी । और फिर हमने उसे अपने बीच में गुप्त रखा । कोई व्यक्ति तुम्हारी ओछी रुचि का मजाक नहीं उड़ा सकता था ।

बर्निक—लोना, तुम कैसे सोच सकती हो...?

लोना—परन्तु जब तुम वापस आए—जब तुमने वे व्यंग्य सुने जो चारों ओर से मुझ पर बरसाये जा रहे थे—जब तुमने देखा, कैसे लोग उन बातों पर हँसते थे, जिन्हें वे मेरी मूर्खताएँ कहते थे...

बर्निक—उस समय तुम्हें लोगों के मतामत की कोई परवाह नहीं थी ।

लोना—हाँ, मुख्यतः उन घाघरा और पतलून पहनने वाले पाखण्डियों को चिढ़ाने के लिए, जो शहर के हर चौराहे पर मिल जाया करते थे । और फिर, जब तुम उस मोहिनी युवा नटी से मिले...

बर्निक—वह एक बन्द दुर्ग पर लड़कपन का आक्रमण था—अधिक कुछ नहीं । मैं विश्वास दिलाता हूँ कि जो गप्पें फैली थीं उनका दसवाँ हिस्सा भी सच नहीं था ।

लोना—हो सकता है । परन्तु जब बेती घर आई—एक रूपवती, युवा बालिका, प्रत्येक व्यक्ति द्वारा प्रशंसित—और जब यह प्रकट हुआ कि मौसी का सारा धन उसे मिलेगा, मुझे कुछ नहीं...

बर्निक—बात यही है, लोना ! और अब तुम द्राविड़ी प्राणायाम के बिना पूरा सत्य जान सकोगी । उस समय मैं बेती से प्रेम नहीं करता था; मैंने तुम्हारे साथ की सगाई किसी नये प्रेम के कारण नहीं तोड़ी, केवल धन के कारण तोड़ी थी । मुझे धन की आवश्यकता थी; मुझे उसका प्रबन्ध करना ही था ।

लोना—और तुम यह सब मुझे बताने की धृष्टता कर रहे हो ?

बर्निक—हाँ, जरा सुनो, लोना !.....

लोना—और इस पर भी तुमने मुझे लिखा कि तुम बेती के प्रति अदम्य प्रेम के वशीभूत हो गये थे ! तुमने मेरी उदारता की याचना की ! मुझ से बेती के लिए अपना मुँह बन्द रखने की मनुहार की !

बर्निक—मुझे करना पड़ा ।

लोना—मैं ईश्वर की शपथ लेकर कहती हूँ, अब मुझे कोई पछतावा नहीं कि मैंने उस समय अपने आपको भुला दिया था !

बर्निक—मैं तुम्हें उस समय की अपनी सच्ची हालत बता दूँ । तुम्हें याद होगा, मेरी मा अपना ध्यापार खुद चलाती थीं; परन्तु उनमें व्यापार की योग्यता बिल्कुल नहीं थी । मुझे हड़बड़ी के साथ पेरिस से बुलाया गया था । समय बड़ा नाजुक था और उन्हें विश्वास था कि मैं भार सँभाल लूँगा । मैंने आकर क्या देखा ? मैंने देखा—तुम इसे बिल्कुल गुप्त रखना—सारा घर नाश के कगारे पर—यह पुराना, सम्भ्रान्त घर, जिसने हमारी तीन पीढ़ियाँ देखी थीं—नाश के कगारे पर ! मैं उनका पुत्र था—एकमात्र पुत्र—उसे बचाने का कोई उपाय खोजने के अलावा क्या करता ?

लोना—इसलिए, तुमने एक स्त्री का बलिदान चढ़ाकर बर्निक-गृह की रक्षा की !

बर्निक—तुम खूब जानती हो, बेती मुझ से प्रेम करती थी ।

लोना—परन्तु मैं ? मेरा क्या ?

बर्निक—विश्वास करो, लोना ! तू मेरे साथ कभी सुखी नहीं रहतीं ।

लोना—क्या तुमने मेरे सुख का खयाल करके मेरा बलिदान किया था ?

बर्निक—क्या तुम मानती हो कि मैंने जो-कुछ किया वह स्वार्थ की भावना से किया ? यदि मैं उस समय अकेला होता तो मैंने प्रसन्नतायुक्त साहस के साथ सारा कारोबार नये सिरे से आरम्भ कर दिया होता । परन्तु, तुम नहीं समझ सकतीं, एक व्यापारी का जीवन, जिस पर भारी जिम्मेदारियाँ हों, पैतृक व्यापार के साथ कैसा बँधा हुआ रहता है । क्या तुम महसूस कर सकती हो कि सैकड़ों और हजारों की उन्नति या विनाश उस पर ही अवलंबित रहता है ? क्या तुम यह विचार नहीं कर सकतीं कि यदि बर्निक-कुटुम्ब नष्ट हो जाता तो इस सारे समाज पर जिसमें मैं और तुम दोनों पैदा हुए हैं, उसका अत्यन्त भयानक परिणाम होता ?

लोना—तो क्या समाज के लिए ही तुमने इन पन्द्रह वर्षों तक अपनी प्रतिष्ठा एक असत्य पर सुरक्षित रखी है ?

बर्निक—असत्य पर ?

लोना—तुम्हारे और बेती के विवाह की तह में जो ये सब बातें हैं उनके बारे में वह क्या जानती है ?

बर्निक—तुम समझती हो कि निष्प्रयोजन ही सत्य का उद्घाटन कर के मैं उसकी भावनाओं को आघात पहुँचाता ?

लोना—निष्प्रयोजन ही ? खैर, तुम व्यापारी हो । तुम समझते होगे कि स-प्रयोजन क्या है । परन्तु, सुनो कार्स्टन ! अब मैं स्पष्ट सत्य कहने वाली हूँ । बताओ, क्या तुम सचमुच सुखी हो ?

बर्निक—परिवार में ?

लोना—हाँ ।

बर्निक—मैं जरूर सुखी हूँ, लोना ! तुम्हारा आत्म-त्याग व्यर्थ नहीं गया । मैं ईमानदारी से कह सकता हूँ कि मैं प्रतिवर्ष अधिकाधिक सुखी होता गया हूँ । बेती अच्छी स्त्री है और सब कुछ मानने को तत्पर भी ।

और यदि मैं तुम्हें बताऊँ कि किस प्रकार गत अनेक वर्षों में उसने मेरे अनुकूल अपने आचरण को ढालना सीखा है...

लोना—हूँ !

बर्निक—पहले-पहल प्रेम के बारे में उसकी अपरिमित रोमांटिक धारणाएँ थी; वह इस विचार को ग्रहण ही नहीं कर सकती थी कि धीरे-धीरे यह सब शान्त मैत्री भाव में परिणत हो जाता है।

लोना—परन्तु अब बिल्कुल मान गई है ?

बर्निक—पूर्णतः। तुम कल्पना कर सकती हो, मेरे साथ के दैनिक जीवन का उसके चरित्र के विकास में थोड़ा योग नहीं रहा। यदि किसी को अपने समाज में श्रेष्ठ जीवन व्यतीत करना हो तो उसे अपने अभिमान और अपनी महत्वाकांक्षाओं को कम करना सीखना ही होगा। और बेती ने धीरे-धीरे यह समझ लिया है। इसीलिए अब हमारा घर दूसरे नागरिक बन्धुओं के लिए आदर्श बन गया है।

लोना—परन्तु तुम्हारे नागरिक बन्धु असत्य के विषय में कुछ नहीं जानते ?

बर्निक—असत्य ?

लोना—हाँ, वह असत्य, जिसे तुमने इन पन्द्रह वर्षों तक सुरक्षित रखा है।

बर्निक—तुम उसे असत्य....?

लोना—मैं उसे असत्य कहती हूँ—तिहरा असत्य। सबसे पहले मेरे प्रति असत्य, फिर बेती के प्रति असत्य और फिर जोहन के प्रति असत्य !

बर्निक—बेती ने मुझ से कभी पूछा ही नहीं।

लोना—क्योंकि उसे कुछ मालूम ही नहीं हुआ।

बर्निक—और उसका खयाल करके तुम माँग करोगी नहीं।

लोना—नहीं; मैं लोगों का सब तिरस्कार सह लूंगी। मेरे कन्धे बहुत मजबूत हैं।

बर्निक—और जोहन भी माँग नहीं करेगा—उसने मुझे वचन दिया है ।

लोना—और तुम खुद, कास्टन ! तुम अपने अन्तरात्मा में इस असत्य से मुक्त हो जाने की कोई व्याकुलता महसूस नहीं करते ?

बर्निक—तुम समझती हो, मैं अपनी ही इच्छा से अपने पारिवारिक सुख और लौकिक प्रतिष्ठा को बलि कर दूँगा ?

लोना—तुम जो प्रतिष्ठा भोग रहे हो उसका तुम्हें क्या अधिकार है ?

बर्निक—पिछले पन्द्रह वर्षों के दौरान मैं प्रतिदिन मैंने उसका थोड़ा-बहुत अधिकार उपार्जित किया है—अपने आचरण से और अपने काम में सफलता द्वारा ।

लोना—सच है, तुमने अपने काम द्वारा अपने और दूसरों के लिए बहुत-कुछ उपार्जित किया है । तुम नगर के सब से धनी और सर्वाधिक प्रभावशाली पुरुष हो । कोई भी व्यक्ति तुम्हारी इच्छा का आदर किये बिना नहीं रह सकता, क्योंकि तुम निष्कलंक माने जाते हो । तुम्हारा घर और तुम्हारा चरित्र आदर्श माना जाता है । परन्तु यह सब प्रताप और उसके साथ स्वयं तुम भी—विश्वासघात के दलदल पर खड़े हो । यदि तुमने समय रहते अपने आपको नहीं सँभाला तो एक क्षण ऐसा आ सकता है जब कि केवल एक शब्द बोल दिया जाए तो तुम और तुम्हारा यह सारा प्रताप उस दलदल में समा जायेगा ।

बर्निक—लोना ! यहाँ आने में तुम्हारा उद्देश्य क्या है ?

लोना—मैं चाहती हूँ कि तुम अपने पैरों-तले की भूमि दृढ़ बना लो ।

बर्निक—अर्थात् बदला ! तुम अपना बदला लेना चाहती हो ! मुझे शक था ही ! परन्तु तुम्हें सफलता नहीं मिलेगी । यहाँ केवल एक व्यक्ति है जो अधिकार के साथ बोल सकता है, और वह मुँह बन्द रखेगा ।

लोना—तुम्हारा मतलब है—जोहन ?

बर्निक—हाँ, जोहन ! यदि किसी दूसरे ने मुझ पर दोषारोपण किया तो मैं सब बातों से मुकर जाऊँगा । यदि किसी ने मुझे कुचलने

का प्रयत्न किया तो मैं अपने प्राणों की रक्षा के लिए लोहा लूंगा। तुम कभी इसमें सफल नहीं होगी। जो मुझे धराशायी कर सकता है, वह बोलेगा नहीं—और यहाँ से जारहा है।

[रुमेल और विगेलान्द दाहिनी ओर से आते हैं]

रुमेल—नमस्ते, बर्निक ! हमारे साथ व्यापारिक संध में चलो। रेलवे-योजना के बारे में वहाँ बैठक है।

बर्निक—मैं नहीं जा सकता। इस समय बिल्कुल असम्भव है।

विगेलान्द—तुम्हें तो आना ही होगा, मिस्टर बर्निक !

रुमेल—बर्निक, तुम्हें चलना ही चाहिए। हमारा विरोध करने की तैयारी की जा रही है। हैमर आदि, जिनका तटवर्ती रेल-मार्ग पर विश्वास है, घोषणा कर रहे हैं कि नये प्रस्ताव के पीछे व्यक्तिगत स्वार्थ है।

बर्निक—तो, उन्हें समझा दो....

विगेलान्द—हमारे समझाने का कोई असर नहीं होता।

रुमेल—नहीं नहीं, तुमको खुद आना होगा। तुम पर इस प्रकार छल-कपट का सन्देह किसी को न होगा।

लोना—कदापि नहीं !!

बर्निक—मैं कहता हूँ, आ नहीं सकूँगा। मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। अच्छा ठहरो। मुझे अपनी ताकत बटोरने दो। (रोरलुंद दाहिनी ओर से अन्दर आता है।)

रोरलुंद—क्षमा कीजिये, मिस्टर बर्निक, मगर मैं बेहद व्यग्र हूँ।

बर्निक—क्यों, क्या बात है ?

रोरलुंद—मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूँ। क्या वह युवा लड़की, जो आपके आश्रय में रहती है, आपकी सम्मति से एक ऐसे आदमी के साथ सड़कों पर घूमती-फिरती है, जो...

लोना—किस आदमी के साथ, पादरी

रोरलुंद—क्या इसमें आपकी सम्मति है, मिस्टर बर्निक ?

बर्निक—(अपने टोप और दस्तानों को खोजता हुआ) मुझे इस बारे में कुछ नहीं मालूम । क्षमा करो, मैं बहुत शीघ्रता में हूँ । मुझे अभी व्यापारिक संघ में पहुँचना है ।

[हिल्मर बाग से आता है और बाईं ओर के दूर के दरवाजे के पास चला जाता है]

हिल्मर—बेती, बेती ! मुझे तुमसे बातें करनी हैं ।

श्रीमती बर्निक—(दरवाजे पर आकर) क्या बात है ?

हिल्मर—तुम्हें बाग में जाना चाहिए । वहाँ एक आदमी और दीना दार्फ के बीच प्रेम-लीला हो रही है । उसे रोकना चाहिए । उनकी बातें सुन-सुन कर तो मैं परेशान हो गया हूँ ।

लोना—सचमुच ! और वह 'एक आदमी' क्या कह रहा है ?

हिल्मर—ओह ! केवल यह कि दीना उसके साथ अमेरिका जाये !
उफ़ !

रोरलुंद—यह हो सकता है ?

श्रीमती बर्निक—तुम कहते क्या हो ?

लोना—परन्तु यह तो उत्तम होगा ?

बर्निक—असम्भव ! तुमने ठीक नहीं सुना होगा ।

हिल्मर—आप खुद उससे पूछ लीजिए । यह आ रही है जोड़ी । सिर्फ मुझे इससे अलग रहने दीजिए, कृपा करके !

बर्निक—(रुमेल और विगेलान्द से) तुम चलो; मैं तुम्हारे पीछे आया ही—क्षण भर में ।

[रुमेल और विगेलान्द दाहिनी ओर से बाहर चले जाते हैं । जोहन और दीना बाग से ऊपर आते हैं ।]

जोहन—हुर्रे ! लोना, यह जा रही है, हमारे साथ !!

श्रीमती बर्निक—परन्तु जोहन, क्या तुम्हारी बुद्धि मारी गई है ?

रोरलुंद—क्या मैं अपने कानों पर विश्वास कर सकता हूँ ? ऐसा दारुण अपवाद ! बहकाने की किस कला से तुमने.....?

जोहन—बोलिए, बोलिए महाशय ! क्या कह रहे हैं आप ?

रोरलुंद—दीना, मुझे उत्तर दो ! क्या तुम यह पूर्ण स्वेच्छा से कर रही हो ?

दीना—मुझे यहाँ से निकलना ही है ।

रोरलुंद—परन्तु उसके साथ ! उसके साथ !

दीना—आप यहाँ और कोई बता सकते हैं, जो मुझे अपने साथ रखने का साहस करे ?

रोरलुंद—तो बहुत अच्छा ! तुम्हें बताता हूँ कि यह कौन है !

जोहन—मुँह बन्द ही रखना !

बर्निक—अब एक शब्द भी नहीं !

रोरलुंद—यदि मैं न बोलूँ तो उस समाज की सेवा के लिए अयोग्य ठहरूँगा, जिसके सदाचार का मैं संरक्षक बनाया गया हूँ । और इस बालिका के प्रति भी अन्याय होगा, क्योंकि इसके पालन-पोषण में मेरा बहुत बड़ा हाथ है । और फिर, यह मेरी.....

जोहन—सावधान हो जाओ कि तुम क्या कर रहे हो !

रोरलुंद—उसको जानता ही होगा ! दीना, तुम्हारी माँ के दुःख और लज्जा का कारण यही आदमी था ।

बर्निक—मिस्टर रोरलुंद.....?

दीना—ये ? (जोहन से) क्या यह सच है ?

जोहन—कार्स्टन, तुम उत्तर दो !

बर्निक—एक शब्द भी और नहीं—इस बारे में आज हमें एक शब्द भी और नहीं बोलना चाहिए !

दीना—तो फिर यह सच है ?

रोरलुंद—हाँ, सच है । इसके अलावा, यह आदमी, जिस पर तुम विश्वास कर रही थीं, घर से खाली हाथ नहीं भाग गया था । बर्निक की वृद्धा माता की तिजोरी की कहानी इससे पूछो । मिस्टर बर्निक क्वाही दे सकते हैं ।

लोना—भूठा !

बर्निक—अह !

श्रीमती बर्निक—मेरे भगवान् ! हे भगवान् !

जोहन—(रोरलुंद की ओर हाथ उठाकर झपटता हुआ) और तुम्हारा साहस कि.....

लोना—(उसे रोककर) मारो मत, जोहन !

रोरलुंद—ठीक है, मारो । परन्तु सत्य तो प्रकट होगा ही । और यह सत्य है । मिस्टर बर्निक ने स्वीकार किया है और सारा नगर जानता है । दीना, अब तुम इसे जान गई ।

[क्षण भर की शान्ति]

जोहन—(धीरे से बर्निक का हाथ पकड़ता हुआ) कास्टन, कास्टन ! तुमने क्या किया है ?

श्रीमती बर्निक—(रोती हुई) ओह ! कास्टन, मैंने ही तुम्हें इस सब कीचड़ में घसीटा !

सान्दस्ताद—(जल्दी-जल्दी दाहिनी ओर के दरवाजे पर आकर और दरवाजे की मूठ पर हाथ रखे-रखे ही पुकारता हुआ) तुम्हें अब आना ही चाहिए, मि० बर्निक ! सारी रेलवे-योजना का भाग्य इस समय कच्चे धागे से झूल रहा है ।

बर्निक—(अन्यमनस्कता से) क्या बात है ? मुझे क्या करना....

लोना—(सचाई के साथ और जोर देकर) तुम्हें जाना है और समाज का स्तम्भ बनना है, बहनोई जी !

सान्दस्ताद—हाँ, आइए ! हमें आपकी नैतिक श्रेष्ठता के पूरे बल की आवश्यकता है ।

जोहन—(एक ओर, बर्निक से) कास्टन, हम कल इस विषय में बातें करेंगे ।

[बाग के दरवाजे से बाहर निकल जाता है । बर्निक आधा चकराया हुआ, सान्दस्ताद के साथ दाहिनी ओर से जाता है ।]

तृतीय अंक

[दृश्य—वही कमरा । बर्निक क्रोध में भरा हुआ, हाथ में एक बंत लिये बाईं ओर के दरवाले कमरे से आता है । उसने दरवाजा आधा खुला छोड़ दिया है ।]

बर्निक—(अपनी पत्नी से, जो दूसरे कमरे में है) सुन लिया ! आज मैंने उसे अच्छी तरह ठीक कर दिया है । अब वह इस मार को नहीं भूलेगा—क्या कहती हो ?—तुम तो बिल्कुल अविवेकी मा हो । तुम उसको बहाने बना-बना कर बचाती रहती हो और उसकी सब दुष्टता को प्रोत्साहन देती हो । दुष्टता नहीं—? तो यह क्या है ? रात को घर से खिसक जाना, मछली मारने की नावों पर घूमना, दिन निकलने तक बाहर रहना और जब मैं इतनी चिन्ताओं और परेशानियों से लदा हुआ हूँ, मुझे इतना डरा देना ! और फिर, उस बीते भर के छोकरे में इतना साहस कि घर से भाग जाने की धमकी देता है ! जरा कोशिश तो करे !—तुम ? नहीं, तुम्हें कोई ज्यादा चिन्ता नहीं कि उसे क्या होता है । मैं सचमुच मानता हूँ कि यदि वह कहीं जाकर खत्म हो गया—! अच्छा ? सचमुच ? मुझे बहुत काम है, जो दुनिया में अपने पीछे छोड़ जाना है । मुझे पुत्रहीन हो जाने का कोई शौक नहीं है । अब आपत्तियाँ मत करो, बेती ! जैसा मैं कहता हूँ वैसा होगा—वह घर में ही रहेगा । (सुनता है) चुप ! किसी को कुछ दिखाई न दे !

[दाहिनी ओर से क्रैप का प्रवेश]

क्रैप—एक मिनट मुझे दे सकते हैं, मिस्टर बर्निक ?

बर्निक—(बैत फेंककर) जरूर, जरूर ! तूम कारखाने से आ रहे हो ?

क्रैप—हाँ, क्या नाम से—!

बर्निक—तो, मैं आशा करूँ कि 'ताल तर' में कोई गड़बड़ी नहीं है ?

क्रैप—'तालतर' कल यात्रा कर सकता है। परन्तु....

बर्निक—तो फिर 'भारत बाला' में गड़बड़ी है ? मुझे शक था ही कि वह हठी आदमी....

क्रैप—'भारत बाला' भी कल यात्रा कर सकती है ; परन्तु मुझे निश्चय है कि वह बहुत दूर तक नहीं पहुँचेगी।

बर्निक—तुम्हारा मतलब ?

क्रैप—क्षमा कीजियेगा महोदय ! वह दरवाजा खुला हुआ है, और मुझे लगता है, दूसरे कमरे में कोई है।

बर्निक—(दरवाजा बन्द करता हुआ) अच्छा, तो अब बन्द हो गया। मगर ऐसी क्या बात है, जो दूसरों को नहीं सुननी चाहिए ?

क्रैप—केवल यह कि मेरा विश्वास है, अरिने 'भारत बाला' को समुद्र के तल में बैठाना चाहता है—और उसमें जितने माता के लाल यात्रा कर रहे हों उन सब के साथ !

बर्निक—हे भगवान् ! बात क्या है जो तुम ऐसा सोचते हो, क्रैप ?

क्रैप—मैं केवल एक ही कारण बता सकता हूँ, महोदय !

बर्निक—अच्छा, कहो—जितने थोड़े में हो सके, कह डालो।

क्रैप—बहुत अच्छा, आप खुद जानते हैं, जब से हमारी नई मशीनें आई और जब से नये अनुभवहीन मजदूरों को लगाया गया, तब से कारखाने में काम कितना मन्द गति से चल रहा था ?

बर्निक—हाँ, हाँ !

क्रैप—परन्तु, आज प्रातः जब मैं वहाँ गया, मैंने देखा कि अमेरिकन जहाज की मरम्मत के काम में असाधारण प्रगति हो गई थी। पेंडे का वह भारी छिद्र, वह सड़ा हुआ जोड़, आप जानते हैं.....

बर्निक—हाँ, हाँ, सो क्या हुआ ?

क्रैप—उसकी पूरी मरम्मत कर दी गई थी ! कम-से-कम, दिखाई तो ऐसा ही देता था—पूरा ढँका हुआ—एक दम नया जैसा ! मैंने सुना

कि स्वयं श्रीने कंडील के प्रकाश में रातभर काम करता रहा था ।

बर्निक—हाँ हाँ ! तो फिर ?

क्रैप—मैंने इस पर जरा विचार किया । सुबह मजदूर नाश्ते के लिए चले गये थे, तो मुझे उस पर दृष्टि डालने का अवसर मिला । कोई बड़ी संदेहजनक बात हो रही है, मिस्टर बर्निक !

बर्निक—मैं इस पर विश्वास नहीं कर सकता, क्रैप ! श्रीने ऐसा करेगा ? न तो मैं विश्वास कर सकता हूँ, न करूँगा ।

क्रैप—मुझे बहुत खेद है, परन्तु यह सीधा-सादा सत्य है । कुछ बहुत संदेहजनक हो रहा है ! जहाँ तक मैं देख सका हूँ, कोई नई लकड़ी नहीं लगाई गई । केवल छिद्र को बन्द करके पाल के कपड़े आदि से ढँक दिया गया है—सौ-फी-सदी धोखा ! 'भारत बाला' कभी न्यूयार्क नहीं पहुँचेगी । दरार पड़े हुए बर्तन के समान वह समुद्र-गर्भ में समा जायेगी ।

बर्निक—यह तो अत्यन्त भयानक है ! परन्तु इसमें उद्देश्य क्या हो सकता है ?

क्रैप—शायद वह मशीनों को बदनाम करना चाहता है—अपना बदला चुकाना चाहता है ।—पुराने कारीगरों को फिर से बुलाने के लिए आपको बाध्य करना चाहता है ।

बर्निक—और इसके लिए वह जहाज के सब लोगों के प्राणों की बलि चढ़ा देने को तैयार है ?

क्रैप—उस दिन वह कह रहा था—'भारत बाला' में कोई मनुष्य नहीं है—केवल जंगली जानवर हैं ।

बर्निक—हाँ, मगर—इसके अलावा, क्या उसे उससे होनेवाले पूँजी के भारी नाश का भी खयाल नहीं है ?

क्रैप—श्रीने पूँजी की ओर बहुत मैत्रीभाव से नहीं देखता, मिस्टर बर्निक !

बर्निक—यह बिल्कुल सही है । वह आन्दोलनकारी और असंतोष फैलाने वाला है; परन्तु ऐसा विचारहीन काय—! सुनो क्रैप ! तुम्हें सारे

मामले को फिर से देखना चाहिए । किसी से एक शब्द भी कहना मत । यदि किसी ने सुन लिया तो दोष हमारे कारखाने पर मढ़ा जायेगा ।

क्रैप—बेशक ! मगर....

बर्निक—जब मजदूर शाम को भोजन के लिए चले जायें तब तुम वहाँ फिर से जाना; मुझे उसके बारे में पूरा निश्चय होना चाहिए ।

क्रैप—प्रवश्य महाशय ! परन्तु क्षमा कीजिएगा, आप विचार क्या करने का कर रहे हैं ?

बर्निक—स्वाभाविक है कि मैं रिपोर्ट कर दूँगा—मामले की । हम ऐसे अपराध में अपने आपको शामिल नहीं कर सकते । मेरा अन्तरात्मा इसे सहन नहीं करेगा । इसके अलावा, यदि यह देखा गया कि मैंने अपने सारे व्यक्तिगत हितों को एक किनारे कर दिया और न्याय को अपना मार्ग अंगीकार करने दिया, तो पत्रों और साधारण जनता के मन पर बहुत अच्छी छाप पड़ेगी ।

क्रैप—बिल्कुल सही, मिस्टर बर्निक !

बर्निक—परन्तु सबसे पहले, मुझे पूर्ण निश्चय होना चाहिए । इसी बीच, इस बारे में किसी से एक शब्द भी कहना मत....

क्रैप—एक शब्द भी नहीं, महोदय ! परन्तु आपको निश्चय अवश्य हो जायेगा । (बाहर निकल जाता है)

बर्निक—(कुछ जोर से) दिल दहल उठा !—परन्तु नहीं; यह असम्भव है—कल्पना के परे है !

[कमरे में जाने के लिए मुड़ना । उसी समय दाहिनी ओर से हिल्मर का प्रवेश]

हिल्मर—नमस्ते, कास्तन ! व्यापारिक संघ में कल की विजय पर बधाई !

बर्निक—धन्यवाद !

हिल्मर—मैंने सुना, वह एक शानदार विजय थी—स्वार्थ और पूर्व-ग्रहों पर बुद्धिमत्तापूर्ण लोकसेवा-भावना की विजय ! आश्चर्य है !—यहाँ

के उस अप्रिय काण्ड के बाद आप इतना....!

बर्निक—हाँ, हाँ ! बिल्कुल, बिल्कुल....!

हिल्मर—परन्तु निर्यायिक 'ग्राम अब तक नहीं हुआ ।

बर्निक—रेलवे के बारे में ?

हिल्मर—हाँ, आप जानते ही होंगे, हैमर कैसी आग सुलगा रहा है ?

बर्निक—(चिन्तित होकर) नहीं तो, क्या है ?

हिल्मर—आजकल जो अफवाहें फैली हुई हैं उनमें वह खूब योग दे रहा है और एक लेख भी तैयार करने की चिन्ता में है ।

बर्निक—कौन-सी अफवाहें ?

हिल्मर—वही—शाखा लाइन के आस-पास बड़े पैमाने पर जमीन की खरीद-सम्बन्धी ।

बर्निक—क्या ? ऐसी भी कोई अफवाह फैल रही है ?

हिल्मर—सारे नगर में फैली हुई हैं । मैंने क्लब में सुनी । लोग कहते हैं—हमारे एक वकील ने कमीशन पर जंगल की सब भूमि, खानों की सब भूमि और सब जल-प्रपात खरीद लिये हैं....

बर्निक—यह नहीं कहते कि किसके लिए ?

हिल्मर—क्लब में लोग कह रहे थे कि आपकी रेलवे-योजना की गंध किसी कम्पनी को, जिसका इस नगर से कोई सम्बन्ध नहीं है, मिल गई और उसने कीमत बढ़ने के पहले सब भूमि खरीद ली । है न दुष्टता ?....उफ !

बर्निक—दुष्टता ?

हिल्मर—हाँ, हमारी थाली पर विदेशियों का मुँह मारना और फिर ऐसे कार्य में एक स्थानीय वकील का उन्हें अपना योग देना ! अब सारा लाभ बाहरी लोगों को मिलेगा !

बर्निक—परन्तु, आखिरकार यह एक अफवाह ही तो है ।

हिल्मर—फिर भी लोग विश्वास कर रहे हैं और मुझे कोई सन्देह नहीं कि कल या परसों हैमर उसे सत्य का रूप देकर खूब विषैला प्रचार

करेगा । नगर में रोष पहले से ही फैला हुआ है । मैंने कई लोगों को कहते सुना है कि यदि यह अफवाह सच निकली तो वे हिस्सेदारों की सूची से अपने नाम वापस ले लेंगे ।

बर्निक—असम्भव !

हिल्मर—ऐसा ? आप क्या समझते हैं—ये सब रुपया-प्रेमी लोग आपके साथ इस काम में सम्मिलित होने के लिए क्यों इतने तैयार हुए हैं ? आप नहीं मानते कि उन्हें उसमें लाभ की सुगन्ध आई होगी ?

बर्निक—यह असम्भव है—मेरा पक्का विश्वास है । हमारे छोटे से समाज में सार्वजनिक भावना बहुत है ।

हिल्मर—हमारे समाज में ? आप तो पक्के आशावादी हैं और इसीलिए दूसरों को अपना-जैसा समझते हैं । परन्तु मैं थोड़ा-बहुत अनुभवी प्रेक्षक हूँ—। इस जगह में, हमारे सिवा, एक भी ऐसा आदमी नहीं है—एक भी नहीं है—जो आदर्शों का भण्डा ऊँचा रखता हो । (बरामदे की ओर जाता है) उफ़ ! वह देखो, वे वहाँ...

बर्निक—कौन ?

हिल्मर—अमरीका से आये हुए हमारे दोनों मित्र । (दाहिनी ओर देखता है) और वह कौन है, जिसके जिसके साथ चल रहे हैं ? मुझे लगता है 'भारत बाला' का कप्तान है ! उफ़ !

बर्निक—उससे उनका क्या वास्ता हो सकता है ?

हिल्मर—वही तो उनके लिए योग्य साथी है । ऐसा दीखता है, मानो दास-विक्रेता या समुद्री दस्यु हो । और कौन जाने, दूसरे दोनों भी इतने वर्ष क्या करते रहे हों !

बर्निक—मैं कह दूँ—उनके बारे में इस प्रकार की बातें सोचना बिल्कुल अन्याय है !

हिल्मर—हाँ, आप तो शुभाशावादी हैं । मगर वे आगएँ... फिर हमारी छाती पर ! इसलिए, समय रहते, मैं तो चल दिया (बाईं ओर के दरवाजे की ओर जाता है । लोना दाहिनी ओर से प्रवेश करती है ।)

लोना—ओह हिल्मर ! मेरे आते ही चल दिये ?

हिल्मर—बिल्कुल नहीं; मैं जरा जल्दी में हूँ । मुझे बेती से थोड़ी बात करनी है । (बाई ओर सब से दूर के कमरे में चला जाता है ।)

बर्निक—(क्षण भर की शान्ति के बाद)—कहो लोना !

लोना—कहो !

बर्निक—आज तुम्हारा मेरे बारे में क्या खयाल है ?

लोना—वही, जो कल था । कम-ज्यादा—असत्य—!

बर्निक—मुझे उस बारे में तुम्हें बताना ही होगा, जोहन कहाँ गया है ?

लोना—आ रहा है । उसे पहले एक आदमी से मिलना था ।

बर्निक—कल तुमने जो सुना था उससे तुम समझ सकती हो कि यदि सचाई प्रकट हो गई तो मेरा सारा जीवन नष्ट हो जाएगा ।

लोना—मैं समझ सकती हूँ ।

बर्निक—यह तो समझ में आने योग्य है कि मैं इस अपराध का अपराधी नहीं हूँ कि यहाँ इतनी चर्चाएँ हुई ?

लोना—यह समझ में आता है । परन्तु चोर कौन था ?

बर्निक—चोर था ही नहीं । रुपया चोरी गया ही नहीं—एक पाई भी नहीं !

लोना—यह कैसी बात है ?

बर्निक—मैं कहता हूँ—एक पैसा भी नहीं !

लोना—परन्तु, वे अफवाहें ? यह लज्जाजनक अफवाह कैसे फैली कि जोहन...

बर्निक—लोना, मैं समझता हूँ, मैं दूसरों के साथ जो बातें नहीं कर सकता वे सब बातें तुम्हारे साथ कर सकता हूँ । तुम से कुछ भी छिपाऊँगा नहीं । मैं ही आंशिक रूप में अफवाह फैलाने का दोषी था ।

लोना—तुम ? तुम ऐसा कर सके, उस आदमी के सम्बन्ध में, जिसने तुम्हारे लिए...

बर्निक—उस समय की हालतों का खयाल किये बिना मेरी निन्दा मत करो। मैंने कल सब बता ही दिया था। मैं घर आया और मैंने देखा कि मेरी मा अविचारी दायित्वों के दलदल में फँसी हुई है। सब प्रकार का दुर्भाग्य हमारे ऊपर छा गया था। ऐसा लगता था कि दुर्भाग्य की वर्षा हो रही है, और हमारे घर के नष्ट हो जाने में कोई बिलम्ब नहीं रह गया है। मैं आधा अंधा और आधा हताश था। लोना, मेरा विश्वास है, मैं अपनी चिन्ताओं को मारने के लिए ही उस उलझन में फँसा था, जिसके परिणामस्वरूप जोहन को जाना पड़ा।

लोना—हूँ !

बर्निक—तुम कल्पना कर सकती हो कि तुम्हारे और उसके जाने के बाद कैसे हर प्रकार की अफवाहें उड़ाई गईं। लोगों ने कहना शुरू किया कि यह डमकी पहली गलती नहीं थी—दार्फ को मुँह बन्द रखने और चले जाने के लिए भारी धन-राशि दी गई है। दूसरे लोग कहते थे कि दीना की माँ को रुपया मिला है। इसी समय लोग यह भी देख रहे थे कि हमारे परिवार के लिए अपने दायित्व पूरे करना कठिन हो रहा है। इससे ज्यादा स्वाभाविक और क्या हो सकता था कि अफवाह फैलाने वालों को इन दोनों प्रकारों की अफवाहों में कुछ सम्बन्ध मालूम हुआ ? और वह स्त्री यहाँ दारिद्र्य में जीवन-यापना करती रही, इसलिए लोगों ने कहा कि जोश सब रुपया अपने साथ ले गया। और जब-जब अफवाहों में धन की बात आई, रकम पहले से ज्यादा बड़ी होती गई।

लोना—और तुमने, कास्टन.....?

बर्निक—मैंने वैसे ही अफवाह का सहारा ले लिया, जैसे कि डूबता हुआ आदमी तिनके का सहारा ले लेता है।

लोना—तुमने उसे फैलाने में सहायता की ?

बर्निक—मैंने प्रतिवाद नहीं किया। हमारे साहूकार तकाजे कर रहे थे और मुझे उनको शान्त रखना था। मेरे रख से कारबार

की स्थिरता सम्बन्धी शंकाएँ मिट गईं । लोग कहने लगे कि हमारे ऊपर एक अस्थायी संकट आ गया है और आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम पर दबाव न डाला जाये—हमें समय भर दे दिया जाए तो प्रत्येक लेनदार का पाई-पाई कर्ज वसूल हो जायेगा ।

लोना—और प्रत्येक लेनदार का पूरा रुपया चुका दिया गया ?

बर्निक—हाँ, लोना ! उस अफवाह ने हमारे घर की रक्षा कर ली और मुझे, जो-कुछ मैं आज हूँ, बना दिया ।

लोना—अर्थात्, तुम जो-कुछ हो वह असत्य के बनाये हुए हो ?

बर्निक—उससे उस समय किसी की हानि हुई ? जोहन का इरादा तो कभी लौटने का नहीं था ।

लोना—किसी की हानि ? अपने हृदय में प्रवेश करके देखो, स्वयं तुम्हें क्षति पहुँची है या नहीं ।

बर्निक—किसी भी आदमी के हृदय में देखो, एक-न-एक-धब्बा ऐसा मिलेगा ही, जिसे उसको छिपाकर रखना पड़ता है ।

लोना—और तुम अपने आपको समाज का रतम्भ कहलवाते हो ?

बर्निक—समाज के पास मुझ से अच्छा कोई नहीं है ।

लोना—ऐसे समाज को सँभालने-न-सँभालने से क्या लाभ-हानि ? उस में क्या भरा हुआ है ?—दिखावा और झूठ—और कुछ भी नहीं ! अपने आप को ही देखो । तुम नगर के प्रथम व्यक्ति हो, ऐश्वर्य और विलास में रहनेवाले, शक्तिशाली और समाहत तुम, जिसने एक निर्दोष व्यक्ति पर अपराधी होने का टीका लगा दिया है ।

बर्निक—क्या तुम मानती हो कि मैंने उसके प्रति जो अन्याय किया है उसकी चेतना मुझे नहीं है ? और तुम मानती हो कि मैं उसका मुआवजा चुकाने को तैयार नहीं हूँ ?

लोना—कैसे ? सच बात कहकर ?

बर्निक—तुम में इसका आग्रह करने की निष्ठुरता है ।

लोना—और किस बात से इस अन्याय का मुआवजा चुक सकता है !

बनिक—मैं धनी हूँ, लोना ! जोहन कितनी भी बड़ी रकम माँग सकता है—

लोना—हाँ, उसे रुपया देकर देखो, और तुम्हें सुनने को मिल जायेगा—उसे क्या कहना है !

बनिक—तुम जानती हो, वह क्या करना चाहता है ?

लोना—नहीं, कल से वह बिल्कुल चुप है । ऐसा दिखाई देता है, मानो एकाएक बूढ़ा हो गया हो ।

बनिक—मुझे उससे बात करनी होगी ।

लोना—वह आ ही गया । (जोहन दाहिनी ओर से आता है)

बनिक—(उसके पास जाकर) जोहन—!

जोहन—(उसे दूर हो जाने का संकेत करता हुआ) सुनो मेरी बात पहले । कल सुबह मैंने तुम्हें वचन दिया था कि मैं अपना मुँह बन्द रखूँगा ।

बनिक—हाँ, दिया था ।

जोहन—परन्तु मुझे नहीं मालूम था—

बनिक—जोहन, मुझे परिस्थितिको साफ करने का थोड़ा-सा अवसर दो !

जोहन—आवश्यकता नहीं है । मैं भली भाँति परिस्थिति को समझता हूँ । तुम्हारा व्यापार उस समय जोखिम की हालत में था; मैं चला गया था, और मेरा अरक्षित मान और यश तुम्हारी दया के अधीन था । तुमने जो कुछ किया उसके लिए मैं तुम्हें बहुत दोष नहीं देता । हम उन दिनों नौजवान और विचारहीन थे । परन्तु अब मुझे सत्य की आवश्यकता है और अब तुम्हें मुँह खोलना होगा ।

बनिक—और इस समय मुझे अपने सदाचार की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा की आवश्यकता है; इसलिए मैं सब बात कह नहीं सकता ।

जोहन—तुमने मेरे बारे में जो गलत अफवाहें उड़ाई हैं उनकी मैं ज्यादा परवाह नहीं करता; तम्हें दूसरी बात का दोष अपने सिर पर लेना होगा ।

मैं दीना को अपनी पत्नी बनाऊँगा और, मेरा इरादा है, यहीं—तुम्हारे ही नगर में उसके साथ बसने का ।

लोना—ऐसा करना चाहते हो ?

बर्निक—दीना के साथ ? दीना को पत्नी बना कर ? इस नगर में ?

जोहन—हाँ, हाँ ! अन्यत्र कहीं नहीं । मैं इन सब असत्यों का और इन सब अपवाद-प्रसारकों का मुकाबला करने के लिए यहाँ रहना चाहता हूँ । परन्तु इसके पूर्व कि मैं दीना को मना सकूँ, तुमको मुझे कलंकमुक्त करना होगा ।

बर्निक—क्या तुमने सोचा नहीं है कि यदि मैं एक बात स्वीकार करूँ तो आप ही आप दूसरी बात की जिम्मेदारी भी मुझ पर आ जायेगी ? तुम कहोगे कि मैं अपनी बहियों से बता सकता हूँ कि कोई चोरी हुई ही नहीं । परन्तु मैं ऐसा नहीं कर सकता । उन दिनों हमारा हिसाब इतना ठीक नहीं रखा जाता था । और मैं कर भी सकूँ तो लाभ क्या होगा ? क्या लोग यह नहीं कहेंगे कि मैंने एक बार असत्य के बल पर अपनी रक्षा की थी और पंद्रह वर्ष तक उस असत्य को तथा उसके परिणामों को सुरक्षित रहने दिया और उन्हें मिटाने के लिए अँगुली भी नहीं उठाई ? तुम हमारे समाज को बहुत अधिक नहीं जानते, नहीं तो तुम महसूस कर सकते कि इससे मेरा सर्वनाश हो जायेगा ।

जोहन—मैं इतना ही कह सकता हूँ कि मैं श्रीमती दार्फ की पुत्री को अपनी पत्नी बनाना चाहता हूँ और इसी नगर में रहना चाहता हूँ ।

बर्निक—(माथे से पसीना पोंछता हुआ) सुनो जोहन, और तुम भी लोना, मेरी आज की परिस्थितियाँ बिल्कुल असाधारण हैं । यदि इस समय तुमने मुझ पर यह प्रहार किया तो केवल मेरा सर्वनाश ही नहीं होगा, हमारे समाज का एक सुन्दर भविष्य भी नष्ट हो जायेगा । आखिरकार बचपन में यही तो तुम्हारा भी समाज था ?

जोहन—और यदि मैं तुम पर यह प्रहार नहीं करता तो मुझे अपने भविष्य का सारा सुख अपने हाथों नष्ट कर देना होगा ।

लोना—कहो, कास्टन, कहो !

बर्निक—तो मैं तुम्हें बताऊँगा कि समाज का भावी सुख रेलवे-योजना के साथ जुड़ा हुआ है और योजना का फलित होना उतना सरल नहीं है, जितना तुम्हें दिखलाई पड़ता है। शायद तुमने सुना हो कि गत वर्ष एक तट-वर्ती रेलवे की योजना पेश की गई थी। बहुत से प्रभावशाली लोगों और पत्रों ने उसका समर्थन किया था; किन्तु मैंने प्रयत्न करके इस आधार पर उसे अस्वीकार करा दिया कि उससे हमारे नौका-व्यापार को धक्का पहुँचेगा।

लोना—नौका-व्यापार में तुम्हारा कोई हिस्सा है ?

बर्निक—हाँ, परन्तु उस कारण से किसी ने मुझ पर शंका करने का साहस नहीं किया। मेरी प्रतिष्ठा ने मेरी रक्षा की। यों, मैं स्वयं तो हानि सह सकता था, किन्तु नगर उसे न सह सकता। इसलिए देश के बीच में रेलवे लाइन बनाने का निश्चय किया गया। जैसे ही यह हुआ मैंने निश्चय कर लिया कि हमारे नगर के लिए भी एक शाखा-लाइन का निर्माण किया जायेगा।

लोना—इसके बारे में तुमने कुछ बताया क्यों नहीं, कास्टन ?

बर्निक—तुमने बड़े पैमाने पर भूमि खरीदी जाने की अफवाहें सुनी हैं ?

जोहन—मालूम होता है, दूसरे प्रान्त की कोई कम्पनी है....

बर्निक—आज इस भूमि का कोई महत्व नहीं है, इसलिए बहुत सस्ती बिक गई है। खरीदनेवाला रेलवे-योजना की बात प्रकट हो जाने तक ठहरा रहता तो भूमि के मालिकों ने भाव बहुत चढ़ा दिये होते।

लोना—तो, क्या ?

बर्निक—अब मैं एक बात बताता हूँ, जिसके भिन्न-भिन्न अर्थ लगाये जा सकते हैं। इसे हमारे समाज के सामने केवल वह आदमी स्वीकार कर सकता है, जो अपने निष्कलंक और आदरयुक्त नाम के बल पर सीधा खड़ा रहने की सामर्थ्य रखता हो।

लोना—अच्छा, तो ?

बर्निक—खरीदने वाला मैं ही हूँ।

लोना—तुम ?

जोहन—अपने लिए ?

बर्निक—अपने लिए। यदि शाखा-लाइन बन गई तो मैं करोड़पति हो जाऊँगा, यदि न बनी तो मैं मिट जाऊँगा।

लोना—यह तो बहुत बड़ी जोखिम है, कास्टन !

बर्निक—मैंने अपनी सारी सम्पत्ति जोखिम में डाल दी है।

लोना—मैं तुम्हारी सम्पत्ति के बारे में नहीं सोचती; परन्तु यदि यह प्रकट हो गया कि...

बर्निक—हाँ, यही नाजुक बात है। अब तक मेरा जो उज्ज्वल नाम रहा है उसके बल पर मैं सारी चीजें अपने कंधों पर भेल सकता हूँ, उसे पूरा कर सकता हूँ और अपने नागरिक बन्धुओं से कह सकता हूँ—'देखो मैंने समाज के कल्याण के लिए यह जोखिम उठाई है।'

लोना—समाज के कल्याण के लिए ?

बर्निक—हाँ, और एक आदमी भी मेरे इरादों पर शंका नहीं करेगा।

लोना—तो, उसमें शामिल कुछ दूसरे लोगों ने अधिक प्रकाश्य रूप में काम किया है—उनके इरादे छिपे हुए नहीं हैं।

बर्निक—कौन हैं वे ?

लोना—क्यों,—स्मेल, सान्दस्ताद और विगेलान्द !

बर्निक—उन्हें अपने पक्ष में करने के लिए मुझे उनको गुप्त बात बतानी पड़ी।

लोना—और उन्हें... ?

बर्निक—उन्होंने लाभ का प्राँचवाँ हिस्सा पाने की शर्त करा ली है।

लोना—ओह ! ये हैं समाज के स्तम्भ !

बर्निक—क्या स्वयं समाज ही हमें इस प्रकार के गुप्त कार्य करने के

लिए बाध्य नहीं करता ? यदि मैं छिपाकर काम न करता तो क्या हुआ होता ? प्रत्येक व्यक्ति उस योजना में हाथ डालना चाहता; सारी चीज बँट जाती और अव्यवस्था तथा कुप्रबन्ध का शिकार बन जाती । मेरे सिवा नगर में एक भी ऐसा आदमी नहीं है, जो इतने बड़े काम का संचालन कर सकता । इस देश में बड़े काम केवल उन विदेशियों के हाथों में हैं, जो यहाँ आकर बस गये हैं । यही कारण है कि मेरी अन्तरात्मा मुझे निर्दोष बताती है । केवल मेरे हाथों में आकर ही यह भूमि उन तमाम लोगों के लिए, जिन्हें अपनी रोज की रोटी रोज कमानी पड़ती है, वरदान बन सकती है ।

लोना—मेरा विश्वास है, तुम ठीक कहते हो, कास्टन !

जोहन—परन्तु मेरा सम्बन्ध उन तमाम लोगों से नहीं है; मेरे अपने जीवन का सुख बाजी पर चढ़ा है ।

बर्निक—तुम्हारी नगरी का हित भी बाजी पर है । यदि मेरे पूर्व-जीवन को कलकित बतानेवाली घटनाएँ प्रकट हो गईं तो मेरे विरोधी सम्मिलित उग्रता से मुझ पर विरुद्ध हो टूट पड़ेंगे । हमारे समाज में युवावस्था की भूल कभी क्षमा नहीं की जाती । वे मेरे सम्पूर्ण पूर्व-जीवन की छान-बीन करेंगे । हजारों छोटी-छोटी घटनाएँ खोज निकालेंगे—और फिर, मैं जो कुछ स्वीकार करूँगा उसकी दृष्टि से उन तमाम घटनाओं का भाष्य किया जायेगा । वे अफवाहों और अपवादों के भार के नीचे मुझे कुचल डालेंगे । मुझे रेलवे-योजना त्याग देनी पड़ेगी और यदि मैंने अपना हाथ खींच लिया तो वह विफल हो जायेगी—मैं नष्ट हो जाऊँगा और नागरिक के नाते मेरा जीवन समाप्त हो जायेगा ।

लोना—जोहन ! हमने जो कुछ सुना उसके खयाल से तुम्हें यहाँ से चले जाना चाहिए, और अपना मुँह बन्द रखना चाहिए ।

बर्निक—हाँ, जोहन ! तुम्हें यही करना चाहिए !

जोहन—हाँ, मैं जाऊँगा और अपना मुँह बन्द रखूँगा । परन्तु मैं फिर आऊँगा और तब मैं सब कुछ कहूँगा ।

बर्निक—वहीं ठहरो, जोहन ! और अपना मुँह बन्द रखो । मैं तुम्हारे साथ हिस्सा बँटाने को—

जोहन—अपना रुपया अपने पास रखो, परन्तु मुझे मेरा नाम और प्रतिष्ठा वापस दे दो !

बर्निक—और अपनी प्रतिष्ठा की बलि चढ़ा दूँ ?

जोहन—तुम्हें और तुम्हारे समाज को इससे निकलने का अच्छे से अच्छा उपाय खोज लेना चाहिए । मुझे तो दीना से विवाह करना ही है, और मैं करूँगा । कल मैं 'भारत-बाला' से चला जानेवाला हूँ ।

बर्निक—'भारत-बाला' से ?

जोहन—हाँ, कप्तान ने मुझे ले जाने का वचन दिया है । जैसा मैंने कहा है, मैं अमेरिका चला जाऊँगा । मैं अपना फार्म बेच दूँगा और अपने कारोबार की व्यवस्था कर दूँगा । दो महीनों में मैं वापस आ जाऊँगा ।

बर्निक—और फिर तुम सब कह दोगे ?

जोहन—तब अपराधी को अपना अपराध अपने सिर लेना होगा ।

बर्निक—क्या तुम भूल गये कि यदि मैं ऐसा करूँगा तो मुझे वह अपराध भी अपने सिर लेना होगा जो मेरा नहीं है ?

जोहन—उस लज्जाजनक अफवाह से पिछले पन्द्रह वर्षों तक किसने लाभ उठाया है ?

बर्निक—तुम मुझे निराशोन्मत्त बना दोगे ! अच्छा, यदि तुम भेद खोलोगे तो मैं सारी बात से इनकार कर दूँगा । मैं कहूँगा कि यह मेरे विरुद्ध एक षड्यन्त्र है—तुम धमकी देकर मुझ से रुपया ऐंठने के लिए यहाँ आये हो ।

लोना—लज्जा आनी चाहिए, कार्स्टन !

बर्निक—मैं बता रहा हूँ—मैं निराशा-ग्रस्त हूँ और मैं अपने जीवन के लिए लड़ूँगा । मैं प्रत्येक बात से मुकर जाऊँगा—प्रत्येक बात से !

जोहन—मेरे पास तुम्हारे दो पत्र हैं—दूसरे कागजों के साथ मेरे सन्दूक में मिल गये हैं । आज सुबह मैंने उन्हें फिर से पढ़ा था—वे काफी साफ हैं ।

बर्निक—और तुम उन्हें प्रकाशित करोगे ?

जोहन—आवश्यक हो गया तो...

बर्निक—और तुम दो महीनों में यहाँ वापस आ जाओगे ?

जोहन—ऐसी ही आशा है। मौसम अच्छा है। यदि 'भारत-बाला' समुद्र के तल में बैठ न गई तो तीन सप्ताह में मैं न्यूयार्क पहुँच जाऊँगा।

बर्निक—(चौंककर)—बैठ न गई ? 'भारत-बाला' तल में क्यों बैठे ?

जोहन—बिल्कुल ठीक ! क्यों बैठे ?

बर्निक—(मन्द स्वर में) तल में बैठ जायेगी ?

जोहन—अच्छा कार्स्टन ! अब तुम जानते हो कि तुम्हारे सामने क्या है। तुम्हें अपना रास्ता आप निकाल लेना होगा। नमस्ते ! तुम खुद ही बेती से भी मेरा नमस्ते कह देना—यद्यपि उसने मेरे साथ बहन का जैसा व्यवहार नहीं किया। परन्तु, मार्ता से मैं मिलूँगा। वह दीना से कहेगी—वह मुझे बचन देगी—(बाईं ओर के दूर के दरवाजे से निकल जाता है)

बर्निक—(स्वगत) 'भारत-बाला'.... (तीव्रता से)....लोना, तुम्हें यह रोकना होगा !

लोना—तुमने स्वयं देख लिया, कार्स्टन ! अब उस पर मेरा कोई प्रभाव नहीं रहा। (जोहन के पीछे दूसरे कमरे में चली जाती है।)

बर्निक—(बेचैनी में डूबा हुआ) 'भारतबाला' डूब जायेगी....?

[दाहिनी ओर से ग्रौने का प्रवेश]

ग्रौने—क्षमा कीजियेगा, परन्तु सुविधा हो तो....

बर्निक—(गुस्से से घूमकर) क्या चाहते हो ?

ग्रौने—क्या एक प्रश्न पूछ सकता हूँ ?

बर्निक—जल्दी पूछो। क्या है ?

ग्रौने—यदि 'भारत-बाला' कल यात्रा करने योग्य न हुई तो क्या मेरी बरखास्तगी निश्चित—बिल्कुल निश्चित—है ?

बर्निक—तुम्हारा मतलब ? जहाज तो तैयार है ?

ग्रौने—हाँ, तैयार है। परन्तु मान लीजिए कि तैयार न हो, तो क्या मैं बरखास्त कर दिया जाऊँगा ?

बर्निक—ऐसे व्यर्थ प्रश्न क्यों पूछते हो ?

ग्रौने—मैं जान लेना चाहता हूँ । कृपा कर बता दीजिए, क्या मैं बरखास्त कर दिया जाऊँगा ?

बर्निक—अपनी बात पर दृढ़ रहने की आदत मुझे है या नहीं ?

ग्रौने—तो, मेरे घर में और मेरे स्वजन-परिजनों में मेरी जो प्रतिष्ठा है उसे कल मैं खो दूँगा ? मेरी श्रेणी के लोगों पर मेरा जो विश्वास है वह चला जायेगा ? समाज के अधिक गरीब और अधिक जरूरतमन्द लोगों की सेवा का मुझे कोई अवसर न रह जायेगा ?

बर्निक—ग्रौने, इस सब पर हम कल चर्चा कर चुके हैं ।

ग्रौने—ठीक है ! तो 'भारत-बाला' यात्रा कर सकती है ।

[थोड़ी सी शान्ति]

बर्निक—देखो, मैं सब जगह नहीं देख सकता—सब बातों के लिए उत्तरदायी नहीं हो सकता । शायद तुम मुझे यह आश्वासन दे सकते हो कि मरम्मत सन्तोषजनक हो गई है ?

ग्रौने—आपने मुझे बहुत कम समय दिया है मि० बर्निक !

बर्निक—परन्तु मरम्मत का प्रमाणपत्र तो तुम्हें देना होगा ?

ग्रौने—मौसम अच्छा है और गर्मी के दिन हैं ।

[फिर से शान्ति]

बर्निक—और कुछ कहना है ?

ग्रौने—नहीं श्रीमान् !

बर्निक—तो 'भारत-बाला' यात्रा करेगी—

ग्रौने—कल ?

बर्निक—हाँ ।

ग्रौने—बहुत अच्छा !

[ग्रौने नमस्ते करके चला जाता है । बर्निक क्षण भर अनिश्चय की स्थिति में खड़ा रहता है, फिर फुर्ती से दरवाजे की ओर जाता है, मानो ग्रौने को वापस बुलाना चाहता हो । परन्तु, पसोपेश में पड़कर, दरवाजे

की मूठ पर हाथ रखे रुक जाता है। उसी समय दरवाजा बाहर से खुलता है और क्रैप अन्दर आता है।]

क्रैप—(मन्द स्वर में) ओह ! वह यहाँ आया था ! क्या उसने स्वीकार कर लिया ?

बर्निक—हाँ ! तुमने कुछ पता लगाया ?

क्रैप—इसकी क्या जरूरत है, श्रीमान् ! आप उस आदमी की आँखों में नाचने वाले दुष्ट अन्तरात्मा को नहीं देख सके ?

बर्निक—ऐसी चीजें दिखाई नहीं देतीं । मैं जानना चाहता हूँ, तुम्हें कुछ पता चला ?

क्रैप—मैं नहीं देख सका । मुझे बहुत विलम्ब हो गया था । उन्होंने जहाज को घाट से हटाना शुरू कर दिया था । परन्तु उनकी हड़बड़ी से ही मालूम होता है कि....

बर्निक—उससे कुछ नहीं मालूम होता । क्या जाँच हो चुकी है ?

क्रैप—हाँ, परन्तु....

बर्निक—और उन्हें कोई शिकायत नहीं थी ?

क्रैप—मिस्टर बर्निक, आप खूब जानते हैं, इस जाँच का क्या अर्थ होता है—खास तौर से हमारे जैसे प्रतिष्ठित कारखाने में !

बर्निक—कोई बात नहीं । जिम्मेदारी हमारे ऊपर से चली गई ।

क्रैप—परन्तु श्रीमान्, क्या आप सचमुच अग्नि के रंग-ढंग से नहीं कह सकते कि....

बर्निक—अग्नि ने मुझे पूरा भरोसा दिला दिया है ।

क्रैप—और मैं कहना चाहता हूँ, श्रीमान्, कि नैतिक दृष्टि से मुझे पूरा निश्चय है कि....

बर्निक—इसका मतलब क्या है क्रैप ? मुझे साफ दिखाई पड़ता है कि तुम उस आदमी के छुरा भोंकना चाहते हो । परन्तु यदि तुम उस पर प्रहार ही करना चाहते हो तो कोई दूसरा अवसर खोजना चाहिए । तुम जानते हो कि मेरे लिए—या यों कहो कि मालिकों के लिए—‘भारत-

बाला' का कल यात्रा करना कितने महत्व का है।

क्रेप—बहुत अच्छा ! जाने दीजिए । मगर फिर हम कभी उसका नाम सुन सकें तो—! हूँ !

[दाहिनी ओर से विगेलान्द का प्रवेश]

विगेलान्द—आपको प्रभात अत्यन्त शुभ हो, मिस्टर बर्निक ! आप एक मिनट मुझे दे सकते हैं ?

बर्निक—आपकी सेवा में उपस्थित हूँ, मिस्टर विगेलान्द !

विगेलान्द—मैं जानना चाहता हूँ—क्या आपकी भी राय है कि 'तालतर' कल रवाना हो जाये ?

बर्निक—निश्चय ! मेरा खयाल है, यह तो तय हो चुका था ?

विगेलान्द—कप्तान अभी मेरे पास आया था और कहता था कि तूफान के सिगनल दिये गये हैं ।

बर्निक—तो क्या तूफान की आशंका है ?

विगेलान्द—कम से कम, जोर की हवा...परन्तु विरुद्ध नहीं, उसी दिशा में ।

बर्निक—तो फिर तुम क्या कहते हो ?

विगेलान्द—मैं कहता हूँ, जैसा कि मैंने कप्तान से कहा है, कि 'तालतर' भगवान के हाथों में है । इसके अलावा, उसे तो पहले उत्तरी समुद्र में जाना है, और इस समय इंग्लैंड में भाड़े की दरें खूब चढ़ी हुई हैं । इसलिए....

बर्निक—हाँ, रुकने से शायद हानि होगी ।

विगेलान्द—फिर जहाज मजबूत है और पूरा बीमा भी है । 'भारत-बाला' के लिए जरूर ज्यादा जोखिम है ।

बर्निक—क्या मतलब ?

विगेलान्द—वह भी तो कल ही यात्रा करेगी ।

बर्निक—हाँ, उसके मालिक बहुत जल्दी मचा रहे हैं और इसके अलावा—

विगेलान्द—तो, यदि वह जीर्ण ठठरी साहस कर सकती है, तो हमारे लिए शर्म की बात होगी, यदि...

बर्निक—बिल्कुल सही। जहाज के कागजात तो आपके पास हैं ?

विगेलान्द—हाँ, ये रहे।

बर्निक—ठीक। तो आप क्रैप के पास हो लीजिए।

क्रैप—आइए यहाँ, श्रीमान् ! अभी-अभी सब काम निबट जायेगा।

विगेलान्द—धन्यवाद ! और परिणाम हम भगवान पर छोड़ते हैं, मि० बर्निक ! (क्रैप के पास बर्निक के कमरे में चला जाता है। रोरलुंद बाग से आता है।)

रोरलुंद—इस समय घर में, मि० बर्निक ?

बर्निक—(विचार-मग्न) देख तो रहे हो।

रोरलुंद—मैं तो सचमुच श्रीमती बर्निक के पास आया हूँ। मुझे लगा कि शायद उन्हें सान्त्वना के कुछ शब्दों की आवश्यकता है।

बर्निक—बहुत सम्भव है, उन्हें आवश्यकता हो। परन्तु मुझे भी आप से कुछ बात करनी है।

रोरलुंद—बहुत खुशी से, मि० बर्निक ! परन्तु आपको हो क्या गया है ? आप बिल्कुल पीले और व्यग्र दिखलाई पड़ते हैं।

बर्निक—सचमुच ? ऐसा लगता हूँ ? आप मेरे जैसे आदमी से, जिस पर इतनी जिम्मेदारियाँ लदी हों, और अपेक्षा भी क्या कर सकते हैं ? मेरा भारी व्यापार तो है ही, फिर यह रेलवे-योजना भी आ पड़ी है। परन्तु, मि० रोरलुंद, मैं आपसे एक बात पूछता हूँ—जरा बताइए तो...

रोरलुंद—खुशी से, मि० बर्निक !

बर्निक—एक विचार-सा मेरे मन में उठ आया है। मान लीजिए, कोई आदमी एक काम करने वाला है, जिसमें हजारों का भला होने वाला हो, और मान लीजिए कि उसके लिए एक व्यक्ति की आहुति चढ़ाना आवश्यक हो तो...

रोरलुंद—आपका अर्थ क्या है ?

बर्निक—उदाहरण के लिए, मान लीजिए, कोई आदमी एक बड़ा कारखाना खोलने का विचार कर रहा है। वह निश्चयपूर्वक जानता है—क्योंकि उसके सारे अनुभव ने उसे यह बता दिया है—कि देर-सबेर, उस कारखाने के चलने में मानव-प्राणों की बलि होने ही वाली है.....

रोरलुंद—हाँ, यह केवल दूर की सम्भावना है।

बर्निक—या, यों कहिए कि, एक आदमी खान का उद्योग आरम्भ करता है। वह परिवार वालों को और युवकों को, जो तरुणों के प्रथम उभार में हों, अपने यहाँ नौकर रखता है; तो क्या यह मानना बिल्कुल मही न होगा कि उनमें से सभी खान से जीवित नहीं निकलेंगे ?

रोरलुंद—हाँ, दुर्भाग्यवश यह बिल्कुल सही है।

बर्निक—तो, जो आदमी इस स्थिति में होगा वह पहले से ही जानता होगा कि उसके काम में कभी न कभी मानव-बलि होने वाली है। परन्तु काम सार्वजनिक हित का है। उसमें जिन प्राणों का मूल्य चुकाना होगा उनमें से प्रत्येक प्राण हजारों लोगों के हित की वृद्धि करेगा।

रोरलुंद—अह ! आप रेलवे की बात सोच रहे हैं—खुदाई, सुरंगें लगाने आदि की बात !

बर्निक—हाँ, बिल्कुल यही। मैं रेलवे की बात सोच रहा हूँ। और रेलवे के आने से कारखाने तथा खानें आदि भी जारी की जायेंगी। फिर भी ऐसा न सोचिए...

रोरलुंद—मि० बर्निक, आप जरूरत से ज्यादा सावधान हैं। मैं तो सोचता हूँ—यदि आप सारा काम ईश्वर के हाथों में सौंप दें...

बर्निक—हाँ, बिल्कुल ठीक ! ईश्वर...

रोरलुंद—आप इस मामले में निर्दोष हैं। आगे बढ़िए और आशा के साथ अपनी रेलवे का निर्माण कीजिए।

बर्निक—हाँ, परन्तु अब मैं आपको एक विशेष उदाहरण देता हूँ। मान लीजिये कि एक भयानक जगह पर बारूदी सुरंग लगानी है। सुरंग लगाये बिना रेलवे लाइन बन नहीं सकती। और, मान लीजिए कि

इंजीनियर जानता है कि जो आदमी सुरंग की बत्ती लगाने जायेगा उसके प्राण बच नहीं सकेंगे, परन्तु फिर भी बत्ती लगानी ही है। क्या इंजीनियर का कर्तव्य है कि वह किसी आदमी को उस काम के लिए भेजे ?

रोरलुंद—हूँ ! —

बर्निक—मे जानता हूँ, आप क्या कहेंगे । इंजीनियर स्वयं बत्ती लगाने के लिए जाये तो आदर्श बात होगी । परन्तु, यह तो हो नहीं सकता, इसलिए उसे एक मजदूर की बलि चढ़ानी ही होगी ।

रोरलुंद—यह तो ऐसी बात है, जो यहाँ का कोई इंजीनियर नहीं करेगा ।

बर्निक—बड़े देशों में कोई इंजीनियर इसे करने के लिए दो बार भी विचार नहीं करेगा !

रोरलुंद—बड़े देशों में ? हाँ, मैं बिल्कुल मान सकता हूँ । उन निष्कृष्ट और सिद्धान्तविहीन देशों में...

बर्निक—ओह ! उन देशों के पक्ष में बहुत-कुछ कहा जा सकता है !

रोरलुंद—आप यह कहते हैं ?—आप, जो स्वयं...

बर्निक—बड़े देशों में आदमी को महत्वपूर्ण योजना पूर्ण करने का अवकाश मिलता है; बड़े काम के लिए बलिदान करने का साहस होता है । परन्तु यहाँ आदमी प्रत्येक प्रकार के क्षुद्र विचारों और संशयों से जकड़ा हुआ है ।

रोरलुंद—क्या मानव-प्राणों का विचार क्षुद्र है ?

बर्निक—जब कोई मानव-प्राण हजारों के कल्याण का बाधक हो ।

रोरलुंद—परन्तु आप ऐसे मामले पेश कर रहे हैं, जो बिल्कुल कल्पनातीत हैं, मि० बर्निक ! आपकी आज की बातें मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आतीं । और आप बड़े देशों के उदाहरण देते हैं । भला, वहाँ मानव-प्राणों को कैसा माना जाता है ? वे उन्हें केवल पूंजी का अंश समझते हैं । परन्तु हम तो जरा भिन्न नैतिक दृष्टिकोण

से देखते हैं । हमारे सम्मानप्राप्त जहाज-उद्योग को ही ले लीजिये । क्या आप हमारे जहाज मालिकों में कोई एक भी ऐसा बता सकते हैं, जो अपने क्षुद्र लाभ के लिए एक भी मानव-प्राण को बलि करने के लिए सहमत हो ? और बड़े देशों के उन शठों को देखिए, जो अपने लाभ के लिए एक के बाद दूसरे जीर्ण-शीर्ण और समुद्र-यात्रा के अयोग्य जहाज में सामान भेजते रहते हैं...

बर्निक—मैं समुद्र-यात्रा के अयोग्य जहाजों की बात नहीं कर रहा हूँ ।

रोरलुंद—मगर मैं कर रहा हूँ, मि० बर्निक !

बर्निक—हाँ, मगर किस लिए ? हमारे प्रश्न से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है ।...ओह ! ये क्षुद्र, भीरु विचार ! अगर इस देश का कोई जनरल अपनी सेना को गोलों के सामने ले जाये और कुछ आदमी मर जायें तो लोग अनेक रातें सोयेंगे नहीं । दूसरे देशों में ऐसा नहीं है । वह अन्दर बैठा हुआ आदमी क्या कहता है, तुम्हें सुनना चाहिए—

रोरलुंद—वह ? कौन ? वह अमेरिकन ?

बर्निक—हाँ ! तुम्हें सुनना चाहिए, अमेरिका में कैसे...

रोरलुंद—वह अन्दर है ? और आपने मुझे बताया नहीं ? मैं एकदम...

बर्निक—कोई लाभ नहीं । तुम उसका कुछ नहीं कर सकोगे ।

रोरलुंद—देखेंगे । अह ! वह आ ही गया ! (जोहन दूसरे कमरे से आता है ।)

जोहन—(खुले दरवाजे से पीछे की ओर बात कारता हुआ)—हाँ हाँ, दीना ! जैसी तुम्हारी मर्जी । परन्तु तुम्हें छोड़ देने का मेरा कोई इरादा नहीं है । मैं वापस आऊँगा, तब हमारे बीच सब बात ठीक हो जायेगी ।

रोरलुंद—(जोहन से) क्षमा कीजिएगा, परन्तु इस बात से प्यापका क्या अर्थ था ? आप क्या करने का विचार कर रहे हैं ?

जोहन—मैं यह विचार कर रहा हूँ कि वह युवती, जिसके सामने कल तुमने मेरा मुँह काला करने का प्रयत्न किया था, मेरी पत्नी बनेगी ।

रोरलुंद—आपकी पत्नी ? और आप सचमुच ऐसा मान सकते हैं ?

जोहन—मैं उससे विवाह करने वाला हूँ ।

रोरलुंद—अच्छा, तो आपको सत्य मालूम हो जायेगा । (आधे खुले दरवाजे के पास जाता है) श्रीमती बर्निक, क्या आप कृपा करके यहाँ आयेंगी और गवाह बनेंगी ? और आप भी कुमारी मार्ता ? और दीना को आने दीजिए । (लोना को द्वार पर देखता है) अह ! आप भी यहाँ हैं ?

लोना—क्या मैं भी आऊँ ?

रोरलुंद—जितने लोग चाहें । जितने अधिक हों उतना ही अच्छा ।

बर्निक—तुम क्या करनेवाले हो ? (लोना, श्रीमती बर्निक, मार्ता, बीना और हिल्मर का दूसरे कमरे से आगमन)

श्रीमती बर्निक—मि० रोरलुंद, मैंने अधिक से अधिक प्रयत्न किया, पर मैं इन्हें रोक नहीं सकती...

रोरलुंद—मैंं रोकूँगा, श्रीमती बर्निक ! दीना, तुम एक विचारहीन लड़की हो, परन्तु तुम्हें मैं इतना अधिक दोष नहीं देता । तुम्हें बहुत दिनों तक वह नैतिक बल प्राप्त नहीं हुआ, जो तुम्हें दृढ़ रखता । वह बल प्रदान न करने के लिए मैं अपने आपको दोषी समझता हूँ ।

दीना—अब आपको नहीं बोलना चाहिए ।

श्रीमती बर्निक—क्या बात है ?

रोरलुंद—अभी तो मुझे बोलना चाहिए, दीना, यद्यपि तुम्हारे कल और आज के व्यवहार ने मेरा काम दस गुना कठिन बना दिया है । परन्तु, तुम्हारी रक्षा करने की आवश्यकता के सामने दूसरे सब विचारों को दूर कर देना होगा । तुम्हें याद होगा कि तुमने मुझे वचन दिया था; तुम्हें याद होगा कि जब मैं उपयुक्त समय समझूँ तब तुमने क्या उत्तर देने का वचन दिया था । अब मैं अधिक संकोच करने

का साहस नहीं करूँगा । इसलिए.....(जोहन की ओर मुड़ता है)....
यह युवती, जिसे तुम उत्पीड़ित कर रहे हो, मेरी वाग्दत्ता-पत्नी है ।

श्रीमती बर्निक—क्या ?

बर्निक—दीना !

जोहन—यह ? तुम्हारी—?

मार्ता—नहीं नहीं, दीना !

लोना—यह झूठ है ।

जोहन—दीना, यह आदमी सच कह रहा है ?

दीना—(थोड़ा रुककर) हाँ ।

रोरलुंद—मुझे आशा है, इसने तुम्हारी बहकावे की सब कलाओं को शक्तिहीन कर दिया है । मैंने दीना के कल्याण के लिए यह कदम उठाया है और अब इसे सब के सामने घोषित कर देना चाहता हूँ । आशा है, इसका गलत अर्थ न लगाया जायेगा । और श्रीमती बर्निक, मैं समझता हूँ कि अब हमारे लिए सबसे अच्छी बात यह है कि इसे यहाँ से हटा दिया जाए और इसके मन को फिर से शान्ति और स्थिरता प्रदान की जाए ।

श्रीमती बर्निक—हाँ, आओ मेरे साथ । ओह ! दीना ! कैसी सोभाग्यशालिनी हो तुम ! (दीना को बाईं ओर से बाहर ले जाती है ।
रोरलुंद पीछे जाता है ।)

मार्ता—नमस्ते, जोहन ! (चली जाती है)

हिल्मर—(बरामदे के दरवाजे पर) हूँ ! मुझे सचमुच कहना होगा.....

लोना—(जो दीना को देख रही है, जोहन से) खिन्न न हो, मेरे बच्चे ! मैं यहाँ रहूँगी और इस पादरी पर निगाह रखूँगी । (दाहिनी ओर बाहर निकल जाती है)

बर्निक—जोहन, तुम अब 'भारत-बाला' से नहीं जाओगे ?

जोहन—जरूर जाऊँगा ।

बर्निक—पर तुम वापस नहीं आओगे ?

जोहन—आऊँगा ।

बर्निक—इसके बाद भी ? इसके बाद यहाँ क्या करोगे ?

जोहन—तुम सब से बदला लूँगा । तुम में से जितनों को कुचल सकूँ, कुचलूँगा । (दाहिनी ओर बाहर निकल जाता है ।)

[विगेलान्द और कैप बर्निक के कमरे से आते हैं]

विगेलान्द—कागजात तैयार हो गए हैं, मि० बर्निक !

बर्निक—बहुत अच्छा ! बहुत अच्छा !

कैप—(मन्द स्वर में) और मैं समझता हूँ, यह भी निश्चित हो गया है कि 'भारत-बाला' कल रवाना होगी ?

बर्निक—हाँ !

[अपने कमरे में जाता है । विगेलान्द और कैप दाहिनी ओर बाहर चले जाते हैं । हिल्मर उनसे पीछे जा ही रहा था कि ओलफ ने सावधानी के साथ बाईं ओर के दरवाजे से बाहर सिर निकाला ।]

ओलफ—मामा ! हिल्मर मामा !

हिल्मर—उफ ! तुम हो क्या ? तुम ऊपर क्यों नहीं रहते ? मालूम है कि तुम्हें घर में कैद रखा गया है ?

ओलफ—(एक-दो कदम आगे बढ़कर) चुप ! हिल्मर मामा ! आप ने समाचार सुना है ?

हिल्मर—हाँ, मैंने सुना है कि आज तुम्हें खूब मार पड़ी ।

ओलफ—(अपने पिता के कमरे की ओर धमकी की दृष्टि से देखता हुआ) अब वे मुझे कभी नहीं मारेंगे । परन्तु, आपने सुना है कि जोहन मामा कल अमेरिकनों के साथ जानेवाले हैं ?

हिल्मर—उससे तुम्हारा क्या वास्ता ? तुम ऊपर जाओ !

ओलफ—शायद आजकल मैं ही किसी दिन मैं भी भैसों के शिकार के लिए जाऊँगा ।

हिल्मर—बकवास ! तुम्हारा जैसा कायर—

ओलफ—हाँ, जरा ठहरो तो ! कल तुम्हें कुछ सुनने को मिलेगा ।

हिल्मर—मूर्ख ! (बाग से बाहर चला जाता है । ओलफ फिर से कमरे में भाग जाता है और दाहिनी ओर से क्रैप को आता देखकर दरवाजा बन्द कर लेता है ।)

क्रैप—(बर्निक के कमरे के दरवाजे के पास जाकर और उसे थोड़ा खोलकर) क्षमा कीजिए, मि० बर्निक ! मैं आपको फिर कष्ट दे रहा हूँ । परन्तु जोर का तूफान आ गया है—(क्षण भर प्रतीक्षा करता है, परन्तु उत्तर नहीं मिलता) क्या इस पर भी 'भारत-बाला' रवाना होगी ? (थोड़ी देर के बाद)

बर्निक—(अपने कमरे से)—इतने पर भी 'भारत-बाला' रवाना होगी ।

(क्रैप दरवाजा बन्द कर देता है और फिर से दाहिनी ओर बाहर चला जाता है ।)

चतुर्थ अङ्क

[दृश्य—वही कमरा । काम की मेज हटा दी गई है । तूफानी वातावरण । सूर्यास्त के बाद का समय । निम्नलिखित दृश्यों के साथ अंधेरा भी होता जाता है । एक नौकर दीप-वृक्ष सुलगा रहा है । दो नौकरानियाँ फूलदान, दीपक और मोमबत्तियाँ लाती हैं और उन्हें दीवार के पास की मेजों तथा तिपाइयों पर रख देती हैं । रुमेल सज-धज कर कमरे में खड़ा है और नौकरों को निर्देश कर रहा है ।]

रुमेल—जेकब, मोमबत्तियाँ छितराकर रखो । ऐसा न दिख कि यह सब प्रबन्ध विशेष रूप से इस अवसर के लिए किया गया है । आकस्मिक प्रसंग जैसा मालूम होना है, भला ? और ये सब फूल ? अच्छा, रहने दो । शायद ऐसा लगेगा कि ये प्रतिदिन ही यहाँ रहते हैं ।

[बर्निक अपने कमरे से आता है]

बर्निक—(दरवाजे पर रुककर) इसका क्या मतलब है ?

रुमेल—ओह ! मेरे मित्र, आप हैं ? (नौकरों से) अच्छा, अभी तुम लोग जा सकते हो । (नौकर बाहर जाते हैं)

बर्निक—परन्तु रुमेल, इसका मतलब क्या है ?

रुमेल—इसका मतलब है कि आपके जीवन का सर्वाधिक गौरवमय क्षण आ गया है । आपके नागरिक भाई जुलूस बनाकर आपका—नगर के प्रथम पुरुष का—सम्मान करने के लिए आ रहे हैं ।

बर्निक—क्या ?

रुमेल—जुलूस बनाकर झंडों और बैंड के साथ ! हमारे पास मशालें भी होनी चाहिए थीं, परन्तु इस तूफानी वातावरण में हमने वह जोखिम उठाना ठीक नहीं समझा । रोशनी होगी और, आप जानते हैं, अखबारों में इसकी ध्वनि बड़ी प्यारी लगती है ।

बर्निक—सुनो रुमेल, इस सब में मैं शामिल नहीं हो सकता !

रुमेल—परन्तु, अब तो बहुत विलम्ब हो गया । आधे घंटे में वे यहाँ पहुँच जायेंगे ।

बर्निक—तुमने मुझ से पहले क्यों नहीं कहा ?

रुमेल—केवल इसलिए कि मुझे भय था, आप आपत्ति करेंगे । परन्तु मैंने आपकी श्रीमतीजी से परामर्श कर लिया था । उन्होंने मुझे व्यवस्था की जिम्मेदारी लेने की अनुमति दी और स्वयं जल-पान की व्यवस्था करना स्वीकार किया ।

बर्निक—(सुनता हुआ) यह आवाज क्या है ? क्या आ ही रहे हैं ? मुझे गाना जैसा सुनाई पड़ता है ।

रुमेल—(बरामदे के दरवाजे पर जाकर) गाना ? अरे, वे तो अमेरिकन हैं ! 'भारत-वाला' को समुद्र में ले जा रहे हैं ।

बर्निक—ले जा रहे हैं ? अरे, हाँ ! नहीं रुमेल, आज शाम को मैं हाजिर नहीं हो सकता । मैं अस्वस्थ हूँ ।

रुमेल—आप जरूर अस्वस्थ दीखते हैं । परन्तु आपको बल बटोरना ही चाहिए । रोग-दोख शैतान ले जाए—तुम्हें तैयार होना ही है । सान्दस्ताद, विगेलान्द और मैं, सभी इस कार्यक्रम को पूरा करना बहुत महत्व का समझते हैं । हमें ययासम्भव लोकमत की अभिव्यक्ति के अधिकतम भार के तले अपने विरोधियों को कुचल डालना है । नगर में अफवाहें फैल रही हैं । हम भूमि की खरीद की घोषणा को अब अधिक रोक नहीं सकते । यह बिल्कुल आवश्यक है कि आज के उत्साह और सद्भावनापूर्ण वातावरण में आप उन्हें सूचित कर दें कि आपने समाज के कल्याण के लिए कितना बड़ा भार अपने कंधों पर उठाया है । इस वातावरण में आप आश्चर्यजनक काम कर सकते हैं । यह वातावरण जरूरी है; इसके बिना काम नहीं चलेगा ।

बर्निक—हाँ हाँ !...

रुमेल—और विशेषतः ऐसे अवसर पर, जब कि इतनी नाजुक और

विषम बात तय करनी है। ईश्वर को धन्यवाद है कि तुम्हारा यश बल प्रदान करने वाला है। फिर भी, हमें कुछ प्रबन्ध तो करना ही होगा। मिस्टर हिल्मर, तोनेसन ने तुम्हारी प्रशंसा, में एक कविता लिखी है। वह बड़े मनोमुग्धकारी शब्दों से आरम्भ होती है 'आदर्श की ध्वजा ऊँची उठाओ !' और मिस्टर रोरलुंद ने भाषण देने का काम लिया है। अवश्य ही, तुम्हें उत्तर देना होगा।

बर्निक—आज रात को मैं यह नहीं कर सकता, रुमेल ! क्या तुम--?

रुमेल—असम्भव है—मैं चाहूँ तो भी; क्योंकि आप कल्पना कर सकते हैं, उनका भाषण विशेष रूप से आपको सम्बोधित करके होगा। अलबत्ता, यह सम्भव है कि वे एक-एक दो-दो शब्द हम सबके विषय में भी कहें। मैंने विगेलान्द और सान्दस्ताद से इस बारे में कह दिया है। हमारा खयाल यह है कि उत्तर देते हुए आप 'समाज की समृद्धि की कामना' करें। सान्दस्ताद समाज की विभिन्न श्रेणियों के बीच हेलमेल के बारे में कुछ शब्द कहेंगे। बाद में विगेलान्द आशा व्यक्त करेंगे कि यह नई योजना उस नैतिक आधार में उथल-पुथल पैदा न करे, जिस पर हमारा समाज खड़ा हुआ है। और मैंने थोड़े से शब्द में बताने का विचार किया है कि हमारी महिलाओं का काम यद्यपि बहुत दिखावे का नहीं है, फिर भी अपना महत्व रखता ही है। परन्तु आप तो मेरी बात सुन ही नहीं रहे हैं—

बर्निक—मैं सुन रहा हूँ। परन्तु यह तो बताओ, तुम समझते हो कि समुद्र में तूफान बहुत जोरों का है ?

रुमेल—क्यों ? आप 'तालतन' के बारे में घबरा रहे हैं ? क्यों ? उसका तो पूरा-पूरा बीमा है।

बर्निक—हाँ, उसका बीमा है, परन्तु—

रुमेल—और मरम्मत ठीक हो ही गई है—यही मुख्य बात है।

बर्निक—हँ ! मान लो किसी जहाज को कुछ हो ही गया तो उसका

मतलब यह तो नहीं होता कि मानव-प्राणों को खतरा है ? नहीं, जहाज और माल खो सकता है, लोगों के सन्दूक और कागजात भी जा सकते हैं—

रुमेल—भगवान का नाम लीजिए । सन्दूकों और कागजों का क्या बड़ा मूल्य है ?

बर्निक—बहुत मूल्य नहीं ! नहीं, नहीं ! मेरा केवल यह मतलब था—अरे, फिर से आवाजें सुनाई पड़ रही हैं !

रुमेल—ये आवाजें 'ताल तर' में हैं !

[दाहिनी ओर से विगेलान्द का प्रवेश]

विगेलान्द—हाँ, वे 'तालतर' को निकाल रहे हैं मि० बर्निक !

बर्निक—और तुम समुद्र यात्री की हैसियत से अब भी इस मत के हो कि—

विगेलान्द—मैं ईश्वर पर भरोसा करता हूँ, मि० बर्निक ! मैं खुद जहाज पर गया था और कुछ परचे बाँट आया हूँ । मुझे आशा है, वे वरदान-वाहक सिद्ध होंगे ।

[सान्दस्ताद ओर क्रैप दाहिनी ओर से आते हैं]

सान्दस्ताद—(दरवाजे पर किसी से) अच्छा, यदि वह पार पहुँच जाता है, तो कोई भी चीज पहुँच जायेगी । (अन्दर आता है) नमस्ते !

बर्निक—क्या हो गया, क्रैप ?

क्रैप—मैं कुछ नहीं कहता, मि० बर्निक !

सान्दस्ताद—'भारत-बाला' के सारे खलासी शराब पिये हुए हैं । मैं अपनी प्रतिष्ठा की बाजी लगाकर कहता हूँ कि वे जीवित नहीं पहुँचेंगे (लोना दाहिनी ओर से आती है ।)

लोना—अब मैं उसके बदले उसका नमस्ते कह सकती हूँ ।

बर्निक—वह जहाज पर चला गया क्या ?

लोना—नहीं गया तो अब चला जायगा । मैंने उसे होटल में छोड़ा था ।

बर्निक—और वह अपने इरादों पर दृढ़ है ?

लोना—चट्टान के समान टढ़ है ।

रुमेल—(खिड़की पर टटोलता हुआ)—आग लगे इन नये-नये आविष्कारों में । मैं परदे भी बन्द नहीं कर सकता ।

लोना—डालना चाहते हो ? मैं तो समझी थी कि उलटे—

रुमेल—हाँ, डालना चाहता हूँ । शायद आप जानती हैं कि हवा में क्या फैला हुआ है ?

लोना—हाँ हाँ ! लाओ मैं मदद कर दूँ । मैं अपने बहनोई पर परदा डाल दूँगी—यद्यपि पसन्द तो मुझे यह है कि उसे उठा दूँ ।

रुमेल—बाद में वह भी कर सकती हैं । जब बाग में लोगों की भीड़ हो जायेगी तब परदे हटा दिये जायेंगे और सब लोग एक आश्चर्य-चकित और सुखी परिवार को देख सकेंगे । नागरिकों का जीवन ऐसा होना चाहिए कि वे शीशे के मकानों में रह सकें ।

[बर्निक मुँह खोलता है, मानो कुछ कहने वाला हो, परन्तु वह शीघ्रता के साथ मुड़ता है और अपने कमरे में चला जाता है]

रुमेल—आओ, अंतिम परामर्श कर लें । मि० क्रेप, आप भी आइए । आपको ब्योरे सम्बन्धी एक-दो बातों की जानकारी देकर हमारी सहायता करनी होगी । (सब पुरुष बर्निक के कमरे में चले जाते हैं । लोना ने खिड़कियों पर परदे डाल दिये हैं और दरवाजों पर डाल ही रही हैं कि ओलफ ऊपर के कमरे से बाग की सीढ़ियों पर कूद पड़ता है । वह कन्धे पर कपड़े ओढ़े हुए है और हाथ में एक पोटली लिये है ।)

लोना—हाय ! बेटा, तू ने मुझे कितना डरा दिया ?

ओलफ—(पोटली छिपाता हुआ)—चुप-चुप ! मौसी ।

लोना—क्या तू खिड़की से कूद पड़ा ? कहाँ जा रहा है ?

ओलफ—चुप ! कुछ बोलिए मत ! मैं जोहन मामा के पास जाना चाहता हूँ—केवल घाट तक । केवल उनको नमस्ते करने के लिए ! नमस्ते मौसी !

[बाग से दौड़कर बाहर चला जाता है] .

लोना—नहीं नहीं, रुक जाओ भोलफ !—भोलफ !

[जोहन यात्रा के लिए कपड़े पहने हुए, अपने कंधे पर एक भोला लटकाये, दाहिनी ओर के दरवाजे से सावधानी के साथ अन्दर आता है ।]

जोहन—लोना !

लोना—क्या ! फिर लौट आये ?

जोहन—अभी कुछ मिनट शेष हैं । मुझे एक बार फिर उससे मिलना है । हम इस प्रकार जुदा नहीं हो सकते । (बाईं ओर, दूर का दरवाजा खुलता है और मार्ता तथा दीना अन्दर आती हैं । दीना के हाथ में एक छोटा-सा सन्दूक है ।)

दीना—मुझे उनके पास जाने दो ! उनके पास जाने दो !

मार्ता—हाँ, तुम जाओगी, दीना !

दीना—वे यहीं तो हैं—वह देखो !

जोहन—क्या ?

लोना—तुम सचमुच जाना चाहती हो ?

दीना—हाँ, मुझे अपने साथ ले जाइए । उस आदमी ने मुझे लिखा है कि आज वह सबके सामने घोषणा करेगा ।

जोहन—दीना ! तुम उससे प्रेम नहीं करती ?

दीना—मैंने कभी उससे प्रेम नहीं किया । मैं उससे विवाह करने के बदले डूब मरना पसन्द करूँगी । हाय ! उसने अपने कृपासूचक व्यवहार से कल मेरा कितना अपमान किया था ! उसने कितना साफ कर दिया था कि मैं एक गरीब, तिरस्कृत जीव को अपने स्तर पर उठा रहा हूँ ! मैं अब तिरस्कृत नहीं होना चाहती । मैं जाना चाहती हूँ । क्या मैं आपके साथ जा सकती हूँ ?

जोहन—हाँ हाँ, हजार बार हाँ !

दीना—मैं बहुत दिनों तक आपका भार बनी नहीं रहूँगी । केवल वहाँ पहुँचने में मेरी सहायता कीजिए—केवल शुरू-शुरू में ठीक रास्ते पर

लगाने में मुझे मदद कीजिए.....!

जोहन—हुर्रा ! तो आखिरकार सब ठीक हो गया दीना !

लोना—(बनिक के दरवाजे की ओर संकेत करके)—शू शू शू !
धीरे ! धीरे !

जोहन—दीना, मैं तुम्हारी हिफाजत करूँगा ।

दीना—मैं आपको यह नहीं करने दूँगी । मैं अपनी हिफाजत स्वयं करना चाहती हूँ । मुझे विश्वास है, वहाँ मैं कर सकूँगी । केवल मुझे यहाँ से निकल जाने दीजिए । ओह ! ये स्त्रियाँ ! इन्होंने भी आज मुझे पत्र लिखा है कि मैं अपने सौभाग्य को महसूस करूँ । इन्होंने मुझे बताना चाहा है कि उसने कितने विशाल हृदय का परिचय दिया है । कल, और बाद में प्रत्येक दिन, ये देखती रहेंगी कि मैंने अपने-आपको लायक बनाने का प्रयत्न किया या नहीं । मैं इस सब भलमनसाहत से थक गई हूँ, ऊब गई हूँ !

जोहन—जरा बताओ, दीना ! क्या सिर्फ यही कारण है, जिससे तुम जाना चाहती हो ? मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं हूँ ?

दीना—तुम मेरे लिए दुनिया में सबसे अधिक हो, जोहन !

जोहन—अह ! दीना !

दीना—यहाँ प्रत्येक व्यक्ति मुझ से कहता है कि मैं तुम से द्वेष और घृणा करूँ । यह मेरा कर्त्तव्य है !—परन्तु मैं नहीं समझ पाती कि यह मेरा कर्त्तव्य है—कभी नहीं समझ सकूँगी ।

लोना—अब आगे समझना नहीं होगा, मेरी प्यारी दीना !

मार्ता—नहीं, सचमुच नहीं । और इसीलिए तुम इनके साथ इनकी पत्नी के रूप में जाओगी ।

जोहन—हाँ ! हाँ !

लोना—अच्छा ! मार्ता, मुझे चुम्बन दे ! मैंने तुझ से कभी इसकी आशा नहीं की थी ।

मार्ता—नहीं, मैंने खुद आशा न की होती । परन्तु यह कभी न कभी

फूट पड़ने वाला था ही। अह ! हमें अर्द्धतों और प्रथाओं का कितना अत्याचार सहना पड़ता है ! इस अत्याचार के विरुद्ध डट जाओ, दीना ! इनकी पत्नी बनो। मैं देखूँ तुम्हें इन सारी रुढ़ियों का मुकाबला करते !

जोहन—तुम्हारा क्या उत्तर है, दीना ?

दीना—हाँ, मैं आपका वरण करूँगी।

जोहन—दीना !

दीना—परन्तु, सबसे पहले मैं काम करना चाहती हूँ—अपने आपको कुछ योग्य बना लेना चाहती हूँ, जैसा कि आपने किया है। मैं सिर्फ ऐसी कोई चीज नहीं बनूँगी, जो उठाकर ले ली जाती है।

लोना—बिल्कुल ठीक। यही तरीका है।

जोहन—अच्छा, मैं ठहरूँगा और आशा करता रहूँगा।

लोना—और जीतकर प्राप्त करना, मेरे बच्चे ! परन्तु अब तुम्हें जहाज पर जाना चाहिए।

जोहन—हाँ, जहाज पर। परन्तु लोना, मेरी प्यारी बहन, थोड़ी सी बात तुम्हारे साथ ! देखो—(पृष्ठभूमि पर ले जाता है और जल्दी-जल्दी बातें करता है)

मार्ता—दीना, भाग्यशालिनी लड़की ! आ तुझे देख लूँ और तेरा चुम्बन कर लूँ आखिरी बार।

दीना—आखिरी बार नहीं, मेरी प्यारी मौसी, हम फिर मिलेंगे।

मार्ता—नहीं, कभी नहीं। वचन दो, दीना, कि कभी लौटोगी नहीं। (उसके हाथ पकड़ लेती है और उसे देखती है) अब जाओ, अपने सुख-लोक को, मेरी प्यारी बच्ची,—समुद्र के उस पार ! अपने स्कूल के कमरे में बैठे-बैठे मैंने कितनी बार वहाँ जाने की लालसा की है। वह स्थान बड़ा सुन्दर होना चाहिए ! वहाँ आसमान यहाँ से बहुत ऊँचा है। प्रवृत्त पवन मनुष्य के शिर की चारों ओर केलि करता रहता है।

दीना—ओ मार्ता मौसी ! किसी न किसी दिन तुम भी वहाँ

आओगी ।

मार्ता—मैं ? कभी नहीं, कभी नहीं । मेरा छोटा-सा काम यहाँ है । और अब सचमुच मेरा विश्वास है कि मैं अपने लिए उचित ढंग से जी सकती हूँ ।

दीना—मैं तुम से अलग हान का कल्पना नहीं कर सकता ।

मार्ता—अह ! आदमी बहुत-कुछ से अलग हो सकता है, दीना ! (उसका चुम्बन करती है) परन्तु मेरी कामना है, तुम्हें उसका अनुभव कभी न हो । मेरे प्यारी बेटी ! वचन दो कि उसे सुखी करोगी ।

दीना—मैं कोई वचन नहीं दूँगी । मैं वचन से द्वेष करती हूँ । परिस्थितियाँ अपने-आप बनें ।

मार्ता—हाँ हाँ, सच है ! जो कुछ हो, वही बनी रहो—अपने प्रति सच्ची—श्रद्धामयी ।

दीना—ऐसा ही करूँगी, मौसी !

लोना—(अपनी जेब में कुछ कागज रखती हुई, जो जोहन ने दिये हैं) उत्तम ! उत्तम ! मेरे प्यारे बच्चे ! परन्तु अब तुम्हें जाना ही चाहिए ।

जोहन—अब समय नहीं रहा । नमस्ते लोना, और धन्यवाद—तुम्हारे इतने प्रेम के लिए ! नमस्ते मार्ता ! और तुम्हें भी धन्यवाद—तुम्हारी निष्ठामयी मैत्री के लिए !

मार्ता—नमस्ते जोहन ! नमस्ते दीना ! तुम दोनों सारे जीवन सुखी रहो ! (मार्ता और लोना उन्हें पीछे के दरवाजे पर ले जाती हैं । जोहन और दीना शीघ्रता के साथ सीढ़ियाँ उतरते हैं और बाग में से निकल जाते हैं । लोना दरवाजा बन्द कर देती है और उस पर पर्दा खींच देती है ।)

लोना—अब हम अकेली हैं, मार्ता ! तुमने दीना को खो दिया, मैंने जोहन को ।

मार्ता—तुमने—उसे खो दिया ?

लोना—ओह ! मैंने आधा तो उसे वहीं खो दिया था ! लड़का अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए व्याकुल था । इसीलिए मैंने घर की याद का बहाना किया !

मार्ता—तो यह बात थी ? तब तो मैं समझ गई, तुम क्यों आई ? परन्तु वह तुम्हें फिर से बुलायेगा, लोना !

लोना—वृद्धा अर्ध-भगिनी ! अब उसे मेरा क्या उपयोग ? पुरुष अपना सुख प्राप्त करने के लिए बहुत से अत्यन्त प्यारे बन्धन तोड़ देने हैं ।

मार्ता—हाँ, कभी-कभी ऐसा ही होता है ।

लोना—परन्तु हम दोनों साथ रहेंगी, मार्ता !

मार्ता—क्या तुम्हारे पास मेरा कोई स्थान हो सकता है ?

लोना—तुम से ज्यादा किसका हो सकता है ?—हम दो अर्ध-भगिनियाँ ! हम दोनों ने ही अपने बच्चों को नहीं खो दिया ? अब हम अकेली हैं !

मार्ता—हाँ, अकेली ! और इसलिए तुम्हें यह भी मालूम होना चाहिए—मैंने उसे दुनिया में सबसे अधिक प्यार किया है ।

लोना—मार्ता ! (उसका हाथ पकड़ लेती है) क्या यह सच है ?

मार्ता—मेरा सारा अस्तित्व ही इन शब्दों में भरा है ! मैंने उससे प्रेम किया और उसकी प्रतीक्षा की । प्रत्येक गर्मी में मैंने उसके आने की आशा की । आखिर वह आया—परन्तु उसे मेरा कोई आकर्षण नहीं था !

लोना—तुम उससे प्रेम करती रही, और तुमने खुद उसका सुख उसके हाथों में सौंपा !

मार्ता—मैं उससे प्रेम करती थी, तो उसका सुख उसके हाथों में सौंपना मेरा कर्तव्य नहीं था ? हाँ, मैंने उससे प्रेम किया है ! मेरा सारा जीवन उसके लिए ही रहा है—जब से वह गया ! तुम पूछोगी, आशा के लिए मेरे पास क्या आधार था ? कुछ तो था ही । परन्तु जब वह वापस आया तो ऐसा लगा मानो सब कुछ उसके दिमाग से पँछ गया है । उसे

मेरा कोई आकर्षण नहीं था ।

लोना—क्या दीना के कारण तुम पर आवरण पड़ गया, मार्ता ?

मार्ता—सो तो अच्छा ही हुआ । जब वह गया था, हम दोनों एक ही आयु के थे । परन्तु जब मैंने उसे फिर से देखा—ओह ! वह भय-जनक क्षण ! मैंने महसूस किया कि मैं उससे दस वर्ष बड़ी हूँ ! वह दमकते, निखरे हुए सूर्य-प्रकाश में गया था और उसने प्रत्येक श्वास से यौवन और स्वास्थ्य का उपार्जन किया । और उस समय मैं यहाँ बैठी अपना तार कातती रही..... ।

लोना—उसके सुख का तार कातती रहीं, मार्ता !

मार्ता—हाँ, मैंने स्वर्ण-तार काता । कोई कटुता नहीं ! हम दोनों उसकी दो अच्छी बहनें रहीं, नहीं लोना ?

लोना—(उसे अपनी भुजाओं में भरती हुई) मार्ता !

[बर्निक अपने कमरे से आता है]

बर्निक—(अपने कमरे के दूसरे लोगों से) हाँ हाँ जैसा चाहो, प्रबन्ध करो । समय आने पर मैं बेल प्राप्त कर लूँगा—(दरवाजा बन्द कर देता है) अह ! तुम यहाँ हो । देखो, मार्ता ! मैं सोचता हूँ, अच्छा हो कि तुम अपने कपड़े बदल लो । और बेती से भी कहो । मैं कुछ लम्बा-चौड़ा आयोजन नहीं चाहता—कुछ सरल-स्वाभाविक, परन्तु व्यवस्थित । देखो शीघ्रता करो ।

लोना—और मुखमण्डल सुदीप्त, प्रसन्न हो, मार्ता ! तुम्हारे नेत्रों से आनन्द टपकना चाहिए ।

बर्निक—ओलफ को भी नीचे आना है । मैं उसे अपने पास रखूँगा ।

लोना—हूँ ! ओलफ !...

मार्ता—मैं बेती को तुम्हारा संदेश देती हूँ ।

[बाईं ओर के दरवाजे से चली जाती हैं]

लोना—तो, यह महान् और गम्भीर क्षण आ गया है ।

बर्निक—(बेचैनी से इधर-उधर घूमता हुआ) हाँ, आ गया है !

लोना—ऐसे समय पर आदमी को गौरव और आनन्द महसूस होता होगा ।

बर्निक—(उसकी ओर देखकर) हूँ !

लोना—सुनती हूँ कि सारे नगर में रोशनी की जायेगी ।

बर्निक—हाँ, उनके दिमाग में वैसी ही कुछ बात है ।

लोना—सारे क्लब अपनी-अपनी पताकाओं के साथ एकत्र होंगे । तुम्हारा नाम अग्नि के अक्षरों में दमकेगा ! आज रात देश के सब भागों में समाचार फैल जायेगा “अपने सुखी परिवार के बीच समाज के एक स्तम्भ के रूप में श्री बर्निक ने अपने नगर-बन्धुओं का अभिनन्दन प्राप्त किया ।”

बर्निक—ऐसा ही है, और वे बाहर जय-जयकार करेंगे और भीड़ मेरे घर के सामने कोलाहल करेगी और मैं बाहर निकलकर उनका अभिवादन करने और उन्हें धन्यवाद देने के लिए बाध्य हो जाऊँगा ।

लोना—बाध्य....!

बर्निक—तुम समझती हो, उस समय मैं आनन्द का अनुभव करूँगा ?

लोना—नहीं, मैं नहीं मानती कि तुम्हें इतना-बहुत आनन्द होगा ।

बर्निक—लोना, तुम मेरा तिरस्कार कर रही हो ।

लोना—अब तक तो नहीं ।

बर्निक—और तुम्हें कोई अधिकार नहीं है मेरा तिरस्कार करने का—कोई अधिकार नहीं । लोना, तुम नहीं जानती, इस जकड़े हुए और बौने समाज में मैं कितना अकेला हूँ । इस समाज में वर्ष-प्रतिवर्ष मुझे अपने पूर्णतर जीवन की महत्वाकांक्षाओं का गला घोटना पड़ा है । मेरा काम अनेकांगी भले ही दीखता हो, परन्तु वास्तव में मैंने पूर्ण क्या किया है ? छितरी-बितरी चीजें, कबाड़ ! यहाँ के लोग और कुछ सहन ही नहीं कर सकते । यदि मैं प्रचलित विचारों से एक कदम भी आगे बढ़ने का प्रयत्न करूँ तो मेरा सारा प्रभाव नष्ट हो जायेगा । तुम जानती हो, हम क्या हैं—हम, जो समाज के स्तम्भ माने जाते हैं ? हम समाज के

अजीबारों से कम या ज्यादा कुछ नहीं हैं !

लोना—तुमने अभी यह महसूस करना क्यों शुरू किया ?

बर्निक—क्योंकि हाल में—जब से तुम वापस आई—मैंने बहुत सोचा है; और आज शाम को हमेशा से अधिक गम्भीरता के साथ सोचा है ! आह ! लोना मैं तुम्हें उस समय क्यों नहीं पहचान सका—उन शुरू के दिनों में ?

लोना—और यदि तुमने पहचाना होता ?

बर्निक—मैंने तुम्हें जाने न दिया होता । और यदि तुम मेरे पास होतीं तो इस स्थिति में न रहता, जिसमें आज हूँ ।

लोना—और तुम यह कभी नहीं सोचते कि वह—वह, जिसे तुमने मेरे स्थान पर चुना—तुम्हारे लिए क्या हो सकती थी ?

बर्निक—इतना तो जानता हूँ कि मुझे जिसकी आवश्यकता थी वह मैं उसमें कभी नहीं पा सका ।

लोना—क्योंकि तुमने अपनी दिलचस्पियों को उसके साथ कभी बँटाया ही नहीं । क्योंकि तुमने उसे अपने साथ खुलकर पूरा विचार-विनिमय करने का अवसर ही नहीं दिया । क्योंकि तुमने उसके एक प्रियजन पर लज्जाजनक अपराध का आरोप करके उसे आत्मग्लानि के सागर में डुबा दिया ।

बर्निक—हाँ हाँ ! यह सब झूठ बोलने और धोखा देने का परिणाम है ।

लोना—फिर, इस सब असत्य और प्रवचना से मुक्त क्यों नहीं हो जाते ?

बर्निक—अब ? अब बहुत विलम्ब हो गया, लोना !

लोना—कास्टन, मुझे बताओ—इस सब दिखावे और प्रवचना से तुम्हें क्या संतोष मिलता है ?

बर्निक—स्वयं मुझे कोई संतोष नहीं मिलता । एक दिन मैं तिरोहित हो जाऊँगा, और मेरे साथ गोलमालियों का यह सारा समाज भी । परन्तु

एक पीढ़ी उठ रही है, जो हमारे पीछे आयेगी। मैं काम करता हूँ—अपने लड़के के लिए, उसके लिए मैं जीवन-प्रगति का कार्यक्रम तैयार कर रहा हूँ। एक समय आयेगा जब समाज के जीवन में सत्य का प्रवेश होगा और उस नींव पर वह अपने पिता की अपेक्षा अधिक सुखमय जीवन का निर्माण कर सकेगा।

लोना—सब बातों की तह में असत्य के साथ ? सोचो, तुम अपने पुत्र को किस प्रकार का उत्तराधिकार देनेवाले हो ?

बर्निक—(दबी हुई निराशा के स्वर में) तुम जितना सोचती हो उससे हजार गुना खराब है। परन्तु किसी न किसी दिन अभिशाप का आवरण उठेगा अवश्य, और फिर भी—(आवेश के साथ) मैंने यह सब अपने सिर पर कैसे लाद लिया ! परन्तु अब हो चुका है, मुझे भार लेकर ही चलते रहना होगा। तुम मुझे कुचलने में कदापि सफल नहीं होगी !

[हिल्मर उत्तेजना के साथ शीघ्रतापूर्वक दाहिनी ओर से आता है। उसके हाथ में एक खुला पत्र है।]

हिल्मर—परन्तु यह तो—बेती ! बेती !

बर्निक—क्या बात है ? लोग आ रहे हैं क्या ?

हिल्मर—नहीं नहीं, परन्तु मुझे तुरन्त किसी से बात करनी है। (बाईं ओर के दरवाजे से बाहर जाता है।)

लोना—कास्तन, तुम कहते हो, हम तुम्हें कुचलने के लिए यहाँ आये हैं। परन्तु मैं बताऊँ कि वह घर लौटकर आया हुआ 'पश्चात्तापी' व्यक्ति, जिसे तुम्हारे सदाचारी समाज ने ऐसे दूर-दूर रखा, मानो उसे प्लेग होगया हो, किस धातु का बना है। वह तुम सब के बिना काम चला सकता है, क्योंकि अब वह दूर चला गया है।

बर्निक—परन्तु उसने कहा—वह वापस आयेगा।

लोना—जोहन कभी वापस नहीं आयेगा। वह सदा के लिए चला गया—और उसके साथ दीना भी।

बर्निक—कभी नहीं आयेगा ?—और दीना उसके साथ ?

लोना—हाँ, उसकी पत्नी बनने के लिए । यह है उन दोनों की चपत तुम्हारे सद्गुणी समाज के मुँह पर—जैसी एक बार मैंने लगाई थी । परन्तु इसकी परवाह न करो ।

बर्निक—गया—और दीना भी—‘भारत-बाला’ में...

लोना—नहीं, वह इतना मूल्यवान माल उस जहाज के दुर्वृत्त कर्मचारियों को सौंपने के लिए तैयार नहीं था । जोहन और दीना ‘तालतर्’ में हैं ।

बर्निक—अह ! तो सब व्यर्थ ही हुआ !—(अपने कमरे के दरवाजे पर शीघ्रता से जाता है, उसे खोलता है और पुकारता है) क्रेप, ‘भारत-बाला’ को रोक दो ! वह आज रात को रवाना न हो ।

क्रेप—(अन्दर से) ‘भारत-बाला’ तो पहले ही रवाना हो चुकी मि० बर्निक !

बर्निक—(दरवाजा बन्द करके और मन्द स्वर में बोलते हुए) बहुत विलम्ब हो गया—और सब-कुछ व्यर्थ—!

लोना—क्या कह रहे हो ?

बर्निक—कुछ नहीं, कुछ नहीं । मुझे अपने-आप पर छोड़ दो ।

लोना—हूँ ! देखो, कार्स्टन ! जोहन अपना अच्छा नाम और यश, जो उसने एक बार तुम्हें उधार दिया था, और वह भी, जो तुमने उसकी अनुपस्थिति में चुरा लिया, मुझे सौंप गया है । जोहन अपना मुँह बन्द रखेगा । और मैं जैसा चाहूँ उस मामले में कर सकती हूँ । देखो, मेरे हाथ में वे दो पत्र मौजूद हैं ।

बर्निक—तुम्हारे पास हैं ? और तुम्हारा इरादा है—आज ही—शायद जब जुलूस आयेंगा—

लोना—मैं यहाँ तुम्हारा रहस्योद्घाटन करने नहीं आई, तुम्हारे अन्तरात्मा को उकसाने आई थी, जिससे तुम स्वयं स्वेच्छा से सब-कुछ कह दो । इसमें मैं सफल नहीं हुई । इसलिए, अब तुम जैसे हो, बने रहो—अपना जीवन असत्य की आधार-शिला पर खड़ा किये । देखो, मैं

तुम्हारे दोनों पत्र टुकड़े-टुकड़े किये डालती हूँ। लो ये टुकड़े—! अब तुम्हारे विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं रहा। अब तुम सुरक्षित हो—हो सके तो मुखी भी हो जाओ।

बर्निक—(बहुत विचलित होकर) लोना, तुम ने यह पहले ही क्यों नहीं कर डाला ? अब बहुत विलम्ब हो गया—अब मुझे जीवन अच्छा नहीं लगता। आज से मेरा जीवन असह्य हो गया।

लोना—क्या हो गया ?

बर्निक—मुझ से पूछो मत। परन्तु, कुछ भी हो, मुझे जीवित रहना तो होगा ही। मैं जीऊँगा—ओलफ के लिए। वह सब बातों का बदला चुका देगा—प्रायश्चित्त कर लेगा।

लोना—कास्टन ! (हिल्मर का शीघ्रता से प्रवेश)

हिल्मर—कोई नहीं है घर में ! सब बाहर गये हैं—बेती भी !

बर्निक—तुम्हें हुआ क्या है ?

हिल्मर—तुमको बताने की हिम्मत नहीं है, बर्निक !

बर्निक—है क्या ? मुझे बताना ही चाहिए।

हिल्मर—बहुत अच्छा—ओलफ 'भारत-बाला' द्वारा भाग गया है।

बर्निक—(पीछे टकराता हुआ)—ओलफ—'भारत-बाला' में ! नहीं, नहीं !

लोना—हाँ, ठीक है ! अब मैं समझी। मैंने उसे खिड़की से कूदते देखा था।

बर्निक—(निराश वाणी में पुकारता है) क्रैप ! किसी भी मूल्य पर 'भारत-बाला' को रोको !

क्रैप—असंभव है, श्रीमान ! कैसे...?

बर्निक—हमें उसे रोकना ही होगा। ओलफ उसमें है—

क्रैप—क्या ?

रमेल—(बर्निक के कमरे से निकलता हुआ)—ओलफ भाग गया ?
असंभव !

सान्दस्ताद—(उसके पीछे जाकर) वह पाइलट के साथ वापस भेज दिया जायेगा, मि० बर्निक !

हिल्मर—नहीं, नहीं, उसने मुझे पत्र लिखा है । (पत्र दिखाता है) वह कहता है—जब तक जहाज खुले समुद्र में नहीं पहुँच जायेगा, मैं सामान के बीच छिपा रहूँगा ।

बर्निक—अब मैं उसे कभी न देख पाऊँगा !

रुमेल—क्या निरर्थक बात है—एक अच्छा, मजबूत जहाज । अभी-अभी मरम्मत की गई है ।

विगेलान्द—(जो दूसरों के पीछे बर्निक के कमरे से निकला है)—और आपके अपने कारखाने में, मि० बर्निक !

बर्निक—मैं कहता हूँ—मैं उसे अब कभी न देख पाऊँगा ! मैंने उसे खो दिया, लोना ! और—अब मैं देख रहा हूँ—वह सचमुच कभी मेरा नहीं रहा । (सुनता है)—वह क्या है ?

रुमेल—संगीत । जुलूस आ रहा होगा ।

बर्निक—मैं उसमें शामिल नहीं हो सकता—शामिल नहीं होऊँगा ।

रुमेल—क्या कह रहे हो ? यह असंभव है ।

सान्दस्ताद—असंभव है, मि० बर्निक ! जरा सोचो तो सही, तुम्हारा क्या बाजी पर चढ़ा है ।

बर्निक—अब उस सब से मेरा क्या संबंध ? अब मुझे किसके लिए काम करना है ?

रुमेल—तुम पूछते ही हो तो हमारे लिए, समाज के लिए !

विगेलान्द—बिल्कुल सही ।

सान्दस्ताद—और निश्चय ही, मि० बर्निक, आप भूले नहीं होंगे कि हमने...

[मार्ता बाईं ओर के दूर के दरवाजे से आती है । सड़क पर, दूर, बाजा-गाजा सुनाई पड़ता है]

मार्ता—जुलूस पहुँचने ही वाला है । परन्तु बेती घर में नहीं है । पता

नहीं कहाँ...

बर्निक—घर में नहीं है ? यह बात ! देखा, लोना ? मुझे कोई सहायता नहीं—न सुख में न दुख में !

रुमेल—पदें डाल दो ! आओ, मदद करो मुझे, मि० क्रैप ! और आप भी मि० सान्दस्ताद ! दयनीय बात है कि परिवार में इस समय एकता नहीं है । यह पूर्व-निश्चित कार्य-क्रम के बिल्कुल विपरीत है ।

[सब पदें डाल देते हैं । सारी सड़क पर रोशनी की हुई दिखलाई पड़ती है । घर के सामने एक बड़ा पारदर्शक पट लगा हुआ है, जिस पर दीपकों से लिखा है, 'समाज के स्तम्भ कार्स्टन-बर्निक चिरजीवी हों !']

बर्निक—(चिल्लाकर) वह सब निकाल दो; मैं उसे नहीं देखना चाहता ! बुझा दो, बुझा दो !

रुमेल—क्षमा कीजिए, मि० बर्निक, आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है क्या ?

मार्ता—लोना, इन्हें क्या हो गया है ?

लोना—चुप ! (उसके कान में कुछ कहती है)

बर्निक—मैं कहता हूँ, वह व्यंग्यपूर्ण पट दूर करो । तुम देख नहीं सकते कि ये सब दीपक हम पर हँस रहे हैं ?

रुमेल—सचमुच मुझे स्वीकार करना पड़ेगा...

बर्निक—ओह ! तुम कैसे समझ सकते हो ! परन्तु मैं, मैं—! यह सब शव-गृह में मोमबत्तियों के समान है !

रुमेल—आप बात को जरूरत से ज्यादा गम्भीर बना रहे हैं, मि० बर्निक !

सान्दस्ताद—बच्चा अटलांटिक की यात्रा का आनन्द लेगा । फिर तुम्हारे पास वापस आ जायेगा ।

विगेलान्द—सर्वशक्तिमान पर भरोसा कीजिए, मि० बर्निक !

रुमेल—और जहाज पर भी मि० बर्निक ! मैं जानता हूँ, वह डूबेगा

नहीं ।

क्रेप—हूँ !—

रुमेल—यदि वह उन तैरती हुई शवपेटिकाओं में से होता, जो सुनने में आता है—बड़े देशों के लोग भेज दिया करते हैं...

बर्निक—मेरे बाल तो सफेद हुए जा रहे हैं !

[श्रीमती बर्निक बाग से अन्दर आती हैं । सिर पर शाल है ।]

श्रीमती बर्निक—कास्टन ! कास्टन ! तुम जानते हो...?

बर्निक—हाँ, मैं जानता हूँ, परन्तु तुम—तुम कुछ नहीं देखती कि क्या हो रहा है । तुम्हारे पास अपने बच्चे के लिए मा की आँखें हैं ही नहीं !

श्रीमती बर्निक—मेरी बात तो सुनो ।

बर्निक—तुमने उसकी देखरेख क्यों नहीं की ? अब वह हाथ से गया । वापस दो, तुम से हो सके तो...

श्रीमती बर्निक—मुझसे हो सकता है—वह मेरे पास है !

बर्निक—तुम्हारे पास है !

सब पुरुष—अह !

हिल्मर—हाँ, मैं ऐसा ही सोचता था !

मार्ता—तुम उसे वापस पा गये, कास्टन !

लोना—हाँ, अब उसे अपना बनालो ।

बर्निक—तुम्हारे पास है ? यह सच है ? कहाँ है वह ?

श्रीमती बर्निक—जब तक तुम उसे क्षमा नहीं कर देते, मैं नहीं बताऊँगी ।

बर्निक—क्षमा कर दिया ! परन्तु तुम्हें कैसे मालूम...?

श्रीमती बर्निक—तुम नहीं समझते कि मा देखती है ? तुम्हारे जान लेने का मुझे बेहद डर था । कल वह कुछ शब्द कह गया था—फिर उसका कमरा खाली था—और उसके कपड़े गायब थे—

बर्निक—हाँ, हाँ ?

श्रीमती बर्निक—मैं दौड़ी और मैंने आने को पकड़ा। हम दोनों नाव से जहाज पर गये। अमेरिकन जहाज जाने को ही था। ईश्वर को धन्यवाद है कि हमसमय पर पहुँच गये। जहाज पर गये—सामान के कमरे में—होल्ड में—खोजा, वह मिल गया ! ओह कास्टन ! उसे दण्ड न देना !
बर्निक—बेती !

श्रीमती बर्निक—और आने को भी नहीं !

बर्निक—आने ? तुम उसके बारे में क्या जानती हो ? क्या 'भारत-बाला' चली गई ?

श्रीमती बर्निक—नहीं, यही तो कारण है...

बर्निक—बोलो, बोलो ।

श्रीमती बर्निक—आने भी मेरे ही समान उद्विग्न था। खोज में हमें कुछ समय लगा। अंधेरा हो गया था और पाइलट ने आपत्ति की। इसलिए आने ने अपने ऊपर जिम्मेदारी ले ली—तुम्हारे नाम पर...

बर्निक—क्या ?

श्रीमती बर्निक—जहाज को कल तक के लिए रोक लेने की।

क्रैप—हूँ !

बर्निक—ओह ! मैं कितना खुश हूँ !

श्रीमती बर्निक—तुम रुष्ट नहीं हो ?

बर्निक—मैं बता नहीं सकता, कितना आनन्दित हूँ, बेती !

रुमेल—आप सचमुच बातों को बहुत गम्भीर बना लेते हैं।

हिल्मर—हाँ ! जैसे ही प्रकृति के तत्वों के साथ संघर्ष का जरा-सा भी प्रश्न आया—उफ़ !

क्रैप—जुलूस बाग के दरवाजे से आ रहा है, मि० बर्निक !

बर्निक—हाँ, अब वे आ सकते हैं।

रुमेल—सारा बाग लोगों से खचाखच भरा है।

सान्दस्ताब—सड़क पर मुई डालने की जगह नहीं है।

रुमेल—सारा नगर उमड़ पड़ा है, बर्निक ! यह क्षण सचमुच गर्व

के योग्य है ।

विगेलान्द—हमें नम्र बनना चाहिए, मि० रुमेल !

रुमेल—सब पताकाएँ फहर रही हैं । क्या जुलूस ! ये कमेटी के सदस्य आगये— मि० रोरलुंद आगे-आगे हैं ।

बर्निक—हाँ, आने दो ।

रुमेल—परन्तु बर्निक—तुम्हारी उद्विग्नता की हालत में....

बर्निक—तो क्या ?

रुमेल—तुम चाहो तो तुम्हारे बदले में बोलने को बिल्कुल तैयार हूँ ।

बर्निक—नहीं, धन्यवाद । आज रात को मैं ही बोलूँगा ।

रुमेल—परन्तु तुम्हें भरोसा है, तुम जानते हो, बोलना क्या है ?

बर्निक—हाँ, चिन्ता छोड़ दो । मैं जानता हूँ मुझे क्या कहना है ।

[बाजे-गाजे की आवाज अधिक जोरदार हो जाती है । बरामदे का दरवाजा खुलता है । रोरलुंद कमेटी के सदस्यों के साथ आगे-आगे आता है । कुछ किराये के अनुचर उसके साथ एक ढँकी हुई टोकरी लिये चल रहे हैं । उनके पीछे सब श्रेणियों की जनता है । जितने लोग कमरे में आ सकते हैं, आ जाते हैं । बाग और सड़क पर भंडे और पट लिये हुए लोगों की भारी भीड़ है ।]

रोरलुंद—मिस्टर बर्निक, आपके चेहरे पर किंचित् आश्चर्य से मैं देख रहा हूँ कि हमने अनपेक्षित अतिथियों के रूप में आपके सुखी पारिवारिक मंडल और शांतिमय आवास में, जहाँ हम आपको अपने सम्माननीय और कार्य-क्षम नागरिक बन्धुओं तथा मित्रों से घिरा हुआ पा रहे हैं, अनधिकार प्रवेश करने की चेष्टा की है । परन्तु हमारे हृदयों ने हमें विवश किया कि हम यहाँ आयें और आपको अपनी श्रद्धांजली अर्पित करें । यह सच है कि हम पहली ही बार आपको श्रद्धांजली अर्पित करने के लिए नहीं आये, फिर भी इस व्यापक परिमाण में ऐसा करने का पहला ही अवसर है । आपने हमारे समाज के दुर्ग का जिस बृहत् नैतिक आधार-शिला पर संरक्षण और पोषण किया है उसके लिए हमने अनेक अवसरों

पर आपको धन्यवाद प्रदान किया है। आज हम विशेष रूप से अपने उस स्पष्टदृष्टा, अविश्रान्त, स्वार्थ-रहित—नहीं, स्वार्थत्यागी—नागरिक को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, जिसने एक ऐसी योजना में अग्र-स्थान ग्रहण किया है जो, हमें हर प्रकार से विश्वास हो गया है, हमारे समाज की नैतिक समृद्धि तथा कल्याण को प्रबल वेग प्रदान करेगी।

आवाजें—वाह वाह ! वाह वाह !!

रोरलुंद—महोदय, आप अनेक वर्षों से हमारे बीच एक दमकते हुए उदाहरण हैं। यह स्थान नहीं है जहाँ से मैं आपके पारिवारिक जीवन की, जो हम सब के लिए आदर्श-स्वरूप है, चर्चा करूँ। आपके निष्कलंक वैयक्तिक चारित्र्य की चर्चा करने का अवसर तो और भी नहीं है। ऐसे विषय में मनुष्य को अपने कमरे की शांति का अधिकार है, न कि इस प्रकार के समारोहपूर्ण अवसर का। यहाँ मैं नागरिक के रूप में आपके सार्वजनिक जीवन की चर्चा करूँगा, क्योंकि वह सब लोगों की दृष्टि के लिए खुला विषय है। आपके कारखाने से निकले हुए सुसज्जित जहाज दूर-दूर तक यात्रा करते हैं और समुद्र में सर्वत्र हमारा झंडा फहराते हैं। श्रमिकों का एक विशाल और सुखी परिवार आपको अपने पिता के समान मानता है। नये-नये उद्योगों को आरम्भ करके आपने सैकड़ों परिवारों के हित की नींव डाली है। संक्षेप में कहा जाय तो आप शब्द के पूर्ण अर्थ में हमारे समाज के मुख्य आधार हैं।

आवाजें—सुनो, सुनो ! वाह ! वाह !!

रोरलुंद—और महाशय, आपके सारे आचरण में इसी निःस्वार्थता का रंग चढ़ा हुआ है। वह आचरण हमारे समाज के लिए कितना हितकारी है यह कि शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता। इस अवसर पर तो उसका महत्व और भी अधिक है। आप इस समय हमारे लिए उस साधन की व्यवस्था करने का प्रयत्न कर रहे हैं, जिसे उसके रूखे नाम—रेलवे—से पुकारने में मुझे कोई संकोच नहीं है।

आवाजें—वाह वाह ! वाह वाह !!

रोरलुंद—परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि योजना कुछ कठिनाइयों से आक्रान्त है। वे कठिनाइयाँ संकीर्ण और स्वार्थी विचारों का परिणाम हैं।

आवाजें—सुनो ! सुनो !

रोरलुंद—क्योंकि, यह सत्य प्रकट हो गया है कि कुछ व्यक्ति विशेषों ने, जो हमारे समाज के नहीं हैं, इस नगर के परिश्रमी नागरिकों के पीठ-पीछे आकर लाभ के कुछ साधनों को हथिया लिया है जो, अधिकारतः, हमारे नगर के हिस्से में आने चाहिए थे।

आवाजें—ठीक है, ठीक है ! सुनो, सुनो !

रोरलुंद—स्वभावतः यह खेदजनक सत्य आपकी भी दृष्टि में आया ही है, मि० बर्निक ! फिर भी, आप अपनी योजना का कार्य दृढ़ता के साथ बढ़ाते रहने से पीछे नहीं हटे। आप खूब जानते हैं कि देश-भक्त को केवल स्थानिक हितों का ही विचार नहीं करना चाहिए।

आवाजें—ओह ! नहीं नहीं ! ठीक है, ठीक है !

रोरलुंद—आज हम ऐसे ही पुरुष को, देशभक्त नागरिक को, जिसके चारित्र्य का हम सब को अनुकरण करना चाहिए, अपनी श्रद्धांजली अर्पित कर रहे हैं। ईश्वर करे, आपकी योजना इस समाज के सच्चे और स्थायी कल्याण का साधन बने और फले-फूले ! यह सच है कि रेलवे के जारी होने से हमारे समाज पर बाहर के विनाशकारी प्रभावों का आक्रमण सुगम हो जाएगा; परन्तु अन्दर से द्रुत गति से निकाल देने का साधन भी उपलब्ध होगा; क्योंकि, इस समय हम भी यह शेखी नहीं मार सकते कि हम इस प्रकार के विदेशी प्रभावों के खतरों से बिल्कुल मुक्त हैं। यदि अफवाह पर विश्वास किया जा सके तो, भाग्य से, आज शाम को ही हमने इस प्रकार के कुछ तत्वों से मुक्ति पाई है—जो अपेक्षा थी उससे जल्द—

आवाजें—शान्ति ! शान्ति !

रोरलुंद—मैं इस घटना को अपनी योजना के लिए एक शुभ शकुन

मानता हूँ। इस अवसर पर मैं जो ऐसी घटना की चर्चा कर रहा हूँ उससे यह तथ्य और भी जोरों से व्यक्त होता है कि जिस घर में इस समय हम खड़े हैं उसमें नैतिकता के अधिकार का सम्मान पारिवारिक बन्धनों से भी अधिक किया जाता है।

आवाजें—सुनो सुनो ! वाह वाह !

बनिक—(उसी क्षण) मुझे अनुमति दीजिए....

रोरलुंद—मुझे कुछ ही शब्द और कहने हैं, मिस्टर बनिक ! हम सब जानते हैं कि आपने अपने नगर के लिए जो कुछ किया है वह अपने निजी लाभ के विचार से नहीं किया। फिर भी आप अपने नागरिक बन्धुओं की कृतज्ञतापूर्ण सराहना के चिह्न-स्वरूप एक छोटी सी भेंट अस्वीकार न करें, और यह समय तो, जब कि व्यावहारिक लोगों के आश्वासन के अनुसार, हम नवयुग के द्वार पर खड़े हैं, अस्वीकार करने का है ही नहीं।

आवाजें—वाह वाह ! सुनो सुनो !!

[रोरलुंद अनुचरों को संकेत करता है। वे टोकरी सामने लाते हैं। आगे के भाषण के साथ कमेटी के सदस्य विभिन्न वस्तुओं को निकाल कर भेंट करते हैं]

रोरलुंद—और इसलिए, मि० बनिक, हम हर्ष के साथ आपको ये चाँदी के काफ़ी-पात्र भेंट करते हैं। जिस प्रकार हम अब तक बार-बार आपके अतिथि-सत्कारी घर में एकत्र होते रहे हैं उसी प्रकार जब हम भविष्य में एकत्र हों तो कृपा करके इनसे अपनी मेज की शोभा बढ़ाइएगा।

आपसे भी, महोदयो ! जिन्होंने इतनी उदारता के साथ हमारे समाज के नेता का अनुमोदन किया है, हम छोटी-छोटी भेंट स्वीकार करने का अनुरोध करते हैं। यह रजत-पानपात्र आपके लिए है, मि० रुमेल ! आपने पानपात्रों की खनकार के बीच अनेक बार, चुभे शब्दों में, हमारे नागरिक बन्धुओं के हितों की रक्षा की है। आपको देशभक्ति के क्षेत्र में

यह पानपात्र उठाने और रिक्त करने के इसी प्रकार के अनेक शुभ अवसर प्राप्त हैं। आपको, मि० सान्दस्ताद, मैं यह चित्रावली भेंट करता हूँ, जिसमें आपके नागरिक बन्धुओं के फोटो हैं। आपकी सुविख्यात और त्रिशिष्ट उदारता ने आपको ऐसी मधुर स्थिति प्रदान कर दी है कि आप सब श्रेणियों में अपने मित्रों की गणना कर सकते हैं। आपको मि० विगेलान्द, मैं चर्मपत्र पर छपी और सुन्दर जिल्दवाली यह पारिवारिक भजनों की पुस्तक भेंट करता हूँ। कृपया इससे अपने अध्ययन की मेज की गोभा बढ़ाइए। समय के मधुर प्रभाव ने आपको निष्ठापूर्ण दृष्टि से जीवन को देखने की प्रेरणा दी है। उच्चतर और पवित्रतर लक्ष्यों के चिन्तन से आपका दैनिक कर्तव्यों का उत्साह दीर्घकाल से शुद्ध होता रहा है। (भीड़ की ओर मुड़ता है) और अब, मित्रो, मि० बर्निक और उनके साथियों के लिए थी चियर्स ! समाज के स्तम्भों के लिये— थी चियर्स !

समस्त समुदाय—बर्निक ! समाज के स्तम्भ ! हुर्रे ! हुर्रे !! हुर्रे !!!

लोना—बधाई, बहनोई साहब !

[उत्सुक शान्ति]

बर्निक—(गंभीरता से और धीरे-धीरे बोलता हुआ) नागरिक बन्धुओ ! आपके प्रवक्ता ने अभी-अभी कहा है कि हम नवयुग के द्वार पर खड़े हैं। मुझे आशा है कि स्थिति ऐसी ही सिद्ध होगी। परन्तु उसके घटित होने के पूर्व हमें सत्य को दृढ़ता से ग्रहण करना होगा—सत्य को, जो आज रात तक सब परिस्थितियों में और पूर्ण रूप से हमारे इस समाज के लिए अपरिचित रहा है। (श्रोताओं में आश्चर्य) इस उद्देश्य से मुझे उन प्रशंसाओं का निवारण करके अपना भाषण आरम्भ करना होगा, मि० रोरलुंद, जिनमें आपने ऐसे अवसरों की प्रथा के अनुसार, मुझे डुबा दिया है। मैं उनका पात्र नहीं हूँ। क्योंकि आज तक मेरे कार्य बिल्कुल निःस्वार्थ नहीं रहे। भले ही मैंने सदैव आर्थिक लाभ का लक्ष्य न रखा हो, मैं अब स्वीकार करता हूँ कि मेरे अधिकतर कार्य में की प्रेरक

भावना अधिकार, प्रभाव और उच्च स्थान की लालसा रही है ।

रुमेल—(कुछ तीव्र स्वर से) आगे क्या !

बर्निक—अपने नागरिक बन्धुओं के सामने खड़ा हुआ मैं उसके लिए अपनी भर्त्सना नहीं कर रहा हूँ; क्योंकि मैं अब भी समझता हूँ कि समर्थ काम-काजी भाइयों के बीच मैं आज भी प्रथम पंक्ति का अधिकारी हूँ ।

आवाजें—ठीक है ! ठीक है !

बर्निक—परन्तु मैं अपने ऊपर जो आरोप कर रहा हूँ वह यह है कि मैंने बहुधा धोखादेही का आश्रय ग्रहण किया है; क्योंकि मैं समाज की प्रवृत्तिको जानता था और डरता था कि वह किसी भी प्रमुख व्यक्ति के प्रत्येक कार्य के पीछे अस्वच्छ उद्देश्य खोज निकालता है । अब मैं एक बात पर आता हूँ, जो इसका दृष्टान्त होगी ।

रुमेल—(बेचैनी से) हूँ ! हूँ !

बर्निक—नगर के बाहर बड़े पैमाने पर भूमि खरीदी जाने की अफवाहें फैली हुई हैं । यह खरीद मैंने की है, केवल मैंने, और किसी ने नहीं (शिकायतें सुनाई देती हैं—क्या कह रहे हैं, बर्निक ?) हाल में वह भूमि मेरे हाथों में है । स्वभावतः ही मैंने यह बात अपने साथियों—मि० विगेलान्द और मि० सान्दस्ताद को बताई है, और हम सब एक मत हैं कि—

रुमेल—यह सच नहीं है । सिद्ध करो ! सिद्ध करो !

विगेलान्द—हम सब किसी विषय में एकमत नहीं हैं ।

सान्दस्ताद—सचमुच मुझे कहना होगा……!

बर्निक—बिल्कुल सच है ! मैं जो कुछ आगे कहने वाला हूँ उस पर हम सब एकमत नहीं हैं । परन्तु मुझे दृढ़ आशा है कि ये महानुभाव मुझ से सहमत होंगे जब मैं आपके सामने घोषणा करूँगा कि आज रात मैंने निर्णय कर लिया है—वह भूमि एक कम्पनी के अधीन होगी, जिसके हिस्से जनता को बेचे जायेंगे । जो भी चाहे हिस्से खरीद सकेगा ।

आवाजें—दुर्रें ! दुर्रें ! बर्निक के लिए थ्री चियर्स ! दुर्रें ! दुर्रें !

हुरें !

रुमेल—(मंद स्वर में, बर्निक से) यह नीचातिनीच विश्वासघात है... !

सान्दस्ताद—(धीमे स्वर में) सो, आप हमें मूर्ख बनाते रहे हैं... !

विगेलान्द—अच्छा, तो भाड़ में जायें—! हे ईश्वर ! मैं क्या कह रहा हूँ ? (बाहर हर्ष-ध्वनि)

बर्निक—शांति, सज्जनो ! मुझे आपकी इस श्रद्धांजलि का कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि जो निर्णय मैंने अभी किया है, वह मेरे पहले इरादे का प्रतीक नहीं है । मेरा इरादा सारी चीज अपने लिए रखने का था और अब भी मेरा खयाल यही है कि यह सम्पत्ति तभी सर्वाधिक लाभदायक होगी जब इसका प्रबन्ध एक आदमी के हाथ में होगा । परन्तु, आपको अपना निश्चय करने की स्वतंत्रता है । आप चाहें तो मैं अपनी शक्ति भर इसका प्रबंध करने को तैयार हूँ ।

आवाजें—हाँ ! हाँ ! हाँ !

बर्निक—परन्तु सबसे पहले, मेरे नागरिक बन्धु मुझे भली भाँति जान लें । और प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको जानने का भी प्रयत्न करे । इस प्रकार सचमुच आज रात को हम नवयुग का आरम्भ करें । कृत्रिमता, छल-कपट, और छूँछेपन का, सद्गुणों के दिखावे का और लोकमत के खेदमय भय का पुराना युग हमारे लिए एक अद्भुतालय के समान होगा—सब प्रकार की शिक्षा के लिए खुला ! और उस अद्भुतालय को हम भेंट कर देंगे—नहीं, सज्जनो ?—ये काफ़ी-पात्र, पान-पात्र, और चित्रावली और परिवारिक भजनों की पुस्तक—चर्मपत्र पर छपी हुई और सुन्दर जिल्द-बन्द !

रुमेल—ओह ! बेशक !

विगेलान्द—यदि आपने शेष सब ले लिया है तो...

सान्दस्ताद—अवश्य !

बर्निक—और अब मुझे समाज के सामने मुख्य हिसाब पेश करना

है । मि० रोरलुंद ने कहा कि कुछ विनाशकारी तत्व आज शाम को हमारे बीच से चले गये हैं । इसमें एक बात मैं जोड़ सकता हूँ, जो आप अब तक नहीं जानते । जिस व्यक्ति की चर्चा की गई है वह अकेला नहीं गया है, उसके साथ उसकी पत्नी बनने के लिए गई है....

लोना—(जोर से) दीना दार्फ ।

रोरलुंद—क्या ?

श्रीमती बर्निक—क्या ? (जोरों की गड़बड़ी)

रोरलुंद—भाग गई उसके साथ ? असम्भव !

बर्निक—उसकी पत्नी बनने के लिए, मिस्टर रोरलुंद ! और मैं कुछ और भी कहूँगा । (अपनी पत्नी से धीमे स्वर में) बेती, मजबूत हो जाओ जो आ रहा है उसके लिए । (जोर से) मुझे जो कुछ कहना है वह यह है—उस आदमी को हजार-हजार नमस्कार; क्योंकि उसने उदारता के साथ दूसरे का अपराध अपने सिर ले लिया है । मेरे मित्रो ! मैं असत्य को समाप्त कर देना चाहता हूँ । उसने मेरे जीवन के प्रायः प्रत्येक रेशे को विषाक्त बना दिया है । आपको सब-कुछ बताऊँगा । पंद्रह वर्ष पूर्व अपराधी मैं था ।

श्रीमती बर्निक—(धीरे से, कांपती हुई) कास्टन !

मार्ता—(मुसकराती हुई) अह ! जोहन !

लोना—अब आखिर तुमने अपने आपको पा लिया है !

[श्रोताओं में नीरव आतंक]

बर्निक—हाँ मित्रो, अपराधी मैं था, और गया वह । उसके बाद जो अनियंत्रित अफवाहें फैलीं उनका खण्डन करना अब मनुष्य की शक्ति के परे है । परन्तु इसकी शिकायत करने का मुझे कोई अधिकार नहीं है । पंद्रह वर्ष तक उन अफवाहों की सहायता से मैं सफलता की सीढ़ियों पर चढ़ता रहा हूँ । अब वे मुझे नीचे फेंकें या नहीं, आप में से प्रत्येक को निर्णय करना चाहिए ।

रोरलुंद—कैसा वज्रपात ! हमारे प्रमुख नागरिक... (मन्द स्वर

में बेती से) आपके लिए मुझे कितना खेद है, श्रीमती बर्निक !

हिल्मर—क्या आत्मस्वीकृति ! खैर, मैं तो कहूँगा.....

बर्निक—परन्तु आज रात को कोई निर्णय मत कीजिए। अपने विचारों को एकत्र करें और अपने हृदय के अन्दर देखें। जब आप एक बार फिर ठंडे दिल से सोचने की स्थिति में हो जायेंगे तब पता चलेगा कि मैंने आपके सामने यह सब कहकर विजय प्राप्त की है या पराजय। नमस्ते ! अभी मेरे पास और भी बहुत—बहुत अधिक—बातें प्रायश्चित्त के लिए शेष हैं; परन्तु उनका सम्बन्ध केवल मेरी अन्तरात्मा से है। नमस्ते ! उत्सव की सारी चीजें आप ले जाइए। हम सबको महसूस करना चाहिए कि ये सब यहाँ अशोभनीय है।

रोरलुंद—निश्चय ही ये अशोभनीय हैं। (दबी हुई आवाज में श्रीमती बर्निक से) भाग गई ! सो, वह पूर्णतः मेरे अयोग्य थी। (जोर से कमेटी के प्रति)—हाँ, सज्जनो ! इसके बाद हमें जितना सम्भव हो उतनी शान्ति से विसर्जित हो जाना चाहिए।

हिल्मर—इसके बाद भी कौन कैसे आदर्श की पताका ऊँची रखे ? उफ !

[इसी बीच समाचार की कानाफूसी हुई। भीड़ धीरे-धीरे बाग से विसर्जित होने लगी। रुमेल, सान्दस्ताद और विगेलान्द उत्सुकता के साथ किन्तु मन्द स्वर में बहस करते हुए बाहर जाते हैं। हिल्मर दाहिनी ओर खिसक जाता है। शान्ति स्थापित होने पर कमरे में केवल बर्निक, श्रीमती बर्निक, मार्ता, लोना और क्रैप ही रह जाते हैं।]

बर्निक—बेती, तुम मुझे क्षमा कर सकती हो ?

श्रीमती बर्निक—(उसकी ओर मुसकराहट के साथ देखकर) तुम जानते हो, कार्स्टन, कि तुमने मेरे मन में वर्षों से संचित सर्वाधिक सुखी भविष्य का द्वार खोल दिया है ?

बर्निक—कैसे ?

श्रीमती बर्निक—वर्षों से मैं महसूस करती आ रही हूँ कि कभी तुम

मेरे थे, परन्तु मैंने तुम्हें खो दिया है। अब मैं जानती हूँ कि अब तक तुम कभी मेरे रहे ही नहीं। परन्तु अब मैं तुम्हें जीत लूंगी।

बर्निक—(उसे अपनी भुजाओं में भरते हुए) ओह ! बेती ! तुमने मुझे जीत लिया है। मैंने सबसे पहले लोना के द्वारा तुम्हें सच्चे रूप में जानना सीखा था। परन्तु अब ओलफ को मेरे पास आने दो।

श्रीमती बर्निक—हाँ, अब वह तुम्हें प्राप्त होगा। मि० क्रेप....! (पीछे क्रेप के साथ धीरे-धीरे कुछ बातें करती है। वह बाग के दरवाजे से बाहर जाता है। बाद में जो कुछ हुआ उसके दौरान में मकानों की रोशनी धीरे-धीरे बुझती जाती है।)

बर्निक—(मंद स्वर में) धन्यवाद, लोना ! मुझमें—और मेरे लिए—जो श्रेष्ठ था उसकी तुमने रक्षा कर ली है।

लोना—तुम समझते हो, मैं और भी कुछ करना चाहती थी ?

बर्निक—हाँ, समझता तो ऐसा ही था। ठीक था या नहीं ? मैं तुम्हें भली भाँति समझ नहीं सकता।

लोना—हूँ !

बर्निक—तो वह द्वेष नहीं था ? बदला नहीं था ? तो तुम वापस क्यों आई ?

लोना—पुरानी मैत्री जंग नहीं खाती।

बर्निक—लोना !

लोना—जब जोहन ने मुझे झूठ के बारे में बताया तो मैंने शपथ ली कि मेरे यौवन का आराध्य सच्चा और स्वतंत्र होकर रहेगा।

बर्निक—मैं कितना अभागा हूँ ! और तुम्हारे इस सब प्रेम के कितने अयोग्य रहा हूँ मैं !

लोना—ओह ! यदि हम स्त्रियाँ हमेशा खोज में रहतीं कि हम किस वस्तु की पात्र हैं, कास्टर्न ! (और ओलफ के साथ बाग से आता है)

बर्निक—(उनसे मिलने के लिए आगे बढ़कर)—ओलफ !

ओलफ—पिताजी, मैं वादा करता हूँ कि फिर कभी ऐसा नहीं

रूँगा ।

बनिक—कभी भागोगे नहीं ?

ओलफ—नहीं ! मैं वादा करता हूँ पिता जी !

बनिक—और मैं वादा करता हूँ, तुम्हें भागने का कभी कारण न मिलेगा । भविष्य में तुम्हें विकसित होने का अवसर होगा—मेरे जीवन-कार्य के उत्तराधिकारी के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसे बालक के रूप में जिसका अपना जीवन-कार्य उसके सामने है ।

ओलफ—और जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तब मुझे अपनी इच्छा के अनुसार बनने दिया जायेगा ?

बनिक—हाँ !

ओलफ—धन्यवाद ! तो मैं समाज का स्तम्भ नहीं बनूँगा ।

बनिक—नहीं ? क्यों नहीं ?

ओलफ—नहीं, मुझे लगता है, वह बहुत बेमजा होगा ।

बनिक—तुम, तुम बनोगे, ओलफ ! शेष कुछ भी होता रहे । और तुम, औने ?

औने—मैं जानता हूँ, मि० बनिक, मैं बरखास्त कर दिया गया ।

बनिक—हम साथ रहेंगे, औने ! और क्षमा करो...

औने—क्या ? जहाज आज रात को नहीं गया ।

बनिक—वह कल भी नहीं जायेगा । मैंने तुम्हें बहुत कम समय दिया था । उसकी मरम्मत अधिक अच्छी तरह करनी चाहिए ।

औने—कर दी जायेगी, मि० बनिक, और नई मशीनों से ।

बनिक—बेशक ! परन्तु पूरी तरह और पूरे विवेक के साथ । हम में भी बहुत से ऐसे हैं जिन्हें पूरी तरह और ईमानदारी के साथ मरम्मत की जरूरत है, औने ! अच्छा, नमस्ते !

औने—नमस्ते, श्रीमान ! और आपको धन्यवाद ! धन्यवाद !

(जाता है)

श्रीमती बनिक—सब चले गये ।

बर्निक—और हम अकेले हैं। मेरा नाम अब अग्नि के अक्षरों में नहीं दमकता। खिड़कियों के सब दीपक बुझ गये हैं।

लोना—चाहते हो कि फिर जल जायें ?

बर्निक—नहीं, दुनिया में किसी चीज के लिए नहीं—मैं कहाँ था ? तुम जानो तो डर जाओगी। अब मैं महसूस करता हूँ मानो विष दिये जाने के बाद अब मैं फिर ठीक होश में आ गया हूँ। परन्तु यह भी महसूस करता हूँ कि मैं फिर से युवा और स्वस्थ हो सकता हूँ। ओह ! निकट आओ। मेरे आसपास आ जाओ। आओ बेती ! आओ ओलफ—मेरे बच्चे ! और तुम मार्ता, मुझे लगता है इतने वर्षों तक मेने तुम्हें कभी देखा ही नहीं !

लोना—मैं मान सकती हूँ, नहीं देखा—तुम्हारा समाज ब्रह्मचारी आत्माओं का समाज है। तुम स्त्रियों को देखते ही नहीं।

बर्निक—यह बिलकुल सच है। और इसी कारण—यह सौदा है लोना !—तुम्हें बेती और मुझे छोड़कर नहीं जाना होगा।

श्रीमती बर्निक—नहीं लोना, तुम्हें नहीं जाना होगा।

लोना—नहीं, मुझ में जाने की और तुम तरणों को, जो अभी अपना घर बसाना शुरू कर रहे हो, छोड़कर जाने की निर्ममता कैसे हो सकती है ? मैं तुम लोगों की धात्री हूँ न ? तुम और मैं, मार्ता ! दो वृद्धा मौसियाँ—अरे ! तुम देख क्या रही हो ?

मार्ता—देखो, आकाश कितना स्वच्छ होता जा रहा है ! सागर के ऊपर वह कितना साफ और प्रकाशमय है ! 'तालतर' का भविष्य शुभ है।

लोना—“तालतर” अपना शुभ भविष्य अपनी गोद में लिये जा रहा है।

बर्निक—और हमारे सामने—हम में से अधिकतर के सामने—सचाई और उत्साह से काम करने का एक लम्बा दिन पड़ा हुआ है। मेरे सामने तो वह सबसे ज्यादा है ! मगर उसे जाने दो—केलल तुम सच्ची,

ममतामयी देवियो, मेरे निकट रहो । मैंने पिछले कुछ दिनों में यह एक और बात सीखी है कि सचमुच स्त्रियाँ ही समाज के स्तम्भ हैं ।

लोना—तो फिर, मेरे प्यारे बहनोई ! तुमने बहुत दरिद्र ज्ञान प्राप्त किया ! (उसके कन्धे पर दृढ़तापूर्वक हाथ रखती हुई) समाज के सच्चे स्तम्भ हैं—सत्य की स्फूर्ति और स्वतन्त्रता की स्फूर्ति ।

